मासिक
ISSN 2394-8485
३/-

# गुरमत ज्ञान

माघ-फाल्गुन संवत् नानकशाही ५५२ फरवरी 2021 वर्ष १४ अंक ६

विशेषांक

## साका श्री ननकाणा साहिब का हृदयवेधक दृश्य

गुरुद्वारा शीशमहिल साहिब, श्री कीरतपुर साहिब

ੴ सतिगुर प्रसादि ॥

*गुर गिआन अंजन सचु नेत्री पाइआ ॥*
*अंतरि चानणु अगिआनु अंधेरु गवाइआ ॥*


मासिक

# गुरमत ज्ञान

माघ-फाल्गुन, संवत् नानकशाही 552

वर्ष 14 अंक 6 फरवरी 2021



*मुख्य संपादक* : सिमरजीत सिंघ

*संपादक* : सतविंदर सिंघ

*सहायक संपादक* : जगजीत सिंघ



**चंदा**

| | |
|---|---|
| सालाना (देश) | 10 रुपये |
| आजीवन (देश) | 100 रुपये |
| सालाना (विदेश) | 250 रुपये |
| प्रति कापी | 3 रुपये |

चंदा भेजने का पता

**सचिव, धर्म प्रचार कमेटी**

(शिरोमणि गुरुद्वारा प्रबंधक कमेटी)

**श्री अमृतसर साहिब- 143006**

फोन : 0183-2553956-60

<u>एक्सटेंशन नंबर</u>

वितरण विभाग 303 संपादकीय विभाग 304

फैक्स : 0183-2553919

e-mail : gyan_gurmat@yahoo.com

website : www.sgpc.net

ISSN 2394-8485


विषय-सूची


गुरबाणी विचार 4

संपादकीय 6

संकल्प के उत्कर्ष : सिमरो श्री हरिराय 7
–डॉ. सत्येन्द्र पाल सिंघ

प्रेम, सेवा एवं विनम्रता के पुंज : भक्त रविदास जी 13
–डॉ. मनजीत कौर

बड़ा घल्लूघारा 17
– स. सुरिंदर सिंघ

श्री ननकाणा साहिब का शहीदी साका : विस्तृत वृत्तांत 20
–स. सिमरजीत सिंघ

. . . श्री ननकाणा साहिब का शहीदी साका 35
–डॉ. गुरचरन सिंघ

श्री ननकाणा साहिब का ख़ूनी साका 38
–जनाब बशीर मुहम्मद

साका श्री ननकाणा साहिब— एक नज़रिया 42
–प्रो. दलजीत सिंघ

. . . भाई लछमण सिंघ धारोवाली 45
– बीबी हरप्रीत कौर

भगति रते से ऊतमा 48
–डॉ. परमजीत कौर

गुरबाणी में बसंत ऋतु का वर्णन 54
–डॉ. राजेंद्र सिंघ 'साहिल'

ख़बरनामा 57

# गुरबाणी विचार

*फलगुणि अनंद उपारजना हरि सजण प्रगटे आइ ॥*
*संत सहाई राम के करि किरपा दीआ मिलाइ ॥*
*सेज सुहावी सरब सुख हुणि दुखा नाही जाइ ॥*
*इछ पुनी वडभागणी वरु पाइआ हरि राइ ॥*
*मिलि सहीआ मंगलु गावही गीत गोविंद अलाइ ॥*
*हरि जेहा अवरु न दिसई कोई दूजा लवै न लाइ ॥*
*हलतु पलतु सवारिओनु निहचल दितीअनु जाइ ॥*
*संसार सागर ते रखिअनु बहुड़ि न जनमै धाइ ॥*
*जिहवा एक अनेक गुण तरे नानक चरणी पाइ ॥*
*फलगुणि नित सलाहीऐ जिस नो तिलु न तमाइ ॥१३॥* (पन्ना १३६)

पंचम सतिगुरु श्री गुरु अरजन देव जी महाराज फाल्गुन मास के उपलक्ष्य में उच्चारण की गई इस पावन पउड़ी में इस मास की ऋतु तथा वातावरण एवं लोक-सभ्याचार की पृष्ठभूमि में जीव-स्त्री को प्रभु-नाम की सच्ची स्तुति गायन कर मनुष्य जीवन सफल करने का महामार्ग बख़्शिश करते हैं।

सतिगुरु जी फरमान करते हैं कि फाल्गुन मास में जब शीत ऋतु जाने लगती है और लोग खुशियां मनाते नज़र आते हैं, उस समय सौभाग्यशाली जीव स्त्रियों को प्रभु-मिलाप की इच्छा तथा उम्मीद लगती है। संत अथवा गुरु उनका प्रभु के साथ मिलाप का अपनी कृपामयी अगुआई से सबब बनाते हैं। उन जीव-स्त्रियों की जीवन-रूपी रात सुखमयी हो जाती है, दुखों का ग्रास नहीं बनती। सौभाग्यशाली जीव-स्त्रियों की इच्छा पूर्ण होती है और उनको प्रभु-पति मिल जाते हैं। वे अपनी सखियों के साथ प्रभु की उपमा के ही गीत गाती हैं और उन्हें प्रभु-पति के अतिरिक्त अन्य कोई नज़र नहीं आता। वे किसी दूसरे को अर्थात् सांसारिक ख्याल आदि को अपने मन-मस्तिष्क में जगह नहीं देती।

ऐसे में वे जीव-स्त्रियां अपना लोक और परलोक संवार लेती हैं। उनको सदीवी सुख-शांति की मानसिक-आत्मिक अवस्था प्राप्त हो जाती है। वे संसार रूपी सागर में डूबने से बच जाती हैं और पुन: जन्म-मरण के चक्र में नहीं पड़तीं अथवा जीवन-मुक्त हो जाती हैं। हम मनुष्य-मात्र को चाहे एक

जीभ ही मिली है परंतु प्रभु के अनेक गुण इस एक जीभ द्वारा ही गायन किए जा सकते हैं। इसके लिए हमें सतिगुरु की शरण में जाना होता है। फाल्गुन मास में हमको सदैव प्रभु की स्तुति करनी चाहिए। उसको अपनी स्तुति की जरा भी इच्छा नहीं है। यहां गहरी रमज़ है कि प्रभु की स्तुति करना हमारे अपने हित में है। यह हमारा कोई प्रभु के सिर एहसान नहीं है। प्रत्येक पल प्रभु की सच्ची स्तुति में लगाकर ही जीवन अर्थपूर्ण हो सकता है। समस्त मानव जीवन-रूपी फाल्गुन मास प्रभु-स्तुति के अनुकूल है।

*जिनि जिनि नामु धिआइआ तिन के काज सरे॥*
*हरि गुरु पूरा आराधिआ दरगह सचि खरे॥*
*सरब सुखा निधि चरण हरि भउजलु बिखमु तरे॥*
*प्रेम भगति तिन पाईआ बिखिआ नाहि जरे॥*
*कूड़ गए दुबिधा नसी पूरन सचि भरे॥*
*पारब्रहमु प्रभु सेवदे मन अंदरि एकु धरे॥*
*माह दिवस मूरत भले जिस कउ नदरि करे॥*
*नानकु मंगै दरस दानु किरपा करहु हरे॥१४॥१॥* *(पन्ना १३६)*

श्री गुरु अरजन देव जी बारह माहा मांझ की इस अंतिम पउड़ी में प्रभु-नाम के महातम और पावन बाणी का मूल प्रयोजन दर्शाते हुए मनुष्य-मात्र को नाम-बाणी द्वारा प्रभु-नाम के साथ जुड़कर अमूल्य मनुष्य-जन्म का मूल उद्देश्य सफल करने का मार्ग बख्शिश करते हैं।

गुरु जी फरमान करते हैं कि जिस-जिस मनुष्य ने प्रभु-नाम का ध्यान किया उसी के ही उद्देश्यपूर्ण कार्य पूरे हुए; जिस-जिस ने पूर्ण गुरु के माध्यम से परमात्मा को याद किया वही रूहानी दरबार में सच्चा व खरा सिद्ध हुआ। सभी सुखों अथवा रूहानी सुखों के खजाने-रूपी हरि-चरणों से जुड़कर भय के कठिन सागर से पार हुआ जा सकता है। नाम से जुड़ने वाले को प्रेम-भक्ति रूपी अमूल्य वस्तु मिल जाती है। वह माया रूपी विष को सहन् नहीं करता। लालच रूपी झूठ से वह छूट जाता है। उसकी अनिश्चितता खत्म हो जाती है और वह प्रभु-नाम-रूपी सत्य से भरपूर हो जाता है। वह परमात्मा को सदैव मन-अंतर में टिकाकर रखता है। जिस पर परमात्मा की कृपा-दृष्टि है उसके सभी महीने, दिन, मुहूर्त अच्छे हैं अर्थात् परमात्मा की कृपा ही जीवन की सफलता का आधार है। गुरु जी कथन करते हैं कि हे प्रभु! मुझ पर भी कृपा-दृष्टि करो और मुझे अपने दर्शन-दीदार प्रदान कर दो।

संपादकीय

# सिक्खी किरदार की तस्वीर : साका श्री ननकाणा साहिब

गुरु साहिबान द्वारा दिखाई निरोल जीवन-युक्ति— सत्य, संतोष, दया, नेकी, परोपकार वाला जीवन जीते हुए सिक्खों ने धर्म और मानवता के कल्याण की ख़ातिर जंगों, मोर्चों, साकों और घल्लूघारों के लासानी इतिहास को सृजित किया है। ऐसा लासानी इतिहास रूहानी किरदार के धारक बन कर ही सृजित किया जा सकता है। रूहानी जीवन में युग-परिवर्तन की शक्ति है। यह शक्ति अनहोनी को होनी में बदल देती है, इसीलिए लोगों के लिए यह शक्ति किसी करामात से कम नहीं है। कमज़ोरो को बहादुर बना देना, लाखों का मुकाबला मात्र चालीस सिक्खों द्वारा किया जाना, हँस-हँस कर शहादत देना, देश में हज़ारों वर्ष पुरानी ग़ुलामी की जंजीरों को तोड़ कर फेंकना आदि किसी करामात से कम तो नहीं था। ऐसा लासानी और परोपकारी इतिहास गुरबाणी में सराबोर रूहें ही सृजित कर सकती हैं। धर्म की ख़ातिर शीश देने वाले, बंद-बंद कटाने वाले, खोपड़ी उतरवाने वाले, चरखड़ियों पर चढ़ने वाले और आरे से चीरे जाने वाले धैर्यवान सिक्खों को रोज़ाना अरदास में याद किया जाता है। अपनी जान से भी प्यारे गुरुद्वारा साहिबान की सेवा के लिए कुर्बानी करने वाले धार्मिक मानवों की सूची बहुत लंबी है। गुरुधामों की पवित्रता के लिए की गई अरदास को पूरा करते हुए पुरज़ा-पुरज़ा कट जाना और जलती आग में जिंदा जल कर शहादत देना रूहानी जीवन जीने वाले गुरु-चरणों के सेवक ही कर सकते हैं। जिस कौम के पास स्वाभिमान एवं निर्भयता के साथ जीते हुए धर्म और मानवता के लिए की गई कुर्बानियों का इतना बड़ा लासानी इतिहास हो, वह कौम कभी भी पतनोन्मुख वाली अवस्था की तरफ नहीं जा सकती। गुरु साहिबान द्वारा दृढ़ करवाई हक-सच एवं न्याय की ख़ातिर जूझने वाली जीवन-युक्ति की चिंगारी आज भी सिक्खों के अंदर मौजूद है।

फरवरी, २०२१ ई. में शिरोमणि गुरुद्वारा प्रबंधक कमेटी, श्री अमृतसर की तरफ से साका श्री ननकाणा साहिब की प्रथम शताब्दी बड़ी श्रद्धा और सत्कार के साथ मनायी जा रही है। ऐसे कुर्बानियों भरे पवित्र दिवस को मनाते हुए अपने हृदय में गुरुधामों, परंपराओं के प्रति प्यार, सत्कार, पंथक जज़्बा और एकता-इत्तफ़ाक जैसे गुणों को धारण कर कौमी मज़बूती के लिए यत्नशील होने की आवश्यकता है। इस संबंध में 'गुरमत ज्ञान' का यह अंक इस महान साके को समर्पित विशेषांक रूप में प्रकाशित किया जा रहा है। आशा है कि पाठक-जन अपने इस लासानी शहीदी साके के इतिहास को पढ़ कर बहुमूल्य जानकारी हासिल करेंगे।

-सतविंदर सिंघ फूलपुर

फोन : 99144-19484

# संकल्प के उत्कर्ष : सिमरो श्री हरिराय

*-डॉ. सत्येन्द्र पाल सिंघ**

जब मन धर्म के मार्ग पर चलते हुए विचलित होने लगे, जब अधर्म के जोर से संकल्प निर्बल होने लगे, जब सच को धारण करने के लिये ऊर्जा की आवश्यकता महसूस हो, जब मानवीय मूल्यों की रक्षा के लिये मार्ग प्रकाशित करना हो, जब भ्रम और संशय से उबरना हो, तब श्री गुरु हरिराय साहिब से ली गई प्रेरणा सारे कार्य सिद्ध करती है। श्री गुरु हरिगोबिंद साहिब के बाद जब श्री गुरु हरिराय साहिब गुरुआई पर विराजमान हुए तो उनके सामने अति चुनौतीपूर्ण परिस्थितियां थीं। श्री गुरु हरिगोबिंद साहिब पहले सिक्ख गुरु थे, जिन्होंने शस्त्र धारण किये थे और विधिवत सेना का गठन किया था। धर्म-जगत के लिये यह आश्चर्यजनक था। एक धर्मात्मा को शस्त्र धारण करते, शिकार करते और युद्ध के मैदान में वीरता प्रदर्शित करते देखना बहुत-से लोगों को समझ नहीं आया था। तब श्री गुरु हरिगोबिंद साहिब ने उनकी शंकाओं का निवारण करते हुए कहा था— ''बातन फकीरी, जाहर अमीरी, शसतर गरीब की रखिआ, जरवाणे की भखिआ।'' श्री गुरु हरिगोबिंद साहिब की इस महान परंपरा को आगे बढ़ाने के लिये श्री गुरु हरिराय साहिब सबसे सुयोग्य चयन थे और उन्होंने इसे प्रमाणित भी किया। उन्होंने जहां श्री गुरु नानक साहिब के विचारों को सिक्ख पंथ का दृढ़ आधार बनाया वहीं सिक्ख पंथ के गौरव को भी नये आयाम दिये। उन्होंने शक्ति को निर्बल का बल और क्रूर का भय बनाकर धर्म को अभय किया।

श्री गुरु हरिराय साहिब, बाबा गुरदित्ता जी के सुपुत्र और श्री गुरु हरिगोबिंद साहिब के पौत्र थे। जब वे गुरुआई पर आसीन हुए, उनकी आयु चौदह वर्ष थी। उस समय श्री अमृतसर में श्री हरिमंदर साहिब पर मीणों का कब्जा था, जो हरजी के गुरुआई का उत्तराधिकारी होने का दावा करते थे। मीणे वे सिक्ख थे जो श्री गुरु रामदास जी के बड़े पुत्र प्रिथीचंद को अपना गुरु मानते थे। प्रिथीचंद गुरुआई न मिलने से नाराज हो विद्रोही हो गया और गुरु-घर के विरुद्ध षड़यंत्र रचता रहता। प्रिथीचंद की मृत्यु के बाद उसके पुत्र मिहरबान और उसके बाद मिहरबान के पुत्र हरजी ने कमान संभाली थी। श्री गुरु अरजन साहिब ने ऐसे लोगों को 'मीणा' नाम दिया था, जिसका अर्थ कपटी, दुष्ट, निकृष्ट था। श्री गुरु गोबिंद सिंघ जी ने जब सन् १६९९ में खालसा पंथ का सृजन किया था उस समय उन्होंने पांच तरह के लोगों से किसी भी तरह का व्यवहार न रखने का आदेश दिया था, जिनमें मीणे भी शामिल थे। श्री गुरु हरिगोबिंद साहिब अपने जीवन-काल में ही श्री अमृतसर से

**ई-१७१६, राजाजी पुरम, लखनऊ-२२६०१७, फोन : ९४१५९-६०५३३ , ८४१७८-५२८९९*

कीरतपुर साहिब आ गये थे। श्री गुरु हरिराय साहिब ने मुख्य रूप से ध्यान केन्द्रित किया कि मीणे सिक्ख पंथ के बारे में भ्रम न फैला सकें और सिक्ख धर्म का प्रचार-प्रसार हो। यह समय की आवश्यकता थी और श्री गुरु हरिराय साहिब इसमें पूर्णत: सफल रहे। उनकी नीति थी कि व्यर्थ के संघर्ष एवं विवादों में समय व ऊर्जा नष्ट न हो और लक्ष्य की प्राप्ति भी हो सके। श्री गुरु नानक साहिब के पंथ पर चलने का मूल उद्देश्य परमात्मा के प्रेम में मन को रंगना था। समस्त विघ्न-बाधायें तो स्वयं ही दूर हो जाती हैं। विघ्न दूर करने के लिये किसी यत्न की आवश्यकता नहीं होती। श्री गुरु हरिराय साहिब ने इसकी चिंता नहीं की कि जो शक्तियां सिक्ख पंथ के सिद्धांतों का विरोध कर रही हैं और कपट रच रही हैं, उन्हें कोई सबक सिखाया जाये। जब सिक्ख अपने धर्म पर अडिग होगा तो विरोध और आक्रमण स्वयं ही परास्त हो जायेंगे। श्री गुरु हरिराय साहिब ने चिंता की कि सिक्ख के मन में परमात्मा के लिये प्रीति कभी कम न हो।

*सुख सोहिलड़े हरि गावण लागे ॥*
*साजन सरसिअड़े दुख दुसमन भागे ॥*
*सुख सहज सरसे हरि नामि रहसे*
*प्रभि आपि किरपा धारीआ ॥*
*हरि चरण लागे सदा जागे मिले प्रभ बनवारीआ ॥*

*(पन्ना ४५९ )*

श्री गुरु अरजन साहिब के उपरोक्त वचन से श्री गुरु हरिराय साहिब के जीवन को समझने में सुविधा हो जाती है। परमात्मा की भक्ति ने उनमें ऐसा बल भरा कि सभी अवरोध स्वयं दूर हो गये। उनका वास्तविक बल परमात्मा की स्तुति में मन का रमना था। यही प्रेरणा उन्होंने सिक्खों को दी। मन सदैव परमात्मा की भक्ति में जुड़ा रहे और धर्म के प्रति सचेत रहे तो परमात्मा स्वयं आगे आकर कृपा करता है। श्री गुरु हरिराय साहिब ने धर्म-प्रचार के लिये यात्राएं की श्री गुरु नानक साहिब द्वारा स्थापित परंपरा का अनुसरण करते हुए सीधे संवाद को प्राथमिकता दी। उन्होंने पंजाब के विभिन्न क्षेत्रों की व्यापक प्रचार-यात्राएं आरंभ कीं। वे जहां भी जाते सिक्ख संगत एकत्र होती और गुरबाणी का कीर्तन किया जाता। गुरु साहिब सिक्खों की शंकाओं का निवारण करते और दृढ़ वैचारिक आधार प्रदान करते। अपनी धर्म प्रचार-यात्राओं के क्रम में वे जब नूरमहिल पहुंचे तो वहां के चौधरी सूद ने उनसे पुत्र-प्राप्ति का आशीर्वाद देने की प्रार्थना की। श्री गुरु हरिराय साहिब ने उसे परमात्मा से प्रार्थना करने को कहा, क्योंकि संसार में एक वही दाता है जो मनुष्य की मनोकामनायें पूर्ण करने में समर्थ है। इससे उनकी विनम्रता और महानता प्रकट हुई, जिससे लोग बहुत प्रभावित हुए। श्री गुरु हरिराय साहिब समर्थ थे, गुणों का सागर थे। उनकी कृपा संसार का उद्धार करने वाली थी, किन्तु इसे परमात्मा की कृपा का स्वरूप देकर उन्होंने अपने अंतर की उस श्रेष्ठता का परिचय दिया जो युगों-युगों में किसी को प्राप्त होती है। श्री गुरु हरिराय साहिब हर मनुष्य के अंतर को निर्मल गुणों से जोड़ना चाहते थे :

*गुरमुखि गिआनु बिबेक बुधि होइ ॥*

*हरि गुण गावै हिरदै हारु परोइ ॥ ( पन्ना ३१७ )*

श्री गुरु नानक साहिब ने आरंभ में ही प्रमाणित कर दिया था कि सारा संसार परमात्मा के हुक्म में बंधा हुआ है। संसार में जो भी घटित हो रहा है वह मात्र परमात्मा की इच्छा और कृपा से ही हैं। उसकी कृपा प्राप्त करनी है तो सहज, संतोष, संयम, प्रेम, दया जैसे गुण धारण करने होंगे। शुद्ध मन से ही परमात्मा की भक्ति करते हुए उसकी कृपा पाई जा सकती है। संसार में जहां चारों ओर माया का आकर्षण मनुष्य को लुभा कर भटका रहा है वहीं मन के विकार उसे परमात्मा और धर्म से दूर करने के लिये सदैव तैयार रहते हैं। ऐसे में सद्गुणों की ओर जाना और माया के मोह से बचना अति कठिन था। श्री गुरु हरिराय साहिब जानते थे कि इसके लिये सतत् प्रेरणा की आवश्यकता है। उन्होंने जहां धर्म-प्रचार के लिये मसंद प्रणाली और मंजी प्रणाली को चुस्त-दुरुस्त किया वहीं तीन नये प्रचार केंद्र भी स्थापित किये, जिन्हें बखशिशें कहा गया। बखशिश का अर्थ है— आशीर्वाद। श्री गुरु हरिराय साहिब ने इन नये केन्द्रों का दायित्व भाई सुथरे शाह, भाई संगतिआ और भाई भगत गिर को दिया। गुरु साहिब चाहते थे कि सिक्खों को गुरबाणी के साथ इस तरह जोड़ा जाये जो उनके आचरण से प्रकट हो। वे चाहते थे कि सिक्खों को यह प्रतीत हो कि इसमें गुरु की कृपा उनकी सहायक है।

श्री गुरु हरिराय साहिब के दरबार में एक सिक्ख भाई गोंदा थे, जिनकी भावना और समर्पण के कारण सभी उनका आदर करते थे। गुरु साहिब भी उनसे विशेष स्नेह रखते थे। एक बार गुरु साहिब ने भाई गोंदा को काबुल जाकर रहने और वहां सिक्ख धर्म का प्रचार करने को कहा। भाई गोंदा काबुल आकर तन-मन से गुरु साहिब की आज्ञा के पालन में लग गये। भाई गोंदा ने काबुल में सिक्ख संगत के लिये एक भवन का निर्माण करवाया और लंगर भी आरंभ किया। वे स्वयं भी नितनेम और ध्यान किया करते थे। एक दिन भाई गोंदा जपु जी साहिब का पाठ कर रहे थे तो उन्हें ऐसा प्रतीत हुआ कि मानो वे श्री गुरु हरिराय साहिब के चरणों में बैठे हुए हैं। इसमें उनका मन ऐसा रमा कि कुछ सुधि न रही। प्रेम में भीगा हुआ मन गुरु के चरणों से अलग होना ही नहीं चाह रहा था। श्री गुरु हरिराय साहिब उस समय कीरतपुर साहिब में अपने दरबार में सिक्खों के बीच विराजमान थे। गुरु साहिब को भाई गोंदा की अवस्था का बोध हो गया, जिनका मन गुरु साहिब के चरणों में बंधा हुआ था । गुरु साहिब भी अडोल होकर बैठे रहे। इस बीच दोपहर हो गई। लंगर का समय हो गया। उनसे अनुमति के बिना लंगर नहीं बांटा जा सकता था। गुरु साहिब से दो बार पूछा गया, किन्तु कोई उत्तर नहीं मिला। सिक्ख चिंतित हो गये। पुनः जब गुरु साहिब से लंगर के लिये अनुरोध किया गया तब गुरु साहिब ने कहा कि काबुल में भाई गोंदा उनके चरण पकड़ कर ध्यान कर रहे हैं। उनकी अवस्था को वे कैसे भंग कर सकते हैं! इसमें शाम ढल आई, तब काबुल में भाई गोंदा की तंद्रा टूटी। इसके बाद ही श्री गुरु हरिराय साहिब ने लंगर ग्रहण किया। गुरु

अपने सिक्ख को कभी निराश नहीं करता और सदैव उसके अंग-संग होकर उसके आत्मिक उद्धार में सहाई होता है। जितना प्रेम सिक्ख अपने गुरु से करता है उससे कहीं अधिक प्रेम गुरु अपने सिक्ख से करता है, क्योंकि उसके प्रेम में कृपा भी सम्मिलित होती है :

*चरन कमल हरि जन की थाती कोटि सूख बिस्राम ॥*
*गोबिंदु दमोदर सिमरउ दिन रैनि नानक सद कुरबान ॥*

*(पन्ना ६८२ )*

परमात्मा के चरण, उसकी शरण एक भक्त की सबसे बड़ी पूँजी है, जो अनंत सुख और आनन्द देने वाली है। जिसका मन परमात्मा में रम जाये उससे अधिक भाग्यवान कोई नहीं है। ऐसे परमात्मा पर तो सदा-सदा बलिहार जाने को मन करता है। परमात्मा इतना कृपालु और दयालु है कि वह सदैव अपने भक्त की लाज रखता है और उसके सारे कार्य सिद्ध करता है— ''जन के पूरन होए काम॥ कली काल महा बिखिआ महि लजा राखी राम॥'' कलियुग में जहां अनेक संकट, दुख हैं, एक परमात्मा ही मनुष्य की रक्षा करने वाला है। वह कृपा करता है और मनुष्य को सारे दुखों, अवगुणों, विकारों से उबार कर उसे पावन और सहज करता है। श्री गुरु हरिराय साहिब यह विश्वास सिक्खों में दृढ़ करना चाहते थे, क्योंकि देश और समाज की परिस्थितियाँ निरंतर विकट होती जा रही थीं। वे चाहते थे कि सिक्ख आदर्श समाज के आदर्श सदस्य के रूप में उभरें। गुरु साहिब की धर्म-प्रचार यात्राएं, जो मुख्यत: पंजाब और निकटवर्ती क्षेत्रों तक सीमित रहीं, अत्यंत सफल साबित हुईं। बड़ी संख्या में नये लोग सिक्ख बने और पहले से बने सिक्खों में धर्म की भावना दृढ़ हुई। गुरु साहिब जानते थे कि धर्म-प्रचार का कार्य करने के लिये विभिन्न क्षेत्रों में नियुक्त किये गये मसंद अपनी भूमिका के साथ न्याय नहीं कर पा रहे हैं, इसलिये उन्होंने मसंदों का महत्व कम किया और सिक्खों से सीधे संबंध स्थापित किये। उन्होंने सिक्खों से आपसी भाईचारा बनाने और निर्भय होकर धर्म पर चलने को प्रेरित किया। सिक्खों का व्यक्तिगत और सामाजिक आचरण सच्चा और प्रेरणादायी होना चाहिये। इसके लिये गुरबाणी को मन में धारण करने की आवश्यकता है। श्री गुरु हरिराय साहिब ने अपने जीवन-व्यवहार से भी लोगों को सद्‌गुण ग्रहण करने की शिक्षा दी।

श्री गुरु हरिराय साहिब ने एक बड़ा दवाखाना बनवाया था, जिसमें दूर-दूर से दुर्लभ औषधियां लाकर एकत्र की गई थीं। यह प्रसिद्ध था कि जो रोग कहीं भी ठीक न होता हो वह गुरु साहिब के इस दवाखाने में उपचार से जड़ से चला जाता है। एक बार मुगल बादशाह शाहजहां का पुत्र दारा शिकोह गंभीर रूप से बीमार हो गया। बहुत-से हकीम, वैद्य इलाज कर हार गये, किन्तु उसकी स्थिति में सुधार नहीं हुआ। उसे मरणासन्न अवस्था में देख कर शाहजहां निराश हो गया। उस समय उसके दरबारियों ने उसे श्री गुरु हरिराय साहिब के दवाखाने के बारे में बताया। श्री गुरु हरिराय साहिब की दी गई दवा से वह शीघ्र स्वस्थ हो गया। शाहजहां क्रूर शासक था और उसने श्री

गुरु हरिगोबिंद साहिब से पूरी शत्रुता निभाई थी। फलस्वरूप श्री गुरु हरिगोबिंद साहिब और शाहजहां के मध्य चार युद्ध हुए। श्री गुरु हरिगोबिंद साहिब ने चारों युद्धों में मुगल सेना को करारी शिकस्त दी थी। जब सिक्खों ने श्री गुरु हरिराय साहिब को शाहजहां के पुत्र की सहायता करते देखा तो इसका कारण जानना चाहा। श्री गुरु हरिराय साहिब ने बड़े ही सहज भाव से उन्हें समझाया कि कोई मनुष्य फूल तोड़ता है, बाद में उस फूल को किसी अन्य को दे देता है। फूल में जो सुगंध तने पर लगे होते हुए थी वह नहीं जाती है। तने से टूटने के बाद फूल अपनी सुगंध तोड़ने वाले के हाथों में बसा देता है अर्थात् जब फूल दूसरे हाथों में जाता है तब उन्हें भी वैसे ही सुगन्धित करता है। न सुगंध बदलती है, न फूल का दूसरों को सुगंध बांटने का स्वभाव। गुरु साहिब ने आगे समझाया कि लोहे की कुल्हाड़ी चन्दन के वृक्ष पर पड़ती है और उसे काटती है, वह भी चन्दन की सुगंध से भर जाती है। उन्होंने कहा कि सिक्ख धर्म में बदले की भावना का कोई स्थान नहीं है। कोई शत्रुता भी करता है तो उसका भी भला करना सिक्ख का धर्म है। यह कठिन है और जो ऐसा करता है उसे गति प्राप्त होती है:

*गुर परसादी को सचु कमावै ॥*
*नानक सो तपा मोखंतरु पावै ॥* ( पन्ना ९४८ )

सच धारण करने व सच के मार्ग पर चलने के लिये निर्मल व कोमल मन चाहिये जो दुखी के दुख, पीड़ित की पीड़ा, रोगी के रोग को समझ सके। यही संवेदना है कि दूसरे के दुख के स्तर पर उतर कर उसके दुख की अनुभूति की जाये। श्री गुरु नानक साहिब का जब संसार में आगमन हुआ तो उन्होंने सारे संसार के दुखों की अनुभूति कर ही लोगों को इससे उबारने का मिशन आरंभ किया। संसार में बहुत कुछ हमारे सामने घट रहा होता है, जिसे हम निरपेक्ष भाव से देखते रहते हैं। कभी भावनावश कुछ कर सकते हैं तो कर देते हैं। इसे परोपकार का नाम दिया गया। इस तरह हम 'दाता' की स्थिति में आ जाते हैं। यह सिक्ख धर्म के सिद्धांतों के विरुद्ध है। दूसरे के दुख की अनुभूति करना है और उसे दूर करने को अपना धर्म मानना, अपने जीवन को सफल करने जैसा है। श्री गुरु हरिराय साहिब की यह प्रेरणा समाज और व्यक्ति दोनों के हित में थी।

श्री गुरु हरिराय साहिब ने संसार के समस्त जीवों की चिंता करना सिखाया। श्री गुरु हरिगोबिंद साहिब ने पहली बार सिक्ख सेना की नींव डाली थी। श्री गुरु हरिराय साहिब ने उस परंपरा को बनाये रखा। उनके समय भी वीर नौजवानों की फ़ौज थी जो सदैव तैयार रहती थी। यह बात भिन्न थी कि कभी युद्ध के हालात नहीं बने, क्योंकि गुरु साहिब की प्राथमिकता धर्म के आधार को दृढ़ करने की थी, ताकि भविष्य में खालसा पंथ की साजना के योग्य परिस्थितियाँ उपलब्ध हों। सिक्खों का अस्त्रों-शस्त्रों से संबन्ध बना रहा। श्री गुरु हरिराय साहिब सिक्खों के साथ शिकार पर जाया करते थे। गुरु साहिब का आदेश था कि मात्र आदमखोर जानवरों का ही शिकार किया जाये। अन्य पशुओं को पकड़ कर कैद कर

लिया जाये। संसार में भी धर्म का पालन इसी भावना से हो सकता था। जो धर्म और सच को खत्म करने पर तुले हुए थे उनका संहार करना ही एकमात्र उपाय बचता था। जो अधर्म और असत्य के मार्ग पर चल रहे थे उन्हें धर्म की मर्यादा में बाँध कर उनकी और धर्म की रक्षा की जा सकती थी। संहार का मुख्य आयाम होता है किसी के अस्तित्व को अस्वीकार कर देना और धर्म में बाँधने का मुख्य आयाम मन की अवस्था को बदल देना होता है। श्री गुरु हरिराय साहिब ने ये दोनों रंग संसार को दिखाये।

श्री गुरु हरिराय साहिब के जीवन-काल में दिल्ली के तख्त पर औरंगजेब बैठ चुका था। गुरु-घर के विरोधियों ने श्री गुरु ग्रंथ साहिब की बाणी के बारे में उसके कान भरे कि यह इसलाम के विरुद्ध है। औरंगजेब ने श्री गुरु हरिराय साहिब को दिल्ली आने को कहा। श्री गुरु हरिराय साहिब ने दिल्ली आने से मना कर दिया और कहा कि न तो उनका कोई राज्य है जो औरंगजेब के अधीन हो और न वे उसे कोई टैक्स देते हैं। उन्हें औरंगजेब से कुछ पाने की इच्छा भी नहीं है, इसलिये उससे भेंट का कोई अर्थ नहीं है। बाद में विचार करने के बाद गुरु साहिब ने अपने बड़े पुत्र रामराय को श्री गुरु ग्रंथ साहिब की प्रति देकर दिल्ली भेजा, जिससे सिक्ख धर्म के सिद्धांत स्पष्ट किये जा सकें। रामराय को उन्होंने निर्देश दिए थे कि वह अपनी बात निर्भीकता से कहे। रामराय कई दिन औरंगजेब के दरबार में जाता रहा और प्रश्नों के उत्तर देता रहा। एक दिन औरंगजेब ने उससे श्री गुरु ग्रंथ साहिब के एक शबद का उल्लेख किया, जिसमें 'मुसलमान' शब्द का प्रयोग किया गया था। रामराय घबरा गया और उसने बोल दिया कि शब्द 'मुसलमान' नहीं 'बेईमान' है।

गुरबाणी को सिक्ख इलाही बाणी का स्थान देते हैं। उसमें कोई संशोधन, परिवर्तन करना धर्म पर क्रूर आक्रमण के समान है। इस आक्रमण का उत्तर संहार ही है। श्री गुरु गोबिंद सिंघ जी ने भी बाद में यही घोषित किया था कि धर्म संतों के उद्धार और दुष्टों के संहार से चलता है। जब श्री गुरु हरिराय साहिब को यह ज्ञात हुआ तो उन्हें बहुत दुख हुआ। उन्होंने संहार की विधि अपनाई और रामराय के अस्तित्व को यह कह कर नकार दिया कि वे अब कभी उसे मुंह नहीं लगायेंगे। रामराय जब कीरतपुर साहिब आया तब उसने श्री गुरु हरिराय साहिब से मिलने के अनेक यत्न किये, किन्तु असफल रहा। श्री गुरु हरिराय साहिब से दूसरी मर्यादा श्री गुरु हरिक्रिशन साहिब के लिये बाँधी कि वे भी कभी औरंगजेब को दर्शन नही देंगे। श्री गुरु हरिक्रिशन साहिब ने इसका जीवन-पर्यन्त पालन किया और दिल्ली में रहते हुए भी औरंगजेब को मिलने का समय नहीं दिया।

धर्म का पालन करना अत्यंत कठिन है, किन्तु जो धर्म का पल-पल पालन करता है वही सिक्ख है। श्री गुरु हरिराय साहिब ने मार्ग दिखाया कि सद्‌गुणों को बल में बदल कर कैसे धर्म-पालन की सामर्थ्य प्राप्त की जा सकती है।

# प्रेम, सेवा एवं विनम्रता के पुंज : भक्त रविदास जी

-डॉ. मनजीत कौर*

*भगता की चाल निराली ॥*
*चाला निराली भगताह केरी बिखम मारगि चलणा ॥*
*लबु लोभु अहंकारु तजि त्रिसना बहुतु नाही बोलणा ॥*
*खंनिअहु तिखी वालहु निकी एतु मारगि जाणा ॥*
*गुर परसादी जिनी आपु तजिआ हरि वासना समाणी ॥*
*कहै नानकु चाल भगता जुगहु जुगु निराली ॥*
*(पन्ना ९१८)*

श्री गुरु अमरदास जी 'अनंदु साहिब' पावन बाणी में ईश्वर की भक्ति में लीन श्रेष्ठ आत्मिक अवस्था का जिक्र करते हुए स्पष्ट करते हैं कि प्रभु-भक्ति में लगे हुए इंसान सांसारिक लोगों से अलग वृत्ति वाले, उच्च नैतिक गुणों वाले होते हैं। भक्त-जन लोभ, लालच, तृष्णा को त्याग कर, अहंकार रहित होकर प्रभु-नाम-रंग में मस्त रहते हैं। यह मार्ग तलवार की धार से भी तीक्ष्ण है तथा बाल से भी सँकरा है। इस मार्ग पर चलना सहज और सहल नहीं है। गुरु-कृपा से अहंकार त्याग देने वाले ही इस दुर्गम मार्ग पर चल कर अपनी मंजिल प्राप्त करने में सफल होते हैं। गुरु जी पावन फरमान करते हैं कि यह अटल सच्चाई है कि ईश्वर के भक्त-जनों की शोभा हर युग में अटल रहती है।

श्री गुरु ग्रंथ साहिब की पावन बाणी १४३० पन्नों का अनमोल खजाना है। सर्वधर्म समन्वय एवं विश्वकुटुम्बकम-भाव से विरचित (लिखित) युगो-युग अटल इस पावन ग्रंथ में विविध भाषाओं, प्रांतों, जातियों एवं मजहबों के ३६ महापुरुषों की रूहानी बाणी ३१ रागों में संकलित है। इनमें ६ गुरु साहिबान, १५ भक्त साहिबान, ११ भट्ट साहिबान एवं ४ गुरसिक्खों की बाणी है। १५ भक्तों में से प्रेम, सेवा एवं विनम्रता के पुंज— भक्त रविदास जी के १६ रागों में ४० शबद श्री गुरु ग्रंथ साहिब में सुशोभित हैं।

भक्त रविदास जी बचपन से ही संत प्रकृति के थे। घर की अनेक वस्तुएं जरूरतमंदों को दे देते। इनकी इस प्रवृत्ति के कारण इनके पिता जी अक्सर इनसे नाराज रहते। बेशक पिता के पास सम्पत्ति थी, लेकिन भक्त रविदास जी जैसा हृदय नहीं था। पिता जी ने आपकी शादी करवा कर अपनी सम्पत्ति में से बिना कुछ दिये आपको अलग कर दिया। आप बिना किसी शिकायत के सरल हृदय अपनी पत्नी के साथ एक झोपड़ी बना कर वहां निवास करने लगे। जूते बना कर गरीबी में बड़े सहज ढंग से संतोषी प्रकृति से आप अपना निर्वाह करने लगे। प्रेमा-भक्ति, सब्र एवं संतोष रूपी धन का आपके पास अटूट खजाना था। आपके शुभ गुणों की चर्चा होने लगी तथा आपकी प्रेमा-भक्ति, त्याग एवं विनम्रता की सुगंध दूर-दूर तक फैलने लगी।

भक्त रविदास जी भक्त कबीर जी के समकालीन तथा भक्त रामानंद जी के शिष्य थे। निम्न जाति मानी जाने वाली कुल में जन्म होने के कारण आपने

*२/१०४, जवाहर नगर, जयपुर-३०२००४, फोन : ९१२९७-६२५२३

तथाकथित उच्च जाति के अहंकारी तथा अभिमानी लोगों को अपनी उच्च आत्मिक अवस्था, विनम्रता एवं प्रेमा-भक्ति के परिणामस्वरूप ऐसा सबक सिखाया कि उनका अहंकार चूर-चूर हो गया। तथाकथित निम्न वर्ग वालों के मन से हीन भावना दूर करने के उद्देश्य से एवं समता तथा भ्रातृ-भावना की ज्योति जलाने हेतु आपने बार-बार अपनी तथाकथित निम्न जाति का परिचय दिया :

*मेरी जाति कमीनी पांति कमीनी ओछा जनमु हमारा ॥*
*तुम सरनागति राजा राम चंद कहि रविदास चमारा ॥*
*(पन्ना ६५९)*

जिन उच्च वर्ग के माने जाने वाले ब्राह्मणों ने भक्त रविदास जी के साथ बैठ कर भोजन ग्रहण करने से इनकार कर दिया उन्हें आपने अपनी पवित्र बाणी से समझाया कि हे नगर वासियो! मेरी जाति चमार (चर्मकार) प्रसिद्ध है। मैं हृदय में प्रभु के गुणों का सिमरन करता हूं। अगर गंगा जल से बनी हुई शराब हो, तो भी संत-जन उसको पीते नहीं। वही अपवित्र शराब गंगा जल में मिलकर गंगा का ही रूप हो जाती है। यही नहीं, जैसे ताड़ का वृक्ष बेशक अपवित्र माना जाता है परंतु जब उसे कागज रूप में निर्मित कर उस पर अंकित प्रभु-भक्ति रूपी उपदेशों पर लोग नत्मस्तक होते हैं, ठीक उसी प्रकार मेरी जाति के चमार बेशक अभी भी बनारस के आस-पास मरे हुए जानवरों को ढो रहे हैं, लेकिन प्रभु की शरण में आए 'रविदास' नामक सेवक को अब प्रतिष्ठित ब्राह्मण दण्डवत प्रणाम करते हैं :

*नागर जनां मेरी जाति बिखिआत चंमारं ॥*
*रिदै राम गोबिंद गुन सारं ॥१ ॥ रहाउ ॥*
*सुरसरी सलल क्रित बारुनी रे*
*संत जन करत नही पानं ॥*
*सुरा अपवित्र नत अवर जल रे*
*सुरसरी मिलत नहि होइ आनं ॥ १ ॥*
*तर तारि अपवित्र करि मानीऐ रे*
*जैसे कागरा करत बीचारं ॥*
*भगति भागउतु लिखीऐ तिह ऊपरे*
*पूजीऐ करि नमसकारं ॥२ ॥*
*मेरी जाति कुट बांढला ढोर ढोवंता*
*नितहि बानारसी आस पासा ॥*
*अब बिप्र परधान तिहि करहि डंडउति*
*तेरे नाम सरणाइ रविदासु दासा ॥ (पन्ना १२९३)*

उपरोक्त शबद उच्चारण कर भक्त रविदास जी ने स्वयं को प्रधान पण्डित मानने वालों का जहां अहंकार तोड़ा वहीं दूसरी ओर यह तथ्य भी उजागर कर दिया कि ईश्वर की ज्योति प्रत्येक वर्ग में एक रूप में प्रकाशमान है। प्रेम, दया, सेवा-भाव एवं विनम्रता के साथ संतोषी प्रवृत्ति वाले भक्त रविदास जी में अद्‌भुत रूप से त्याग की भावना दृष्टिगत होती है। इतिहासकार इस संदर्भ में लिखते हैं कि आपकी सादगी, विनम्रता, प्रेमा-भक्ति से प्रसन्न होकर एक सज्जन आपको गरीबी से मुक्त करने के उद्देश्य से पारस (एक विशेष पत्थर, जिसके स्पर्श से लोहा आदि धातुएं सोने में परिवर्तित हो जाती हैं) दे गया। काफी समय बाद जब वह सज्जन भक्त रविदास जी से वह पारस वापिस लेने आया तो भक्त जी की वही दशा देखकर हैरान हुआ और पूछा कि वह पारस कहां है? भक्त रविदास जी ने अपने ही कर्म में मग्न रहते हुए कहा कि "जहां आप जी ने रखा था वहीं होगा।" साथ ही उनसे विचार-विमर्श करते हुए समझाया कि "इंसान का परम कर्त्तव्य है मेहनत करके उदर-पूर्ति (पेट भरना) तथा ईश्वर की बंदगी करना। आपने शबद उच्चारण किया कि दौलत

एकत्र करनी है तो हरि-नाम की करो, बाकी तो सब झूठे प्रसार और संग्रह हैं:

*नामु तेरो आरती मजनु मुरारे ॥*
*हरि के नाम बिनु झूठे सगल पासारे ॥. . .*
*कहै रविदासु नामु तेरो आरती*
*सति नामु है हरि भोग तुहारे ॥ (पन्ना ६९४)*

भक्त रविदास जी की उच्च आत्मिक अवस्था का जिक्र भाई गुरदास जी ने भी किया है। प्रचलित साखी के अनुसार ऐसा माना जाता है कि एक बार ब्राह्मणों का समूह गंगा-स्नान हेतु प्रस्थान कर रहा था। उन्होंने भक्त रविदास जी, जो कि अपनी मेहनत की किरत करने अर्थात् जूते गांठने में लगे हुए थे, से कहा, चलो गंगा मैया के दर्शन कर आते हैं। इस पर भक्त रविदास जी ने एक कसीरा (प्रचलित सिक्का) उन ब्राह्मणों को देकर कहा कि यह गंगा मैया को भेंट कर देना और कार्य की व्यस्तता के कारण वहां जाने में अपनी असमर्थता जताई। ब्राह्मण उनकी दी हुई भेंट लेकर चले गए। गंगा-स्नान के उपरांत अपनी कीमती भेंट अर्पित कर चुके ब्राह्मणों के आश्चर्य की सीमा न रही जब भक्त रविदास जी की भेंट को गंगा मैया ने हाथ बाहर निकाल कर प्रेमपूर्वक स्वीकार किया। भाई गुरदास जी अपनी दसवीं वार की १७वीं पउड़ी में इस तथ्य को इस प्रकार उजागर करते हैं :

*कढि कसीरा सउपिआ रविदासै गंगा दी भेटा।*
*लगा पुरबु अभीच दा डिठा चलितु अचरजु अमेटा।*
*लइआ कसीरा हथु कढि सूतु इकु जिउ ताणा पेटा।*
*भगत जनां हरि मां पिउ बेटा ॥ (वार १०:१७)*

उपरोक्त कथन से स्पष्ट हो जाता है कि मेहनत की कमाई की मामूली भेंट भी श्रद्धा-भाव से ईश्वर द्वारा स्वीकृत हो जाती है। गुरबाणी आशय अनुसार— ''गोबिंद भाउ भगति का भूखा''।

संतों-भक्तों के जीवन का एक अहम पहलू यह भी माना जाता है कि परिस्थितियों से निराश, हताश हो जाना उनके जीवन का उद्देश्य हरगिज नहीं होता, अपितु इसके प्रति आम लोगों को वे जागरूक करते हैं, कर्म-काण्डों, व्यर्थ आडम्बरों से मुक्त होने की युक्ति सिखाते हैं। भक्त रविदास जी मानव समाज को सुख में आपे से बाहर होने तथा दु:ख में हताश-निराश होने से बचने की प्रेरणा देते हुए फरमान करते हैं :

*माटी को पुतरा कैसे नचतु है ॥*
*देखै देखै सुनै बोलै दउरिओ फिरतु है ॥१ ॥ रहाउ ॥*
*जब कछु पावै तब गरबु करतु है ॥*
*माइआ गई तब रोवनु लगतु है ॥ (पन्ना ४८७)*

मानवीय फितरत के कारण विवेकहीन मनुष्य मैं-मेरी के अहंकार में अपना जीवन नरक सदृश्य बना लेता है। डॉ. जोध सिंघ इस संदर्भ में अपने आलेख में स्पष्ट करते हैं कि ''अहंकारी मनुष्य पहले समाज से टूटता है और अंत में इस मानवीय समाज के सृजनहार परमात्मा से भी टूट जाता है। अत: मैं-मैं को त्याग कर ही प्रभु तथा उसकी बनाई सृष्टि से जुड़ाव हो सकता है।'' (से भगत सतिगुर मनि भाए ,पृष्ठ १२७७)

बड़ी विनम्रता से भक्त रविदास जी परम पिता परमेश्वर के चरणों में यही विनती करते हैं कि हे प्रभु! हमारे जैसा दीन नहीं है और आप जैसा कोई दयालु नहीं है। अब इस तथ्य को परखने की आवश्यकता नहीं है। अपने दास पर कृपा करो और ऐसी पूर्णता प्रदान करो कि आपके वचनों पर मेरा विश्वास दृढ़ रहे। मैं बार-बार प्रभु पर बलिहार जाता हूं। हे प्रभु! किस कारण से आप मुझसें बोलते नहीं हो? बहुत जन्मों से आपसे बिछड़े हुए थे, परंतु यह

जन्म आपके लेखे में व्यतीत होने वाला है। आपके दर्शन किए बहुत समय हो गया है। अब तो आपके दर्शन की आशा में ही जीवित बना हुआ हूं :

*हम सरि दीनु दइआलु न तुम सरि*
*अब पतीआरु किआ कीजै ॥*
*बचनी तोर मोर मनु मानै जन कउ पूरनु दीजै ॥१ ॥*
*हउ बलि बलि जाउ रमईआ कारने ॥*
*कारन कवन अबोल ॥ रहाउ ॥*
*बहुत जनम बिछुरे थे माधउ इहु जनमु तुम्हारे लेखे ॥*
*कहि रविदास आस लगि जीवउ चिर भइओ दरसनु देखे ॥* (पन्ना ६९४)

अपनी उच्च करनी एवं ईश्वरीय भक्ति की बदौलत एक ऐसी आलौकिक नगरी का चित्रण भक्त रविदास जी ने अपनी अनुपम बाणी में किया है कि जहां रहने वाले लोगों को कोई दुख-तकलीफ, चिन्ता और परेशानी नहीं है। इस विस्मयकारी नगरी में परमेश्वर नाम की अनहद धुनें सुनाई देती हैं। यह खुशियों से सजी-संवरी आनंददायिनी 'बेगमपुरा' नगरी है, जहां ईश्वर की रहमत निरन्तर बरसती रहती है, जहां के नागरिक भाग्यशाली हैं, जहां आपसी प्रेम, भातृ-भावना एवं सद्भावना का निवास है। निष्काम प्रेम एवं आत्मिक नूर वाली इस नगरी का प्रत्येक नागरिक आनंदमयी जीवन बसर करता है। वहां टैक्सों की भरमार नहीं, जात-पांत, ऊँच-नीच के झगड़े के कारण किसी का अनादर नहीं होता, किसी का किसी के द्वारा शोषण नहीं किया जाता। उस नगरी की एक अन्य विशेषता यह है कि वहां सबकी श्रेणी एक है अर्थात् सब एक समान हैं। इस आलौकिक नगरी का सुंदर वर्णन भक्त रविदास जी ने इस प्रकार किया है :

*बेगम पुरा सहर को नाउ ॥*
*दूखु अंदोहु नही तिहि ठाउ ॥*
*नां तसवीस खिराजु न मालु ॥*
*खउफु न खता न तरसु जवालु ॥१ ॥*
*अब मोहि खूब वतन गह पाई ॥*
*ऊहां खैरि सदा मेरे भाई ॥१ ॥ रहाउ ॥*
*काइमु दाइमु सदा पातिसाही ॥*
*दोम न सेम एक सो आही ॥*
*आबादानु सदा मसहूर ॥*
*ऊहां गनी बसहि मामूर ॥२ ॥*
*तिउ तिउ सैल करहि जिउ भावै ॥*
*महरम महल न को अटकावै ॥*
*कहि रविदास खलास चमारा ॥*
*जो हम सहरी सु मीतु हमारा ॥* (पन्ना ३४५)

और विचारणीय तथ्य . . . इस आलौकिक नगरी का नागरिक होना उसे नसीब होता है जिस पर परम पिता परमेश्वर की कृपा हो जाए। भक्त रविदास जी का बाणी-प्रमाण है :

*ऐसी लाल तुझ बिनु कउनु करै ॥*
*गरीब निवाजु गुसईआ मेरा माथै छत्रु धरै ॥१ ॥ रहाउ ॥*
*जा की छोति जगत कउ लागै ता पर तुहीं ढरै ॥*
*नीचह ऊच करै मेरा गोबिंदु काहू ते न डरै ॥१ ॥*
*नामदेव कबीरु तिलोचनु सधना सैनु तरै ॥*
*कहि रविदासु सुनहु रे संतहु हरि जीउ ते सभै सरै ॥*
(पन्ना ११०६)

आवश्यकता है तो बस भक्त रविदास जी की पावन बाणी से दिशा-निर्देश लेकर, बाणी को अमल में लाकर अपना लोक-परलोक सफल बनाने की !

# बड़ा घल्लूघारा

*– स. सुरिंदर सिंघ**

लाहौर की जीत के बाद एक नये दौर का आरंभ हुआ। इतिहास का रुख बदल गया। लाहौर पर चाहे सिक्खों का पूरी तरह से कब्ज़ा नहीं हुआ था परन्तु उनकी जीत से हिंदुस्तान में अफ़गानी सलतनत की दीवारें हिल गईं। अब सिक्खों ने अपने आप को पुन: संगठित किया। जिस तरह गुरमता पारित किया जा चुका था। सिक्खों का ध्यान जंडिआला के आकल दास की तरफ गया, जिसने सिक्खों के विरुद्ध मुग़ल हाकिमों का साथ दिया था। आकल दास के पूर्वज निरंजनिये सदा मुग़ल हाकिमों का साथ देते थे। ये निर्दोष सिक्खों का पता मुग़ल हाकिमों को बताते थे और बाद में उन्हें पकड़ कर लाहौर भेजते थे। भाई सुक्खा सिंघ को गिरफ़्तार करवाने वाले भी यही लोग थे और बाद में उसकी शहादत में भी इन्हीं का योगदान था। इसके अलावा निरंजनियों ने भाई महिताब सिंघ के गाँव पर हमला करवाया और उसके परिवार को मरवा दिया।

आकल दास ने अपने आपको अहमद शाह अब्दाली के आगे समर्पित कर दिया था। सिक्खों ने जंडिआला की तरफ कूच किया। आकल दास को सूचना मिल गई कि सिक्ख उस पर हमला करने वाले हैं। उसने अहमद शाह अब्दाली को संदेश भेजा कि वह झटपट हिंदुस्तान पर हमला कर दे। आकल दास का राजदूत अब्दाली को रोहतास में मिला। अब्दाली पहले ही वहाँ पहुँच चुका था। अब वह तेज़ी के साथ आगे बढ़ा और ३ फरवरी, १७६२ ई. को लाहौर पहुँच गया।

सिक्खों ने जंडिआला को घेरा डाल लिया था। कुछ दिनों के बाद उन्होंने शहर का घेरा उठा लिया और सरहिंद की तरफ कूच किया। जब अब्दाली जंडियाला पहुँचा तो सिक्ख वहाँ से जा चुके थे। उस समय सरहिंद का सूबेदार जैन ख़ान था। अब्दाली जंडिआला से लाहौर लौट गया, जहाँ उसे पता चला कि मलेरकोटला के निकट सिक्ख सेना और जैन ख़ान का मुकाबला हो रहा है। अब्दाली के गुस्से का कोई अंत न रहा। वह सिक्खों का बीज नाश करना चाहता था। उसने मलेरकोटला की तरफ कूच किया और ५ फरवरी, १७६२ ई. को अपनी सेना सहित वहाँ पहुँच गया। जब जैन ख़ान को अब्दाली के आने की सूचना मिली तो उसका उत्साह और भी बढ़ गया। उसने सिक्खों पर ज़ोरदार हमले करने शुरू कर दिए।

अमृत वेला हुआ सिंघ अभी सजे भी नहीं थे कि अचानक हमला हो गया। अब्दाली ने अपनी सेना को दो भागों में बांटा। एक की कमान खुद संभाली और दूसरे की अपने वजीर शाह वली ख़ान को सौंपी। उन्होंने सिक्खों को चारों तरफ से घेर लिया। सिक्खों की कुल संख्या ५० हज़ार के लगभग थी, जो गाँव कुप्प रुहीड़ा में डेरा जमाए बैठे थे। गाँव कुप्प रुहीड़ा मलेरकोटला से ८ किलोमीटर की दूरी पर स्थित है।

**डी-५, सरिता विहार, मथुरा रोड, नई दिल्ली—११००४४*

सिक्खों के परिवार गुरमा गाँव में बैठे थे। जैन ख़ान सिक्खों पर टूट पड़ा ताकि वे गाँव गुरमा अपने परिवारों के पास न पहुँच सकें। जैन ख़ान मुश्किल से अभी ढाई किलोमीटर ही आगे बढ़ा था कि सिक्ख उसकी सेना पर टूट पड़े। उसे बुरी तरह से परास्त किया और अपने परिवारों की तरफ बढ़ने लगे। जब वे गुरमा गाँव में दाख़िल होने लगे तो अफगानियों ने उन पर ज़ोरदार हमला किया। सभी सिक्ख घेरे में आ गए। उन्होंने जम कर मुकाबला किया। कुछ सरदारों को परिवारों की देखभाल के लिए भेजा, ताकि परिवारों को बरनाला पहुँचा दिया जाये। सिक्खों के पैर उखड़ गए। असंख्य सिक्ख शहीद हुए। परिवारों के परिवार मारे गए। दल का बहुत नुकसान हुआ। अब्दाली की यह इच्छा थी कि दल के बिलकुल बीच पहुँच कर ऐसा कत्ल-ए-आम किया जाए कि सिक्खों की कमर टूट जाए। अब्दाली की चाल सिक्ख समझ गए। सभी जत्थे इकठ्ठा हो गए और लड़ने की नयी योजना बनाई।

अचानक हमले के कारण सिक्ख सरदारों ने बड़ी होशियारी और फुर्ती से अपने आपको बचाया। सरदार जस्सा सिंघ आहलूवालिया, सरदार शाम सिंघ और सरदार चड़त सिंघ ने वो हाथ दिखाए कि दुनिया देख-सुन कर दंग रह गई। सरदार जस्सा सिंघ आहलूवालिया के शरीर पर २२ और चड़त सिंघ शुकरचक्किया सरदार के शरीर पर १९ ज़ख़्म लगे।

तोपों की गड़गड़ाहट मैदान-ए-जंग में गूँज रही थी। अब्दाली की सेना डेढ़ लाख से अधिक थी। सिक्खों में दृढ़ता और निश्चय था। कौम का सिर ऊँचा करने की भावना थी। हज़ारों बूढ़े, बच्चे और स्त्रियां भी शहीद हुईं। ज्ञानी गिआन सिंघ लिखते हैं कि हर तरफ़ लहू का दरिया बह रहा था। मार-काट होती रही। सिक्ख आगे बढ़ते हुए रात होने तक कुतुब गाँव पहुंच गए। वहाँ एक तालाब था। अब्दाली की सेना ने जी भर कर पानी पीया। सिक्खों ने भी अपनी प्यास बुझायी। एक तरफ़ अफगानी और दूसरी तरफ़ सिक्ख पानी पी रहे थे। यहाँ अब्दाली की सेना रात भर के लिए रुक गई, परन्तु सिक्ख आगे बढ़ते हुए बरनाला जा पहुँचे।

सिक्खों का बहुत नुकसान हुआ। एक ही दिन में तकरीबन ३० हज़ार सिक्ख शहीद हो गए। कुल संख्या ५० हज़ार और शहीद ३० हज़ार। ऐसी सामूहिक रूप से शहादत वाली उदाहरणा इतिहास में अन्य कहीं नहीं मिलती। इस ख़ूनी घटना को 'बड़ा घल्लूघारा' कह कर याद किया जाता है। सिक्खों के मन तब छलनी हो गए, जब उन्हें श्री गुरु ग्रंथ साहिब की दो पवित्र बीड़ों के अग्नि-भेंट होने का पता चला।

अब्दाली ने सोचा था कि सिक्ख अब फिर कभी नहीं उठ सकेंगे। आधी से अधिक कौम शहीद हो गई है। उसका सोचना स्वाभाविक था, मगर उसका अंदाज़ा गलत निकला। सिक्खों को मृत्यु डरा न सकी। ज़ुल्म उन्हें दबा न सके। लड़ाई से अगले दिन सिक्खों ने अकाल पुरख के आगे फिर चढ़दी कला के लिए अरदास की, जिसका परिणाम यह हुआ कि सिक्खों ने तीन महीनों के भीतर सरहिंद पर हमला कर जैन ख़ान को धूल चटाई।

सिक्ख बरनाला पहुँच गए। उन्हें पूरी उम्मीद थी कि पटियाला का आला सिंघ उनकी पूरी सहायता करेगा परन्तु आला सिंघ ने अपनी भेदभाव वाली पुरानी नीति अपनाए रखी। वह पटियाला छोड़ कर डंडहूटा, जो वहाँ से २५ किलोमीटर दूर था, जा डेरा जमाया।

अहमद शाह चाहता था कि आला सिंघ को चाहिए कि वह उसके दरबार में आकर सजदा करे, क्योंकि वह उसके इलाके में आया हुआ है। आला सिंघ उधेड़बुन में था। अगर वह अब्दाली के आगे झुकता है तो सिक्ख उसके साथ नाराज़ हो जाएंगे और अगर वह नहीं जाता तो अब्दाली के क्रोध का शिकार होगा। अंत में बहुत सोच-विचार के बाद उसने अब्दाली से न मिलने का निश्चय किया। आला सिंघ के विरोधी हरकत में आ गए और अब्दाली के कान भरने लगे। इन विरोधियों में मलेरकोटला का नवाब, लक्ष्मी नारायण, जैन ख़ान का दीवान और रायकोट का राय शामिल था। इसका परिणाम यह निकला कि अब्दाली की सेना ने बरनाला को घेर लिया। उसे आग लगा दी और आस-पास का सारा इलाका उजाड़ दिया। फिर अब्दाली डंडहूटा की तरफ बढ़ा, परन्तु आला सिंघ वहाँ से निकल गया। वह नजीब-उद्-दौला से मिला, जिसने आला सिंघ को अब्दाली के सामने पेश होने का सुझाव दिया। आला सिंघ के लिए अन्य कोई चारा नहीं था। वह अब्दाली के सामने पेश हुआ, जिसने उसके केश काटे जाने का हुक्म दिया। आला सिंघ ने सवा लाख रुपए देकर अपने केशों की रक्षा की। यह भी बताया जाता है कि आला सिंघ की रानी बीबी फत्तू ने चार लाख रुपया अब्दाली को और भेंट किया ताकि उसे कोई हानि न पहुंचाई जाए। अब्दाली ने भी नरम व्यवहार अपनाया और आला सिंघ को क्षमा कर दिया। उसे ख़िलअत पेश की गई और सरहिंद के सूबेदार के नाम पर एक फरमान जारी किया गया कि आला सिंघ की ज़ब्त की हुई जागीर उसे लौटा दी जाए। आला सिंघ को राजा का ख़िताब दिया गया। उसके बदले में उसने सालाना कर देना मान लिया। आला सिंघ ने शाह के नाम का एक सिक्का जारी किया। १५ फरवरी, १७६२ ई. को अब्दाली लाहौर की तरफ चल पड़ा। वह अपने साथ सिक्खों के सिरों की पचास गाड़ियां भर कर ले गया। अब्दाली ३ मार्च, १७६२ ई. से १७ दिसंबर, १७६२ ई. तक लाहौर में रहा।

लाहौर में सिक्खों के सिरों के मीनार खड़े किये गए। शहर की मस्जिदों को सिक्खों के ख़ून से धोया गया। अब्दाली कुछ महीने लाहौर टिका, ताकि सिक्ख पुन: सिर न उठा सकें। उसने अपने खजाने को भी भरने का यत्न किया। उसने अपने हिंदुस्तानी साथियों को लिखा कि वे अपने प्रतिनिधि उसके पास भेजें। मरहट्टों (मराठों) के दिल्ली में रहते राजदूतों—बापू और पुरुषोत्तम को चिट्ठी लिखी। वे अब्दाली के दरबार में उपस्थित हुए। पेशवा के साथ उनके माध्यम से बातचीत हुई। पेशवा उपस्थित हुआ और उसके अधिकारों को मान लिया गया। अब्दाली और पेशवा में मित्रता हो गई।

१० अप्रैल, १७६२ ई. को लाहौर से अब्दाली श्री अमृतसर पहुँचा। उसने हुक्म दिया कि श्री हरिमंदर साहिब को तोपों से उड़ा दिया जाये। श्री हरिमंदर साहिब उड़ा दिया गया। बुंगे गिरा दिए गए। पवित्र सरोवर को मिट्टी से भर दिया गया। अब्दाली चाहता था कि सिक्खों की शक्ति का स्रोत जड़ से ही उखाड़ दिया जाए। बताया जाता है कि जब अब्दाली तोपों से श्री हरिमंदर साहिब को उड़ा रहा था तो एक ईंट आकर उसकी नाक पर लगी। जो ज़ख़्म उसकी नाक पर बना वह नासूर (कैंसर) का रूप धारण कर गया और उसके लिए जानलेवा साबित हुआ।

# श्री ननकाणा साहिब का शहीदी साका : विस्तृत वृत्तांत

*-स. सिमरजीत सिंघ**

पाकिस्तान के राज्य पंजाब के ज़िला शेखूपुरा का प्रसिद्ध नगर है— 'श्री ननकाणा साहिब'। पहले इस नगर को 'तलवंडी राय भोय की' नाम से जाना जाता था। सिक्ख धर्म के संस्थापक श्री गुरु नानक देव जी का जन्म यहीं पर हुआ। गुरु जी के पवित्र चरण-स्पर्श सदका ही इस नगर को 'श्री ननकाणा साहिब' नाम से जाना जाने लगा। जिस स्थान पर श्री गुरु नानक देव जी का जन्म हुआ उस स्थान पर गुरुद्वारा जन्म-स्थान सुशोभित है। इसके अलावा इस नगर में गुरु जी से सम्बन्धित और भी गुरुद्वारा साहिबान हैं।

गुरुद्वारा जन्म-स्थान वाले स्थान पर श्री गुरु नानक देव जी के माता-पिता का निवास-स्थान था। सबसे पहले यहाँ गुरु जी के पोते बाबा धरम चंद ने गुरु जी की छोटी-सी यादगार निर्मित की थी, जिसे 'कालू का कोठा' कहा जाता था। १६१३ ई. में छठे पातशाह साहिब श्री गुरु हरिगोबिंद साहिब के श्री ननकाणा साहिब आगमन से यहाँ यादगारी स्थान स्थापित हुआ। श्री गुरु हरिगोबिंद साहिब ने इस स्थान की सेवा-संभाल उदासी संप्रदाय के प्रमुख बाबा अलमस्त जी को सौंपी।

बाबा बंदा सिंघ बहादुर की शहादत के बाद मुग़ल हुकूमत सिक्खों का खुरा-खोज मिटाने के लिए तत्पर हो गई। इस समय के दौरान सिक्खों का गुरुद्वारा साहिबान के दर्शन करना बहुत मुश्किल हो गया था। गुरुद्वारा साहिब की सेवा-संभाल का सारा जिम्मा संप्रदायी साधुओं के पास चला गया, जो अपनी मर्ज़ी की मर्यादा बना लेते थे। कुछ समय बाद जब सिक्ख मिसलों का समय आया तो सिक्ख कुछ सँभले और इन्होंने अपनी रियासतें कायम कर लीं। इन रियासतों में से ही सिक्ख राज्य पैदा हुआ। सिक्ख राज्य के समय गुरुद्वारा साहिबान के निर्माण की तरफ विशेष ध्यान दिया गया। गुरुद्वारा साहिबान के नाम बड़ी-बड़ी जागीरें लगवाई गईं। इस समय के दौरान भी सिक्ख गुरुद्वारा साहिबान की भीतरी मर्यादा की तरफ विशेष ध्यान न दे सके और प्रबंध पहले की तरह उदासी या संप्रदायी साधुओं के पास ही रहा।

श्री गुरु नानक देव जी की वंश में से बावा लाजपत बेदी १७वीं सदी के मध्य में श्री ननकाणा साहिब पहुँचे। इन्होंने गुरुद्वारा जन्म-स्थान की इमारत को बड़े आकार में करवाया। इसके बाद गुरु साहिब की याद में और भी गुरुद्वारा साहिबान तामीर हुए। इन गुरुद्वारा साहिबान की सेवा-संभाल एक उदासी साधु राम करता रहा। इसकी सहायता भाई दुनी चंद उदासी और भाई नत्था सिंघ निरमला करते थे। इन साधुओं के वंशज ही

*उप सचिव व मुख्य संपादक, शिरोमणि गुरुद्वारा प्रबंधक कमेटी, श्री अमृतसर। फोन : ९८१४८-९८२२३

एक दूसरे के बाद इन स्थानों की सेवा-संभाल करते रहे और अंत में अपनी निजी संपत्ति समझने लगी। बाबा साहिब सिंघ (बेदी) और अकाली फूला सिंघ की प्रेरणा से महाराजा रणजीत सिंघ ने गुरुद्वारा जन्म-स्थान श्री ननकाणा साहिब की सुंदर इमारत का निर्माण करवाया और बहुत सारी जागीर भी गुरुद्वारा साहिब के नाम करवाई।

सन् १८४९ ई. में पंजाब पर अंग्रेज़ों का राज्य स्थापित हो गया। अंग्रेज़ों ने पंजाब का राज्य सिक्खों से धोखे से छीना था। पंजाब पर कब्ज़ा करने के लिए अंग्रेज़ों ने सिक्खों के साथ जो लड़ाई लड़ी, उसमें सिक्खों ने अंग्रेज़ों को नाकों चने चबा दिए थे। जब अंग्रेज़ों ने १७६५ ई. में बंगाल पर कब्ज़ा किया था तब से ही वे सिक्खों की बहादुरी के कारनामे सुनते आ रहे थे। अहमद शाह अब्दाली के १७६१ ई. में भारत पर किये हमले के समय उसकी मुठभेड़ मराठों के साथ हुई। मराठों की पानीपत की लड़ाई में करारी हार हुई। इसके उपरांत सिक्खों ने अपनी जान हथेली पर रख कर अफगानों से देश को आज़ाद करवाया। फोर्ट विलिअम कलकत्ता में सिक्खों की बहादुरी का गौर से मूल्यांकन कर रहा था। सिक्खों की बढ़ रही शक्ति अंग्रेज़ों के लिए चिंता का कारण बनी हुई थी। अंग्रेज़ों को इस बात का ज्ञान हो गया था कि यदि उत्तर-पश्चिम इलाके में उन्हें कोई चुनौती देगा, तो वे सिक्ख हैं। अंग्रेज़ों ने अपने सभी सूत्रों से पता कर यह अंदाज़ा लगा लिया था कि सिक्ख ग़ुलाम रहने वाली कौम नहीं है। इनके प्रेरणा-स्रोत और जागृति का केंद्र गुरुद्वारा साहिबान हैं। अंग्रेज़ों ने सिक्खों को कमज़ोर करने के लिए गुरुद्वारा साहिबान में घुसपैठ करने की सोची और इस मंतव्य के लिए उन्होंने महंतों को अपने हक में कर सिक्खों के विरुद्ध भड़काना शुरू कर दिया। महंतों को भ्रष्ट करने के लिए हर तरह की सरकारी सहायता दी जाती थी। अंग्रेज़ों ने महंतों को अपने मतलब के लिए इस्तेमाल करना शुरू कर दिया था। १८४७ ई. में अंग्रेज़ सरकार ने लाहौर सरकार की तरफ से श्री दरबार साहिब, श्री अमृतसर को कड़ाह प्रसाद के लिए नियत की ११ रुपए रोज़ाना की राशि को घटा कर ३ रुपए कर दिया। जलंधर-दुआबा के कमिशनर जहान लारेंस ने श्री दरबार साहिब के नाम जो जागीरें थीं, उनका सर्वे करवाया। ग्रंथी मक्खण सिंघ १८३२ ई. से श्री दरबार साहिब में सेवा निभाता आ रहा था। अंग्रेज़ों ने उसे अपनी तरफ करने के लिए श्री अमृतसर को छोड़ कर श्री दरबार साहिब की सभी जागीरें— उम्र भर के लिए निजी नाम पर कर दीं। १८४८ ई. में सरदार जोध सिंघ, जो डेरा बाबा नानक में नायब अदालती और अंग्रेज़-परस्त था, का स्थानांतरण श्री अमृतसर कर दिया। बाबा लछमण सिंघ का प्रबंध ठीक न होने का दोष लगा कर इनकी छुट्टी कर दी गई। इनकी जगह सरदार जोध सिंघ को नियुक्त कर दिया गया। श्री दरबार साहिब, श्री अमृतसर का सरबराह अंग्रेज़ों ने अपनी मर्ज़ी से नियुक्त करना शुरू कर दिया था, जो आम तौर पर सरकारी आदमी होता था। सन् १८७२ ई. में अंग्रेज़ों ने इन महंतों को स्वतंत्रता सेनानी बाबा राम सिंघ भैणी साहिब वालों के विरुद्ध इस्तेमाल किया। १८४९ ई. में ३० मार्च को जब अंग्रेज़ों ने पूरी तरह से सिक्ख

राज्य पर कब्ज़ा कर लिया तो इन अंग्रेज़-परस्तों से श्री दरबार साहिब में दीपमाला करवाई गई। सन् १९१४-१५ ई. में अमेरिकन और कनाडियन सिक्खों के विरुद्ध सरबराह अरूड़ सिंघ को इस्तेमाल किया गया। सन् १९१९ ई. में निहत्थे भारतीय लोगों को जलियां वाला बाग़ में मशीन-गनों की गोलियों से भूनने वाले जनरल डायर को अंग्रेज़ों की तरफ से इन सरबराहों से ही सिरोपा दिलवाया गया था। इस तरह अंग्रेज़ों की शह पर महंत अपनी सेवा-भावना को भुला कर गुरुद्वारा साहिबान की जायदाद के मालिक ख़ुद को समझने लगे। गुरुद्वारा श्री रकाब गंज साहिब, दिल्ली के महंत ने सिक्ख संगत से पूछे बिना ही गुरुद्वारा साहिब की ज़मीन सरकार को बेच दी। गुरुद्वारा बाबा फूला सिंघ के महंत हरनाम सिंघ ने गुरुद्वारा साहिब की ज़मीन बेच दी। श्री दरबार साहिब, तरनतारन साहिब के महंतों ने गुरुद्वारा साहिब का बुंगा पादरियों को बेच दिया। ये महंत हर तरह का नशा और कुरीतियां सरकार की शह पर गुरुद्वारा साहिबान की हदूद में करने लगे थे।

गुरुद्वारा जन्म-स्थान श्री ननकाणा साहिब का महंत नारायण दास वल्द किशन दास वल्द साधु राम था। गुरुद्वारा पट्टी साहिब का महंत तीरथ सिंघ था। गुरुद्वारा माल जी साहिब का महंत कृपा राम था। गुरुद्वारा किआरी साहिब का महंत फौजा सिंघ था। गुरुद्वारा तंबू साहिब के महंत सरम सिंघ और उजागर सिंघ थे। गुरुद्वारा साहिब पातशाही छठी का महंत संगत सिंघ था। ये गुरुद्वारा साहिब में सिक्ख मर्यादा के विपरीत कार्यवाहियां करने लगे। महंतों ने सरकार की मिलीभुगत से गुरुद्वारा साहिब की जायदादों का इंदराज बतौर मालिक करवाना शुरू कर दिया। श्री ननकाणा साहिब स्टेट का कुल क्षेत्रफल १७६७५ एकड़ था। इसमें से १५९२३ एकड़ में खेती होती थी। बाकी क्षेत्रफल में श्री ननकाणा साहिब, बस्तियाँ, सरकारी इमारतें, रेलवे लाईनें, सड़कें, मार्ग, नहरें, नाले आदि थे। श्री ननकाणा साहिब स्टेट में २४ गाँव आबाद थे। ६ एकड़ में बाग़ कोट साधू राम, ५ एकड़ में बाग़ कोट दरबार साहिब, ४ एकड़ में राम पुरा बाग़, १२५ एकड़ में गुरु नानक गार्डन और १७० एकड़ में शहीदी बाग़ था। इसके अलावा अन्य गाँवों में गुरुद्वारा साहिबान के साथ ज़मीन-जायदाद थी, जिसमें से गाँव शाहपुर और हरीआ में २२ मरब्बे, गाँव बिहारी पुर में पौने चार मरब्बे, गाँव कनल में २३ एकड़, गाँव पिंडी चेरी में ३ मरब्बे (मौरूसी हक), गाँव नानक कोट में पौने पांच मरब्बे, सांगल शहर में तीन दुकानें, शाहकोट में दो दुकानें और गुज्जर ख़ान में एक दुकान थी। इस सैकड़ों एकड़ ज़मीन का मालिक नारायण दास ही नहीं, बल्कि बावा साहिब दास, लाभ दास, गंगा राम, आत्मा राम, अतर दास आदि कितने ही मालिक बन गए थे। इसके अलावा महंत गुरुद्वारा साहिब की कीमती जायदाद बेच कर खा रहे थे। सन् १९१७ ई. में महंत नारायण दास ने गुरुद्वारा साहिब में लाहौर से वेश्या मंगवा कर नाच करवाया। श्री ननकाणा साहिब के हालात के बारे में संत सूरज सिंघ ने अपनी पुस्तक 'जागृत खालसा' में ज़िक्र किया है :

*हो महंत गुरधाम दे की किरत कमाई।*
*इक डूमणी उस ने घर विच वसाई।*
*विषे पराइण हो रिहा सभ बुध नसाई।*

*पुत्र धीआं उस तों बैठा उपजाई।*
*नाम उन्हां दे लांवदा सी विरसा भाई।*
*लाज नां साधू भेख दी भैड़े नूं आई।*
*पीए शराब नित ही बण रिहा शुदाई।*
*चोर उचक्के धाड़वी बहु पास बुलाई।*
*देख देख रहे सिंघ दुखाई।*

सिंध प्रांत से एक सिंधी सेशन जज के पद से रिटायर होने के उपरांत अपने पारिवारिक सदस्यों सहित गुरुद्वारा साहिबान के दर्शन के लिए निकला। जब वह गुरुद्वारा जन्म-स्थान, श्री ननकाणा साहिब पहुँचा तो रात बिताने के लिए यहीं पर ठहर गया। महंत ने उसे रिहायश के लिए गुरुद्वारा साहिब के अंदर दक्षिण दिशा में जो रिहायशी कमरे थे, वे दे दिए। रात होने पर उसमें रौशनी करने के लिए महंत से दीये की माँग की तो महंत ने अपने कमरे में रखा दीया दे दिया, परन्तु उसमें तेल नहीं था। महंत ने उस जज की १३-१४ साल की बच्ची से कहा कि वह उसके साथ आ जाये और तेल ले ले। जब वह लड़की उसके साथ तेल लेने के लिए गई तो भ्रष्ट महंत ने उसके साथ बलात्कार किया। वह नाबालिग़ लड़की चीखती-चिल्लाती हुई वापिस आ गई। संगत इस घोर अपराध को सुन कर दंग रह गई। जब महंत नारायण दास को सिंधी द्वारा शोर मचाने का पता चला तो उसने अपने गुंडे भेज कर धक्के से नाबालिग लड़की को उठवा लिया। सुबह होते ही महंत ने कहा कि यदि तुम चुपचाप रेल चढ़ कर यहां से चले जाओगे तो तुम्हारी लड़की स्टेशन पर पहुँचा दी जायेगी। जब वह सिंधी परिवार गाड़ी में बैठ गया तो महंत के गुंडे उसकी लड़की को उसके पास छोड़ गए। इसके अलावा गांव जड़ां वाला, ज़िला लायलपुर से पूर्णिमा के मेले पर आईं छः स्त्रियों के साथ भी बलात्कार किया गया। भाई बूटा सिंघ पोठोहारी की कृपाण और रुपए छीन लिए गए।

अप्रैल, १९२० ई. में साझे (सम्मिलित) पंजाब के ज़िला गुजरात के नगर डिंगा में सिक्ख एजूकेशनल कान्फ्रेंस आयोजित की गई। इस कान्फ्रेंस में वह सिंधी व्यक्ति, जिसकी बच्ची महंत के कुकर्म का शिकार हुई थी, भी पहुँच गया। इस सिंधी ने विलाप करते हुए श्री ननकाणा साहिब में उसके साथ घटी घटना बतायी और सिक्खों को झकझोरा कि "सिक्ख हैं या मर-मिट गए हैं?"

नित्य-प्रति की ऐसी घटनाओं के कारण सिक्ख जगत गुरुद्वारा साहिबान को इन महंतों से आज़ाद करवाने के लिए जागरूक हो गया। जत्थेदार करतार सिंघ झब्बर और सरदार बूटा सिंघ वकील शेखूपुरा ने कई बार महंत नारायण दास को सही रास्ते पर लाने के लिए बातचीत करने की कोशिश की। श्री ननकाणा साहिब को आज़ाद करवाने के लिए अक्तूबर, १९२० ई. में धारोवाली गाँव में एक दीवान सजाया गया और महंत को प्रबंध एवं कर्मचारियों के व्यवहार में सुधार करने के लिए प्रस्ताव पारित किया गया। जब महंत को इस प्रस्ताव की सूचना दी गई तो उसने सुधरने की बजाय सिक्खों को ही सबक सिखाने की ठान ली। उसने पूरी जंगी तैयारी कर ली। साथ ही उसने पंथक-मुखिया लोगों की आँखों में धूल झोंकने के लिए संधि की बात चलाए रखी। २३ जनवरी और ६ फरवरी, १९२१ ई. को श्री अकाल तख़्त

साहिब पर शिरोमणि गुरुद्वारा प्रबंधक कमेटी की तरफ से विशेष समागम आयोजित किये गए। कमेटी की तरफ से महंत नारायण दास के नाम खुली चिट्ठी लिखी गई कि वह गुरुद्वारा साहिबान के प्रबंध और अपने आचरण में सुधार करे। पाँच प्रसिद्ध सिंघों की सब-कमेटी बनाई गई, जिसे श्री ननकाणा साहिब के लंगर का प्रबंध करने के लिए कहा गया। गुरुद्वारा श्री पंजा साहिब, ज़िला कैंबलपुर, गुरुद्वारा सच्चा सौदा, ज़िला शेखूपुर, गुरुद्वारा चोहला साहिब अमन-चैन से ही पंथक प्रबंध के अधीन आ चुके थे। श्री तरनतारन साहिब के महंत ने २६ जनवरी १९२१ ई. को सिंघों पर हमला कर कई सिंघों को घायल कर दिया था और दो सिंघों— भाई हज़ारा सिंघ अलादीनपुर और भाई हुकम सिंघ वसाऊ कोट को शहीद कर दिया था। इस घटना के प्रति सारे पंथ में भारी आक्रोश भर गया था। १४ फरवरी, १९२१ ई. को सरदार बूटा सिंघ वकील की कोठी में महंत नारायण दास के साथ मीटिंग के लिए समय निर्धारित किया गया। मौके पर महंत मुकर गया और कह दिया कि मीटिंग १५ फरवरी, १९२१ ई. वाले दिन लाहौर में की जायेगी। सरदार बूटा सिंघ और सरदार करतार सिंघ झब्बर 'लायल गज़ट' के दफ़्तर लाहौर में सरदार अमर सिंघ के पास पहुँच गए। झब्बर जी ने अपने विश्वसनीय सरदार वरियाम सिंघ को सारे हालात की सूचना लेने के लिए ज़िला मिंटगुमरी के सरदार उत्तम सिंघ के कारख़ाने में फ़र्ज़ी मुंशी लगवाया हुआ था। यहाँ महंत नारायण दास का आना-जाना था। सरदार करतार सिंघ झब्बर ने सरदार अवतार सिंघ के माध्यम से सूचना दी कि महंत ने अपने राम गली वाले मकान में गुप्त मीटिंग की है, जिसमें थंमण का महंत अर्जुन दास, बग्घियाँ वाला जगन नाथ और मानक गुरुद्वारे का महंत बसंत सिंघ अपने चार-पाँच अन्य साथियों सहित शामिल हुआ था। महंत नारायण दास ने बदमाशों को डेढ़ लाख रुपया देना मान कर १२ भगौड़े कातिलों को साथ लेकर ६ मार्च को श्री ननकाणा साहिब पहुँचने के लिए कहा है। उन्हें कहा गया है कि जब पंथक मुखिया लोगों का इकट्ठ जन्म-स्थान पर होगा तो ये भाड़े के कातिल इन पर हमला कर रफ़ूचक्कर हो जाएँ। महंत और उसके साथी, पकड़ लो! पकड़ लो!! मारे गए! का शोर मचाते हुए कुछ दूर तक पीछा करेंगे। इस रिपोर्ट ने पंथक नेताओं को सचेत कर दिया।

सूचना मिलते ही सिक्ख नेताओं ने एक जलसा बुला लिया। भाई लछमण सिंघ, भाई टहिल सिंघ, भाई बूटा सिंघ चक्क नंबर २०४ और सरदार तेजा सिंघ ने मिल कर यह कार्यक्रम बनाया कि जब १९-२० फरवरी को महंत नारायण दास लाहौर में सनातन सिक्ख कान्फ्रेंस में भाग लेने जायेगा तो उसके बाद गुरुद्वारा जन्म-स्थान श्री ननकाणा साहिब का प्रबंध अपने हाथों में ले लिया जाये। इस बारे में सभी सिक्खों को सूचना भेज कर २० फरवरी, १९२१ ई. को श्री ननकाणा साहिब पहुँचने के लिए कह दिया गया। कार्यक्रम तय हो गया कि भाई लछमण सिंघ अपने जत्थे के साथ गाँव धारोवाल से चल कर सरदार करतार सिंघ झब्बर के जत्थे से श्री ननकाणा साहिब से लगभग पाँच मील दूर चंद्रकोट के जोहड़ पर मिलेंगे। लायलपुर से आए सिंघ इन्हें २० फरवरी वाले दिन

प्रातः काल ४ बजे श्री ननकाणा साहिब के पास भट्टों (ईंटे बनाने वाला स्थान) पर मिल कर गुरुद्वारा साहिब में प्रातः काल ५ बजे पहुँचेंगे। सिक्ख नेताओं का एक जलसा चूहड़काणा में हुआ। कुछ विचार-विमर्श करने के बाद पंथक नेताओं ने इस कार्यवाही को आगे डालना उचित समझते हुए संदेश भेज कर जत्थों को फ़िलहाल श्री ननकाणा साहिब न जाने के संदेश भेज दिए। मास्टर तारा सिंघ और सरदार तेजा सिंघ समुंदरी को जब इस सारी योजना का पता चला तो उन्होंने १९ फरवरी प्रातः काल ५ बजे चूहड़काणा से गुज़रते हुए सरदार सुच्चा सिंघ जयचक्क वालों के हाथ सरदार करतार सिंघ झब्बर को जत्था न ले जाने के बारे में संदेश भेजा। जिन नेताओं को इस कार्यक्रम का पता चलता गया, वे न गए। किसी कारण से यह संदेश भाई लछमण सिंघ धारोवाली तक न पहुंच सका। वे अपने जत्थे सहित अरदास कर गाँवों से होते हुए श्री ननकाणा साहिब की तरफ रवाना हो गए। जत्थे में भाई लछमण सिंघ की पत्नी बीबी इंदर कौर और एक अन्य महिला भी शामिल थी। यह जत्था नज़ामपुर, देवा सिंघ वाला, धन्नूवाल, चेलावाल, ठट्ठीआं, मूल सिंघ वाला आदि गाँवों में से होता हुआ मोहलण पहुंच गया, जो श्री ननकाणा साहिब से मात्र ६ मील की दूरी पर स्थित था।

२० फरवरी, १९२१ ई. को भाई लछमण सिंघ १५० सिंघों का जत्था लेकर श्री ननकाणा साहिब के लिए रवाना हो गए। गुरुद्वारा जन्म-स्थान से आधा मील दूर भट्टे पर पहुंच कर जत्थे के साथ आई महिलाओं को गुरुद्वारा तंबू साहिब की तरफ भेज दिया गया और जत्थेदार लछमण सिंघ ने अरदासा सोध दिया। उसी समय भाई वरिआम सिंघ चिट्ठी लेकर पहुँच गए, जिसमें कहा गया था कि जत्था लेकर फ़िलहाल श्री ननकाणा साहिब न पहुंचा जाये। जत्थेदार जी ने कहा कि हम अरदासा सोध चुके हैं और अब तो दर्शन करके ही वापिस आएंगे, इसमें चाहे जान ही क्यों न चली जाये। जत्था शांतमयी ढंग के साथ गुरुद्वारा जन्म-स्थान की तरफ रवाना हो गया।

जत्थे के सिंघ दर्शनी ड्योड़ी के रास्ते श्री ननकाणा साहिब के दरबार में दाख़िल हो गए। भाई लछमण सिंघ श्री गुरु ग्रंथ साहिब की हजूरी में बैठ गए और बाकी के सिंघ शबद पढ़ने लगे। महंत नारायण दास लाहौर मीटिंग में भाग लेने के लिए रेलवे स्टेशन के लिए निकल चुका था। जब महंत के गुंडों ने सिंघों को देखा तो वे घोड़े लेकर स्टेशन की तरफ रवाना हो गए। जब वे स्टेशन पर पहुँचे तो गाड़ी रवाना हो चुकी थी। उन्होंने घोड़े दौड़ाए और अगले स्टेशन बारबटन पर गाड़ी पहुँचने से पहले ही पहुँच गए। वे महंत को सारी घटना बता कर गाड़ी में से उतार कर श्री ननकाणा साहिब पहुंच गए। महंत नारायण दास ने गुरुद्वारा साहिब की पश्चिमी और दक्षिणी दिशा वाले चौबारे में से सब कुछ देख कर जायज़ा लिया। उसने अपने आदमियों— रांझा, रिहाणा, माछी और पठाणा को कार्यवाही करने का हुक्म दिया। गुंडों ने छत पर बनाए गए मोर्चों से जत्थे पर गोलियाँ बरसानी शुरू कर दीं। अनेक सिंघ शहीद हो गए, बहुत-से घायल हो गए। भाई लछमण सिंघ के गुरु साहिब की हजूरी में बैठे ही गोली

लगी और वे गंभीर ज़ख़्मी हो गए। श्री गुरु ग्रंथ साहिब की पवित्र बीड़ में भी गोलियाँ लगीं। इस बीड़ के १३१९ से १४३० पन्नों सहित गत्ते की जिल्द को फाड़ कर गोली दूसरी तरफ़ निकल गई। ११३२ से १२२८ तक के पन्ने भाई लछमण सिंघ के ख़ून से रंगे गए। इस बीड़ को शहीदी बीड़ कहा जाता है, जो आजकल श्री अकाल तख़्त साहिब पर सुशोभित हुई है। इस शहीदी जत्थे के साथ लुधियाना ज़िले के जरग गाँव के हवलदार सरदार केहर सिंघ और उनका ९ वर्षीय पुत्र दरबारा सिंघ भी शामिल थे। गोली चलने पर सिंघों ने चौखंडी के दरवाज़े बंद कर लिए। गुंडों ने छत पर से उतर कर छवियों, तलवारों, गंडासों के साथ मार-काट करनी शुरू कर दी। जब चौखंडी के अंदर सिक्खों को कत्ल करने के लिए हमला किया तो दरवाज़े अंदर से बंद थे। बहुत यत्न करने पर उन्होंने एक दरवाज़े में छेद कर लिया और अंदर बैठे सिक्खों को गोलियों से भूनना शुरू कर दिया। हवलदार सरदार केहर सिंघ गोली लगने से शहीद हो गए। इस अफरा-तफरी में कुछ ज़िंदा सिंघों ने बच्चे दरबारा सिंघ को बचाने के लिए उसे एक अलमारी में बंद कर दिया। जब दरबार वाले सभी सिक्ख शहीद हो गए तो महंत घोड़े पर सवार होकर और मुँह पर कपड़ा लपेट कर गुरुद्वारा साहिब के गेट से बाहर आ गया और बाहर से आने वाले सिक्खों को कत्ल करवाने लगा। चौखंडी का दरवाज़ा खोलने पर पता चला कि ख़ून से लथपथ सिक्खों की लाशों के साथ कमरा भरा पड़ा था। अलमारी में से धक्के लग रहे थे। जब अलमारी खोली गई तो अंदर बच्चा दरबारा सिंघ था। ज़ालिमों ने उसे पकड़ लिया। गोलियों की आवाज़ सुन कर भाई उत्तम सिंघ के कारख़ाने से भाई दलीप सिंघ आ गए। उन्होंने महंत को ऐसा करने से रोका। महंत ने उनकी बात तो क्या सुननी थी, बल्कि उनको भी गोली मार दी। उनके साथ ही भाई वरिआम सिंघ थे। उन्हें भी महंत के गुंडों ने शहीद कर दिया।

शहीदों की लाशों को गुरुद्वारा साहिब में तीन ढेरियाँ लगा कर इकट्ठा कर लिया गया। इन पर मिट्टी का तेल डाल कर आग लगा दी गई। भाई लछमण सिंघ को ज़ख़्मी हालत में जंड के साथ उल्टा बांध दिया गया और फिर आग लगा दी और बच्चे दरबारा सिंघ को पकड़ कर ज़ालिम बाहर लाए उसे उसके पिता की जल रही चिता पर फेंक दिया गया। यह छोटा सा बच्चा भी अपने पिता के साथ ही शहीद हो गया। एक मुसलमान लड़की ने महंत की इस कार्यवाही का बहुत बुरा मनाया। महंत ने उसे भी गोली मार दी और जलती भट्टी में फेंक दिया। बाद में महंत ने लड़की के वारिसों को बड़ी रकम देकर चुप करवा दिया। इस शहीदी साके के समय करतार सिंघ (बेदी), मंगल सिंघ (कूका) और कुछ भट्टी मुसलमानों ने भी महंत का पूरा साथ दिया। इस साके में शहीद हुए जिन सिक्खों का पता लग सका, उनके नाम निम्नलिखित अनुसार हैं :—

१. स. उजागर सिंघ सुपुत्र स. जगत सिंघ, २. स. आतमा सिंघ सुपुत्र स. हीरा सिंघ, ३. स. ईशर सिंघ सुपुत्र स. हरदित्त सिंघ, ४. स. ईशर सिंघ सुपुत्र स. वधावा सिंघ, ५. स. ईशर सिंघ सुपुत्र स. संत सिंघ, ६. स. ईशर सिंघ ग्रंथी सुपुत्र स. अतर सिंघ, ७. स. इंदर सिंघ सुपुत्र स. महिताब सिंघ, ८.

स. इंदर सिंघ सुपुत्र स. सरमुख सिंघ, ९. स. सुंदर सिंघ सुपुत्र स. जगत सिंघ, १०. स. सुरैण सिंघ सुपुत्र स. मित सिंघ, ११. स. सुंदर सिंघ सुपुत्र स. चंदा सिंघ, १२. स. सेवा सिंघ सुपुत्र स. ईशर सिंघ, १३. स. सुरैण सिंघ सुपुत्र स. राम सिंघ, १४ स. संता सिंघ सुपुत्र स. मोहरा सिंघ, १५. स. संता सिंघ जत्थेदार सुपुत्र स. नंद सिंघ, १६. स. संता सिंघ सुपुत्र स. नंदा सिंघ, १७. स. सोहण सिंघ सुपुत्र स. केसर सिंघ, १८. स. सुंदर सिंघ जत्थेदार सुपुत्र स. बिशन सिंघ, १९. स. सोहण सिंघ सुपुत्र स. शेर सिंघ, २०. स. समां सिंघ सुपुत्र स. पाला सिंघ, २१. स. हज़ारा सिंघ सुपुत्र स. लाल सिंघ, २२. स. हरनाम सिंघ सुपुत्र स. ईशर सिंघ, २३. स. हरी सिंघ सुपुत्र स. घनईआ सिंघ, २४. स. हरनाम सिंघ सुपुत्र स. सुंदर सिंघ, २५. स. हीरा सिंघ सुपुत्र स. बूटा सिंघ, २६. स. हुकम सिंघ सुपुत्र स. घनईआ सिंघ, २७. स. हरी सिंघ सुपुत्र स. सेवा सिंघ, २८. स. किशन सिंघ सुपुत्र स. सुंदर सिंघ, २९. स. केसर सिंघ सुपुत्र स. पाल सिंघ, ३०. स. केहर सिंघ सुपुत्र स. जीवन सिंघ, ३१. स. केसर सिंघ सुपुत्र स. मीहां सिंघ, ३२. स. करम सिंघ सुपुत्र स. हाकम सिंघ, ३३. स. खुशहाल सिंघ सुपुत्र स. बुद्ध सिंघ, ३४. स. गुजर सिंघ सुपुत्र स. झंडा सिंघ, ३५. स. गंगा सिंघ सुपुत्र स. काहन सिंघ, ३६. स. गोपाल सिंघ सुपुत्र स. हुकम सिंघ, ३७. स. गुरबखश सिंघ सुपुत्र स. चंदा सिंघ, ३८. स. गुलाब सिंघ सुपुत्र स. हीरा सिंघ, ३९. स. गंडा सिंघ सुपुत्र स. करम सिंघ, ४०. स. घनईआ सिंघ सुपुत्र स. सुंदर सिंघ, ४१. स. चरन सिंघ सुपुत्र स. गुरदित्त सिंघ, ४२. स. चेत सिंघ सुपुत्र स. जुआाला सिंघ, ४३. स. चंदा सिंघ सुपुत्र स. काहन सिंघ, ४४. स. चरन सिंघ सुपुत्र स. गोकल सिंघ, ४५. स. जुआाला सिंघ सुपुत्र स. केसर सिंघ, ४६. स. जीऊण सिंघ सुपुत्र स. गोकल सिंघ, ४७. स. जवंद सिंघ सुपुत्र स. आला सिंघ, ४८. स. जगत सिंघ, ४९. स. टहिल सिंघ सुपुत्र स. चंदा सिंघ, ५०. स. ठाकर सिंघ सुपुत्र स. इंदर सिंघ, ५१. स. ढेरा सिंघ सुपुत्र स. जैमल सिंघ, ५२. स. तेजा सिंघ सुपुत्र स. संमा सिंघ, ५३. स. दिआल सिंघ सुपुत्र स. देवा सिंघ, ५४. स. दल सिंघ सुपुत्र स. मुसद्दा सिंघ, ५५. स. दरबारा सिंघ सुपुत्र स. केहर सिंघ, ५६. स. दीवान सिंघ सुपुत्र स. हीरा सिंघ, ५७. स. दसौंधा सिंघ सुपुत्र स. हीरा सिंघ, ५८. स. दलीप सिंघ सुपुत्र स. करम सिंघ, ५९. स. धरम सिंघ सुपुत्र स. संत सिंघ, ६०. स. नराइण सिंघ सुपुत्र स. जवाहर सिंघ, ६१. स. नराइण सिंघ, ६२. स. नरैण सिंघ सुपुत्र स. पहु सिंघ, ६३. स. नंद सिंघ सुपुत्र स. भगवान सिंघ, ६४. स. पंजाब सिंघ सुपुत्र स. पहु सिंघ, ६५. स. बारा सिंघ सुपुत्र स. पाला सिंघ, ६६. स. बग्गा सिंघ सुपुत्र स. गंगा सिंघ, ६७. स. बूड़ सिंघ सुपुत्र स. मल्ल सिंघ, ६८. स. बेला सिंघ सुपुत्र स. मय्या सिंघ, ६९. स. बचित्तर सिंघ ग्रंथी सुपुत्र स. चंदा सिंघ, ७०. स. बचिंत सिंघ सुपुत्र स. सुंदर सिंघ, ७१. स. बंता सिंघ सुपुत्र स. भोला सिंघ, ७२. स. बुद्ध सिंघ सुपुत्र स. सुरजन सिंघ, ७३. स. भगवान सिंघ सुपुत्र स. लहिणा सिंघ, ७४. स. भाग सिंघ सुपुत्र स. अमीर सिंघ, ७५. स. मंगल सिंघ सुपुत्र स. रता सिंघ, ७६. स. मोता सिंघ सुपुत्र स. हरी सिंघ, ७७. स. मूला सिंघ सुपुत्र स. जीवन सिंघ, ७८. स. महिंगा सिंघ सुपुत्र स. झंडा सिंघ,

७९. स. राम सिंघ सुपुत्र स. झंडा सिंघ, ८०. स. रूड़ सिंघ सुपुत्र स. निहाल सिंघ, ८१. स. लछमण सिंघ सुपुत्र स. मिहर सिंघ, ८२. स. वरिआम सिंघ सुपुत्र स. दूला सिंघ, ८३. स. वरिआम सिंघ सुपुत्र स. भाग सिंघ, ८४. स. वरिआम सिंघ सुपुत्र स. बुलाका सिंघ, ८५. स. वरिआम सिंघ सुपुत्र स. बूटा सिंघ, ८६. स. वरिआम सिंघ सुपुत्र स. भगवान सिंघ।

इस शहीदी साके की ख़बर फैलते ही चारों तरफ़ हाहाकार मच गई। इस घटना के बारे में सरदार उत्तम सिंघ ने सम्बन्धित अधिकारियों को तार भेज कर सूचना दी। शाम तक कुछ अधिकारी घटना वाली जगह पर पहुँच गए। नजदीकी गाँवों से सिंघ भी काफिला बना कर गुरुद्वारा साहिब की तरफ रवाना हो गए। सरदार करतार सिंघ झब्बर भी अपने जत्थे सहित पहुँच गए। लगभग २२०० सिंघों का जत्था श्री ननकाणा साहिब की धरती पर पहुँच गया। कमिशनर सी. एम. किंग ने २१ अक्तूबर तक गुरुद्वारा साहिब का प्रबंध सिक्खों को सौंपने के लिए चाबियाँ लेकर देने का वायदा किया। जत्थेदार करतार सिंघ झब्बर की ज़िद और सिंघों के आक्रोश के आगे सरकार को झुकना पड़ा। उसी समय गुरुद्वारा साहिब की चाबियाँ और प्रबंध शिरोमणि गुरुद्वारा प्रबंधक कमेटी के उपाध्यक्ष सरदार हरबंस सिंघ अटारीवालों ने अपनी कमेटी के छ: अन्य सदस्यों सहित पंथक हाथों में लिया।

२३ फरवरी, १९२१ ई. को शहीद हुए सिंघों का सामूहिक दाह संस्कार किया गया। अंगीठे में पहले ४ शहीद सिंघों के पार्थिव शरीर रखे गए, जो पूर्ण थे। फिर अंदर वाली भट्ठियों में से ११९ खोपड़ियां और बाहर की भट्ठियों में से ७ खोपड़ियां अंगीठे पर सम्मान सहित रखी गईं। बिखरे हुए मांस के ३ टोकरे इकठ्ठा कर ऊपर रखे गए। लगभग १० टोकरे आग से झुलसी हुई छोटी-मोटी हड्डियों के इकठ्ठा हुए, जो साथ ही रख दिए गए। जपु जी साहिब के पाठ और भाई जोध सिंघ की तरफ से शहीदों के निमित्त वैरागमयी अरदास करने के बाद शाम को ७ बजे के करीब शहीदों का दाह संस्कार किया गया। इस समय लाहौर से प्रकाशित प्रसिद्ध अखबार 'केसरी' का प्रतिनिधि भी उपस्थित था, उसने लिखा है कि :—

''मैं सिक्ख बहादुरों की कुर्बानियों का ज़िक्र इतिहास में पढ़ा करता था। मुझे कई बार उनके इन्न-बिन्न ठीक न होने संबंधी शक पैदा होता, परन्तु इस दृश्य को देखकर मैंने महसूस किया है कि बहादुर सिक्खों के लिए जान दे देना एक खेल है। यदि परमेश्वर न करता, इस अवसर पर सिक्ख पुरुष और स्त्रियां इस चिता में छलांग लगा कर अपने शहीद भाइयों के साथ जा मिलते। मृत्यु का शब्द मुँह से निकाल देना बहुत आसान है, परन्तु जब मृत्यु सामने आए तो उसे ख़ुशी से गले लगाना बहुत कठिन है। श्री ननकाणा साहिब में मैंने अपनी आंखों से देखा कि हज़ारों की गिनती में सिक्ख मृत्यु का स्वागत कहने के लिए तैयार थे।''

बाबा करतार सिंघ (बेदी) द्वारा सिक्ख पंथ के साथ की गई गद्दारी का केस श्री अकाल तख़्त साहिब पर पेश हुआ तो उसे तनखाहिया (दोषी) करार दिया गया। उसे अपने पंथ के साथ की गई गद्दारी का एहसास हुआ तो उसने अपनी भूल माफ

करवाने के लिए शिरोमणि गुरुद्वारा प्रबंधक कमेटी को एक पत्र लिखा कि चाहे श्री ननकाणा साहिब के साके के साथ उसका कोई सम्बन्ध नहीं था, परन्तु समूची कौम उसे दोषी समझती है, इसलिए वह श्री अकाल तख़्त साहिब पर उपस्थित होकर क्षमा मांगना चाहता है। बाबा करतार सिंघ २३ मई, १९२४ ई. को श्री अकाल तख़्त साहिब पर पेश हुआ। बाबा करतार सिंघ ने विशाल जलसे में उपस्थित होकर जत्थेदार साहिब को लिखित इकरारनामा पेश किया, जिस पर लिखा था: —

श्री अकाल तख़्त साहिब की हजूरी में मैं प्रण करता हूँ कि तख़्त साहिब की तरफ से किया गया पाँच प्यारों का फ़ैसला मुझे स्वीकार होगा।

मैं प्रण करता हूँ कि पंथ की प्रतिनिधि जमात शिरोमणि गुरुद्वारा प्रबंधक कमेटी की विरोधता में कभी खड़ा नहीं होऊँगा।

२३-५-२४

(दस्तखत)
करतार सिंघ बेदी

इस समय जत्थेदार साहिब और पाँच प्यारे साहिबान ने विचार-विमर्श कर श्री अकाल तख़्त साहिब की तरफ से उसे अब तक की सबसे सख़्त तनख़्वाह लगाई। हुक्म सुनाया गया कि :—

''बाबा करतार सिंघ (बेदी) ने श्री ननकाणा साहिब के साके के समय साधुओं की एक कमेटी बना कर पंथ की विरोधता की, हरिद्वार जाकर सिक्ख पंथ के विरुद्ध तकरीर की और कौम के विरोधियों के साथ हमदर्दी प्रकट की, इसलिए वह दोषी है। उसे दंड लगाया जाता है कि वह एक तो श्री दरबार साहिब की परिक्रमा, घंटा घर और थड़ा साहिब तक झाड़ू लगाने की सेवा करे। श्री अमृतसर से नंगे पांव चल कर श्री ननकाणा साहिब जाये। वहाँ पहुंच कर पाँच श्री अखंड पाठ साहिब करवाए और १०, ००० रुपए शहीदी फंड में दे।''

देश भर के प्रमुख हिंदू, मुसलमान, सिक्ख नेताओं और अखबारों ने इस ज़ुल्म के विरुद्ध एकसुर होकर आवाज़ बुलंद कर माँग की कि महंत नारायण दास और उसके पालतू गुंडों के अलावा डी. सी. मिस्टर करी और कमिशनर मिस्टर किंग पर मुकद्दमा चलाया जाये, जिनके कारण इतना बड़ा साका घटित हुआ। इस केस में मिस्टर करी को तो छुट्टी दे दी गई, परंतु मिस्टर किंग पर कोई कार्यवाही करने की बजाय अंग्रेज़ सरकार की तरफ से उसे पंजाब सरकार का चीफ़ सेक्रेट्री नियुक्त कर दिया गया। ५ अप्रैल, १९२१ ई. को महंत नारायण दास और उसके सात आदमियों को अदालत द्वारा मौत की सज़ा दी गई और अन्य आठ को उम्र भर के लिए देश निकाला दे दिया गया। मिस्टर किंग ने महंत नारायण दास को फांसी से बचाने के लिए पंजाब सरकार के जासूसी विभाग के डी. आई. जी. मिस्टर डेविड पैट्री की सेवाएं भी प्राप्त की। मिस्टर डेविड पैट्री ने पहले भी बजबज घाट में कामागाटामारू जहाज़ के निहत्थे यात्रियों पर गोलियाँ चलाने में मदद की थी। अकालियों को गिरफ़्तार कर उन पर झूठे मुकदमे दर्ज करने शुरू कर दिए गए, ताकि मौके के गवाहों से अपने हक में बयान दर्ज करवाए जा सकें।

महंत नारायण दास की अपील पर ३ अप्रैल, १९२२ ई. को हाई कोर्ट ने उसकी मौत की सज़ा उम्र कैद में तबदील कर दी। उसके तीन

साथियों— रांझा, रिहाणा और हरी नाथ योगी को मौत की सज़ा तथा दो पठानों को उम्र कैद की सज़ा दी गई एवं बाकियों को रिहा कर दिया गया।

इस साके में शहीद हुए सिंघों के परिवारों को शिरोमणि गुरुद्वारा प्रबंधक कमेटी की तरफ से पेंशन या आवश्यक वित्तीय सहायता दी गई। शहीदों की दाह संस्कार वाली जगह पर शहीद गंज का निर्माण करवाया गया। इन शहीदों की याद में ही श्री अमृतसर में 'शहीद सिक्ख मिशनरी कालेज' खोला गया।

दूसरी तरफ़ महंत नारायण दास के मुकद्दमे में सीधा सरकारी हस्तक्षेप देख कर सिक्खों ने बाइकाट कर दिया। पुलिस ने धक्केशाही करते हुए लगभग १०० सिंघों पर डाका मारने, घर तोड़ने आदि दोष लगा कर गिरफ़्तार कर लिया। सरदार करतार सिंघ झब्बर अंग्रेज़ों की आँख में सबसे ज्यादा चुभता था, क्योंकि गुरुद्वारा साहिबान का प्रबंध पंथक हाथों में आने से सम्बन्धित उनका बहुत योगदान था। सरकार ने उन्हें साथियों सहित गिरफ़्तार कर लिया। पंजाब में अन्य स्थानों पर सिंघों को गुरुद्वारा साहिबान की तरफ जाने से रोका जाने लगा, जिस कारण सिक्खों में भारी आक्रोश उत्पन्न हुआ। सिक्खों के विरुद्ध मुकद्दमे दर्ज कर लिए गए। जे. ई. क्यू स्पेशल एडीशनल मेजिस्ट्रेट, लाहौर के पास सिक्खों को पेश किया जाता।

पहला मुकद्दमा जत्थेदार तेजा सिंघ भुच्चर आदि का पेश हुआ और उन पर डाका मारने का दोष लगा कर ५ साल की सख़्त कैद, ३ महीने कोठी बंद, २ साल कैद सख़्त घर कुल दंड सात साल भुगतने का आदेश हुआ। बाकियों को ३-३ या ४-४ साल की सख़्त कैद की सज़ा सुनाई गई।

दूसरा मुकद्दमा ११ अप्रैल, १९२१ ई. को पेश हुआ। इसमें सरदार लाहौरा सिंघ को ९ साल और अन्य तीन अकालियों को ६-६ साल तथा १६ अन्य को २-२ साल की सख़्त कैद की सज़ा सुनाई गई।

तीसरा केस सरदार करतार सिंघ झब्बर आदि के विरुद्ध पेश हुआ। इन पर गुरुद्वारा साहिबान में डाका मारने आदि की बहुत-सी धारायें लगा कर केस दर्ज किया गया था। इन्हें १८ साल की सख़्त कैद की सज़ा सुनाई गई। बाकी अकालियों को भी सख़्त सज़ा सुनाई गई।

पंथक नेताओं ने गुरुद्वारा साहिबान का प्रबंध तो अपने हाथों में ले लिया था, परन्तु उनके सामने अब मुख्य समस्या गुरुद्वारा साहिबान के नाम लगी करोड़ों रुपये की जायदाद को संभालना था, जिन पर महंतों ने कब्ज़ा किया हुआ था और वे इसे अपनी निजी जायदाद दिखा रहे थे। इस काम के लिए सरदार नारायण सिंघ बैरिस्टर (मीठे टिवाने वाले) को श्री ननकाणा साहिब गुरुद्वारा साहिब का प्रबंधक नियुक्त कर दिया गया। श्री ननकाणा साहिब स्टेट की ज़मीन २४ गाँवों में बिखरी पड़ी थी। इन जायदादों का प्रबंध प्राप्त करने के लिए कई प्रकार की कठिनाइयाँ थीं।

श्री ननकाणा साहिब के साके की ख़बर जब गाँवों में पहुँची थी तो सिक्खों ने श्री ननकाणा साहिब की ओर प्रस्थान किया। लाखों की संख्या में सिक्ख श्री ननकाणा साहिब की धरती पर इकट्ठा हो गए थे, जिनसे डरते स्थानीय लोग घर-घाट छोड़ कर इधर-उधर चले गए थे। कई मकानों के

तो ताले भी खुले हुए थे। कई घरों के अंदर भूखी-प्यासी भैंसें और गाय चीख रही थीं।

सरदार नारायण सिंघ मैनेजर सबसे पहले अपने साथ सरदार बूटा सिंघ चक्क नंबर २०४ सहायक मैनेजर को साथ लेकर नगर में गए। सुनसान पड़े मकानों की रखवाली का प्रबंध किया। जानवरों के लिए चारे और पानी का प्रबंध किया। फालतू पड़ी चीजें, ज़ेवर, बर्तन, पुस्तकें आदि उठवा कर दफ़्तर के निचले कमरों में रखवाईं और उन पर चिटें लगवा दीं कि कौन-सी चीज़ कहाँ से प्राप्त हुई है, ताकि इनके मालिक निशानी बता कर वापिस ले सकें। सरदार नारायण सिंघ की इस लोक-भलाई का नतीजा उलटा ही निकला। जब स्थानीय निवासी वापिस आने लगे तो वे सबसे पहले थाने में गुरुद्वारा कमेटी के विरुद्ध शिकायत दर्ज करवाते कि उनका सामान चोरी कर लिया गया है, जो गुरुद्वारा साहिब में पड़ा है। पुलिस हथकड़ियाँ लेकर पहुँच गई और गुरुद्वारा साहिब की तलाशी लेने के लिए कहने लगी। अभी कुछ दिन पहले ही तो सरादर करतार सिंघ झब्बर, सरदार तेजा सिंघ भुच्चर और सरदार उत्तम सिंघ कारख़ाने वाले की गिरफ़्तारी हुई थी। अब प्रतीत हो रहा था कि सरकार सरदार शाम सिंघ अटारी वाले के पड़पोते सरदार हरबंस सिंघ अटारी, प्रोफ़ेसर तेजा सिंघ और मैनेजर सरदार नारायण सिंघ को भी किसी न किसी बहाने गिरफ़्तार करके रहेगी। सरदार नारायण सिंघ ने एक चाल चली और पुलिस आफिसर से कहा कि वे लाहौर जाकर एस. पी. से हुक्म ले आएं और जब मर्ज़ी तलाशी लें। तब तक बाकी की पुलिस बाहर ताला लगा कर पहरा देती रहे। पुलिस आफिसर मान गया। सरदार नारायण सिंघ ने जत्थेदार वसावा सिंघ, उसके पुत्र और पत्नी को सारी स्कीम समझा दी कि अंधेरा होते ही दीवार फाड़ कर सारा सामान इधर-उधर कर दो और दीवारों को उसी तरह लेप देना। प्रातः काल होते ही जब पुलिस आफिसर हुक्म लेकर आया तो ताला खोला गया। कमरे के अंदर कुछ भी नहीं था। पुलिस आफिसर शर्मिंदा हो वापिस जाने लगा तो सरदार नारायण सिंघ ने पुलिस आफिसर को सब कुछ बता दिया कि उसे यह इसलिए करना पड़ा कि नेकी करते-करते उसे जेल जाना पड़ता।

शहीदी साके के बाद श्री ननकाणा साहिब की धरती पर इकठ्ठा हुए सिंघ घरों को वापिस लौटने के लिए तैयार नहीं थे। जहाँ सरकार इनसे परेशान थी, वहीं प्रबंधकों को भी बहुत कठिनाइयां पेश आ रही थीं। सरदार नारायण सिंघ की सलाह से सरकार ने लाहौर तक स्पेशल गाड़ियाँ चलानी मान ली और आगे रावलपिंडी तथा दिल्ली तक एक-एक गाड़ी रोज़ाना चलानी मान ली। जब यह गाड़ी स्टेशन पर आई तो यह मालगाड़ी बहुत गंदी थी। सिक्खों ने इसे अपना अपमान समझा और उस पर सवार होने से मना कर दिया। बाद में अफसरों की तरफ से क्षमा मांगने पर साफ़-सुथरी गाड़ियों का प्रबंध करने के पश्चात् कुछ दिनों में ही इतनी बड़ी भीड़ वापिस लौट गई। केवल ३-४ हज़ार सिंघों को वहाँ रख लिया गया, जो ज़रूरी थे।

अब सरदार नारायण सिंघ ने गुरुद्वारा साहिबान की जायदादों का प्रबंध संभालने के लिए स्कीम

बनाई। १०-१० के तैयार-बर-तैयार सिंघों के जत्थे बनाए गए। ये जत्थे गाँव में पहुंच कर सारे गाँव की घेराबंदी कर लेते और सति श्री अकाल के जयकारे बुलाने शुरू कर देते। इतने समय में सरदार नारायण सिंघ भी घोड़े पर सवार होकर पहुँच जाते और मध्यस्थ बन कर निपटारा करा देते। सभी ने अकालियों की टेढ़ी आँखें देखकर महंतों का साथ छोड़ दिया और सिंघों के साथ सहयोग करना मान लिया। हर गाँव में अनाज के कमरे भरे मिलते, जिसे नियत किये जत्थेदार के हवाले कर दिया जाता। इस तरह थोड़े समय में ही सारा काम पूरा कर लिया गया। सारा इकट्ठा किया अनाज श्री ननकाणा साहिब में मंगल सिंघ वसावा मल्ल आढ़ती की दुकान पर लाया गया। शाम से पहले सारा अनाज बेच कर कुल आमदन गुरुद्वारा साहिब के हिसाब में जमा करवा दी गई। सभी काश्तकार सरदार नारायण सिंघ के दफ़्तर में इकठ्ठा होकर आ गए। ज़मीन के ठेके को फिर आगे के लिए नीलाम कर दिया गया। लायलपुर वाले वकील सरदार इकबाल सिंघ ने यह काम तुरंत पूरा कर दिया। रात को पटवारी सरदार अमर सिंघ ने यह सारी कार्यवाही रोज़नामचा वाक्याती में दर्ज कर ली और किसी अन्य को पता भी नहीं लगने दिया। गाँवों में अमन-चैन रखने के लिए अकाली सिंघों का एक जत्था भी तैयार कर लिया गया।

बाहर की ज़मीनों का प्रबंध संभालने के बाद गुरुद्वारा साहिब की अंदरूनी जायदादों की तरफ ध्यान दिया गया। महंत जाते-जाते गुरुद्वारा साहिब के अंदर गुरु की सराय में एक कोने में बनी छ: कोठरियाँ मीहां सिंघ बकरियां वाले को दे गया था। उसने सामने चारदीवारी की हुई थी। एक तरफ़ तो उसकी बकरियां किसानों की फसलों का नुकसान करती थीं, दूसरी तरफ़ आए यात्रियों के ठहरने के लिए ये कोठरियाँ बहुत ज़रूरी थीं। मीहां सिंघ को कई बार समझाने की कोशिश की गई और इन कोठरियों के बदले और जगह देने की पेशकश भी की गई, परन्तु मीहां सिंघ न माना। अंत में सरदार नारायण सिंघ ने जत्थे वालों को सुधायी (सुधारने) करने के लिए कह दिया। नियत समय पर सरदार नारायण सिंघ बाहर आ खड़े हुए और जत्थे ने अपनी कार्यवाही शुरू कर दी। इतने समय में चौधरी हुसैन अली एस. डी. ओ. (इलाका मजिस्ट्रेट) भी वहाँ आ गया। सराय के अंदर से चीख-पुकार की आवाज़ें सुनाई देने लगी। एक सेवादार ने आकर बताया कि ''मीहां सिंघ को चाहटा छका रहे हैं।''

मैनेजर सरदार नारायण सिंघ ने चौधरी साहिब को बताया कि शिरोमणि गुरुद्वारा प्रबंधक कमेटी ने असहयोग का प्रस्ताव पारित कर पुलिस और अदालतों की सहायता लेने के सारे रास्ते बंद कर दिए हैं, इसलिए बिगड़े लोगों को सही रास्ते पर लाने के लिए यही रास्ता रह गया है। मैनेजर साहिब ने चौधरी साहिब को यह भी बताया कि चाहटा छकाना किसे कहते हैं। चाहटा छकाते समय आदमी को उलटा लैटा कर बड़े नंबर की देसी जूती से मरम्मत की जाती है। इस तरह दफ़ा-३२३ हिंद दंडावली का केस ही बनता है, अत: पुलिस इस अपराध के अधीन गिरफ़्तार नहीं कर सकती। चौधरी साहिब के मुँह से निकला, ''शाबाश गुरु गोबिंद सिंघ जी के फ़ौलादी शेरो!

जो न मरने से डरते हैं और न जेल जाने से घबराते हैं।''

मीहां सिंघ का एक दिन के चाहटे से ही बुरा हाल हो गया। वह खुद तो घर के अंदर ही छिपा रहा और बकरियां उसका रिश्तेदार लड़का लेकर बाहर चला गया। जिन जमींदारों के खेत बकरियां उजाड़ती थीं, उन्होंने लड़के को पीट दिया और बकरियों का दूध निकाल लिया। उसी रात मीहां सिंघ को फिर चाहटा छकाया गया तो उसके रिश्तेदार उसे चारपाई पर डाल कर बाल लीला की खुली हवेली में ले गए और वहाँ से थाने ले गए। थानेदार ने शिकायत लिख कर कह दिया कि अदालत में सीधा इस्तगासा डालो। अर्ज़ी नवीस ने शिकायत लिखने से मना कर दिया। मीहां सिंघ ठंडा पड़ गया और घर लौट आया। सिंघों ने रातो-रात चार दीवारी और कोठरियाँ गिरा कर सपाट कर दीं। मलबा उठवा कर जगह पर कब्ज़ा कर लिया।

गुरुद्वारा साहिब में जो तीन-चार हज़ार अकाली रहते थे, उन्हें काम पर लगाने के लिए सरदार नारायण सिंघ ने बहुत बड़े तालाब को पाटने, गुरुद्वारा साहिब और सराय से लेकर रेल की पटड़ी तक रास्ता सपाट करने, बाग़ लगाने आदि का सात-आठ महीने का लक्ष्य मान कर काम पर लगा दिया। दिन-रात काम होने लगा। गुरुद्वारा साहिब के पीछे एक बहुत बड़ी हवेली में ऊँठ वग़ैरा रहते थे, जिस कारण काफ़ी दूर तक बदबू जाती थी। जगह-जगह भट्टे बने हुए थे, जिस कारण चारों तरफ़ गड्ढे ही गड्ढे नज़र आते थे। सिंघों ने फावड़े-टोकरियों से और बैल, हल, कराहे से सब समतल कर दिया। सड़कों के किनारे केले और देसी आम के पौधे लगा दिए गए। सराय की कोठरियों की दीवारों को तोड़ कर खिड़कियां और रोशनदान बना कर हवादार बना दिया गया।

गुरुद्वारा साहिब के नाम महाराजा रणजीत सिंघ के समय से जागीर लगी हुई थी, जिसे लगातार महंत ही वसूल करता आ रहा था। वह खुद ही नंबरदार था। सरदार नारायण सिंघ को कुछ समय बाद नंबरदार बना दिया गया तो सरदार नारायण सिंघ ने जागीर की रकम हासिल करने के लिए पटवारी को मना लिया। इन्होंने ढाल-बाछ में मामले की रकम दर्ज करवा दी और सरकार का हिस्सा भी लिख दिया। मैनेजर साहिब ने मामला उगाह कर जागीर की रकम गुरुद्वारा साहिब के खाते में जमा करा दी और बाकी सरकार का हिस्सा सरकारी खजाने में भेज दिया। शेखूपुरा का डी. सी. सारी रकम सरकारी खजाने में रखना चाहता था, क्योंकि जागीर सिक्खों को देने संबंधी अभी कोई अदालती हुक्म नहीं हुआ था। उसने सरदार नारायण सिंघ को धमकी दी कि उस पर सरकारी पैसे खाने के दोष में मुकद्दमा चलाया जायेगा। सरदार नारायण सिंघ ने कहा कि मैंने गुरुद्वारा साहिब का पैसा सही खाते में जमा करवा दिया है। जब नया डी. सी. आया तो उसने मैनेजर को नोटिस दे दिया। पंजाब सरकार के गृह सचिव के साथ सरदार नारायण सिंघ ने सारी बात स्पष्ट कर दी, तो उसने खुश होकर कहा कि मैनेजर साहिब पर कोई मुकद्दमा न चलाया जाये। इसके बाद जागीर की रकम गुरुद्वारा साहिब को जाने लगी।

ज़मीनों के कब्ज़े लिए जा चुके थे। मुज़ारे भी सहयोगी बन कर काम करने लगे थे। फसलें भी

बेच ली गई थीं। महंत नारायण दास के एक चेले देवा दास ने सरदार नारायण सिंघ और उनके साथियों पर डी. सी. शेखूपुरा की कचहरी में दफ़ा– १४४–४५ जाबता फ़ौजदारी का केस कर दिया कि इनको उसके कब्ज़े में दख़ल देने का कोई हक नहीं। इनकी पक्की ज़मानत मंजूर की जाए। श्री ननकाणा साहिब के डाक बंगले में कचहरी लगा करती थी। महंत की तरफ से गणपत राय और अकालियों की तरफ से सरदार बहादुर महिताब सिंघ वकालत करते थे। महंत ने बहुत–से झूठे गवाह पेश कर दिए। सरदार नारायण सिंघ खुद अकेले ही गवाह के रूप में पेश हुए और साथ ही मुज़ारों की तरफ से लिखे पटे, पटवारी का रोज़नामचा वाक्यात नकल रजिस्टर के इंदराज की नकले, चिट्ठा माल, गोदाम में रखे अनाज का विवरण, ठेकेदारों के हिसाब की नकल और महंतों के चाबियों के गुच्छे आदि सब पेश कर दिए। सरदार बहादर महिताब सिंघ ने धड़ल्लेदार बहस की, जिसमें खालसा राज को हथियाते समय १८४९ ई. से लेकर उस समय तक सिक्खों के साथ हुई ज्यादतियों का विशेष तौर पर ज़िक्र किया। इंसाफ़ अकालियों के हक में था। अदालत ने फ़ैसला अकालियों के हक में कर दिया।

एक महंत मूली दास ने सरदार नारायण सिंघ और कुछ साथियों पर दफ़ा–१०७ जाबता फ़ौजदारी का मुकद्दमा कर दिया। एस. डी. एम. ने बयान भी लिखने आरंभ कर दिए और साथ ही सरदार नारायण सिंघ को भी ख़बर कर दी। सरदार नारायण सिंघ ने समय की नज़ाकत को देखते हुए तुरंत शिरोमणि गुरुद्वारा कमेटी को संदेश भेज दिया कि उनकी स्थानांतरण कर दिया जाये तो केस अपने आप ख़ारिज हो जायेगा या फिर उन्हें जेल जाने की आज्ञा दे दी जाये। शिरोमणि गुरुद्वारा प्रबंधक कमेटी की तरफ से इनके स्थानांतरण का आदेश आ गया। ये अपने परिवार को वहीं छोड़ कर अदालत में यह लिख कर दे आए कि उनका स्थानांतरण हो जाने के कारण श्री अमृतसर साहिब जा रहे हैं। अदालत के पास कोई अधिकार शेष न रहा कि वह श्री अमृतसर के निवासी पर श्री ननकाणा साहिब में केस चलाए। जब बहस हुई तो पता चला कि मैनेजर तो श्री अमृतसर में रहता है और लोगों के नाम–पते महंत बता न सका। केस ख़ारिज हो गया। सरदार नारायण सिंघ फिर श्री ननकाणा साहिब अपनी ड्यूटी पर आ गए।

सन् १९४७ ई. में देश का विभाजन हो गया और श्री ननकाणा साहिब पाकिस्तान में चला गया।

**स्रोत पुस्तकें :—**

१. डॉ. गंडा सिंघ, पंजाब
२. स. नरैण सिंघ, अकाली मोर्चे ते झब्बर
३. स. नरैण सिंघ, गुरुद्वारा प्रबंध सुधार लहर
४. प्रो. शेर सिंघ शेर, भरोसे दा भांबड़ बाल शहीद दरबारा सिंघ
५. डॉ. रतन सिंघ (जग्गी), सिक्ख पंथ विश्व कोश
६. स. रूप सिंघ, सिक्ख संग्राम दी दास्तान
७. स. अवतार सिंघ, मेरा धर्म मेरा इतिहास

# सिक्खों की गुरुद्वारों में कड़ी निष्ठा का प्रतीक श्री ननकाणा साहिब का शहीदी साका

*-डॉ. गुरचरन सिंघ**

सिक्ख मिसलों तथा मुगलों के अत्याचारी दौर में सिक्खों को बड़े कष्ट झेलने पड़े। उस समय गुरुद्वारा साहिबान की सेवा-संभाल उदासी सिक्खों ने की। सिक्ख राज के समय इन गुरुधामों के नाम बड़ी-बड़ी धन-संपदाएं और जागीरें लगा दी गईं। अंग्रेज़ राज में नहरों की खुदाई के कारण सिंचाई व्यवस्था में सुधार होने के कारण ज़मीनों में से आमदनी बहुत ज़्यादा होने लगी। एक कानून के अनुसार १८५९ ई. में महंतों को गुरुद्वारा साहिबान का मालिक बना दिया गया। धन-दौलत ने महंतों को अय्याश बना दिया। वे चरित्रहीन हो गए और गुरु-घरों में कुकर्म करने लगे। इन कुकर्मों को देख कर सिक्ख श्रद्धालुओं के मन को भारी ठेस पहुंची और वे अमर्यादित प्रबंध का विरोध करने लगे। अन्य गुरुद्वारा साहिबान की भांति सिक्ख जगत श्री ननकाणा साहिब के पवित्र स्थान का प्रबंध भी अपने हाथ में लेने की तैयारी करने लगा। उधर सरकार महंतों के समर्थन में आ गई। महंतों ने गुंडे, लुटेरे, अय्याश लोग रखने शुरू कर दिए और हथियारों के ज़ख़ीरे जमा कर लिए। महंत सिक्खों को आँखें दिखाने लगे। इस टकराव में से ही श्री ननकाणा साहिब का साका (ख़ूनी कांड) का जन्म हुआ।

श्री ननकाणा साहिब के महंत— किशन दास और उसके बाद नारायण दास अति दर्जे के शराबी व व्यभिचारी थे। गुरु के सच्चे सिक्खों ने नारायण दास को समझाने की पूरी कोशिश की। अगस्त १९१७ ई. में महंत ने जन्म-स्थान के निकट कंजरियों का नाच करवाया था। सिक्ख अखबारों ने भी इसके विरुद्ध लिखा था और सिंघ सभाओं ने गुरमते पारित कर सरकार से माँग की कि वह महंत को हटा दे। १९१८ ई. में एक रिटायर्ड सिंधी ए. ई. सी. की १३ वर्षीय लड़की का महंत के गुंडों ने सत भंग किया। उसी वर्ष इलाका जड़ां वाला की छ: स्त्रियों को उठा कर उनके साथ कुकर्म किया गया। इस तरह महंत और उसके गुंडों के उपद्रव बढ़ते गए। अक्तूबर १९२० ई. में गाँव धारोवाली, ज़िला शेखूपुरा में दीवान सजा। उसमें श्री ननकाणा साहिब के प्रबंध-सुधार के लिए गुरमता पारित किया गया। महंत ने सुधरने की बजाय अपने चार-पाँच सौ आदमियों के साथ

**२१/१४, आदर्श कालोनी, ज़ीरा, जिला फिरोजपुर— १४२०४७*

मुज़ाहरा किया। अकालियों को गुरुद्वारा जन्म-स्थान जाने से रोक दिया।

२३ जनवरी और ६ फरवरी १९२१ ई. को शिरोमणि गु. प्र. कमेटी के श्री अकाल तख़्त साहिब पर समागम हुए, जिनमें श्री ननकाणा साहिब के प्रबंध-सुधार के बारे में विचार हुई। महंत के नाम खुली चिट्ठी लिखी गई कि वह अपने आचरण और गुरुद्वारा साहिब के प्रबंध का सुधार करे। सरदार लछमण सिंघ, सरदार दलीप सिंघ, सरदार तेजा सिंघ समुंदरी, सरदार करतार सिंघ झब्बर और सरदार बखशीश सिंघ पर आधारित एक कमेटी बनाई गई कि वह श्री ननकाणा साहिब में दीवान एवं लंगर का प्रबंध करे।

सारे पंथ में श्री ननकाणा साहिब के प्रबंध-सुधार के लिए जोश था। सरदार लछमण सिंघ धारोवाली ने जत्था तैयार करना शुरू कर दिया। उधर महंत नारायण दास ने ७ फरवरी को अपने सभी समर्थकों की सभा बुलाई। सिंघों ने १९ फरवरी को श्री ननकाणा साहिब पहुँचने का फैसला किया। महंत ने बाबा करतार सिंघ की अध्यक्षता में लाहौर में कान्फ्रेंस बुलाई। वह सिंघों के कत्लेआम की तैयारी करने लगा। उसने १४ पीपे मिट्टी के तेल के और पचास मन लकड़ियां गुरुद्वारा जन्म-स्थान श्री ननकाणा साहिब में रखवा लीं। हालात की नज़ाकत देखते हुए 'अकाली' अख़बार के दफ़्तर लाहौर में एक सभा हुई, जिसमें फ़ैसला किया गया कि अंतिम दिन निश्चित किये बिना कोई जत्था श्री ननकाणा साहिब न भेजा जाये।

सरदार करतार सिंघ झब्बर और सरदार लछमण सिंघ धारोवाली अपने-अपने जत्थे लेकर श्री ननकाणा साहिब पहुँचना चाहते थे। सरदार करतार सिंघ झब्बर को तो संदेश पहुँचा कर रोक दिया गया, परन्तु सरदार लछमण सिंघ धारोवाली १९ फरवरी को जत्था लेकर अपने गाँव से चल पड़े। ये २० फरवरी की सुबह को २०० सिंघों सहित श्री ननकाणा साहिब पहुँच गए। सरदार लछमण सिंघ को रोकने के लिए सिंघ उस समय पहुँचे जब वे अरदास कर चुके थे। वे दर्शन करने के लिए गुरुद्वारा जन्म-स्थान श्री ननकाणा साहिब पहुँच गए। सरदार लछमण सिंघ श्री गुरु ग्रंथ साहिब की ताबे (हजूरी) बैठ गए।

महंत नारायण दास ने कत्लेआम की पूरी तैयारी की हुई थी। लाहौर कमिशनर द्वारा लिखे एक चर्चित पत्र में महंत को अपने कानूनी हक की रक्षा के लिए खुली छुट्टी मिल गई थी। इससे उसका व्यवहार हठीला हो गया। उसने गुरुद्वारा जन्म-स्थान श्री ननकाणा साहिब के दरवाज़े बंद कर दिए। नारायण दास के गुंडे तलवारों, कुल्हाड़ियों और बंदूकों से ज़ुल्म ढाने लगे। छत पर से भी गोलियाँ बरसाई गईं। हरी दास योगी, गुरमुख दास, लद्धो, रांझा, शेर दास

आदि कातिलों ने कहर बरसा दिया। सरदार लछमण सिंघ जत्थेदार, जो श्री गुरु ग्रंथ साहिब की ताबे बैठे थे, को शहीद कर दिया गया। कई गोलियाँ श्री गुरु ग्रंथ साहिब की बीड़ में भी लगी। गुरुद्वारा जन्म-स्थान श्री ननकाणा साहिब के दरवाजों को काटा गया। शहीद हुए तथा घायल एवं जिंदा सिंघों को खींच-खींच कर लकड़ियों के ढेर पर फेंक दिया गया और तेल डाल कर जला दिया गया। यह साका २० फरवरी, १९२१ ई. को घटित हुआ।

श्री ननकाणा साहिब के साके की ख़बर ने सारे पंथ और देश में हाहाकार मचा दी। सरदार उत्तम सिंघ कारख़ाने वाले ने इस साके से संबंधित पंथक जत्थेबंदियों और सरकारी अफसरों को तार भेजी। २० फरवरी को डिप्टी कमिशनर शेखूपुरा, श्री ननकाणा साहिब पहुँच गया। २१ फरवरी को सरदार हरबंस सिंघ अटारी, प्रो. जोध सिंघ, सरदार महिताब सिंघ, सरदार तेजा सिंघ समुंदरी, मास्टर तारा सिंघ और बाबा केहर सिंघ पट्टी भी पहुँच गए। सरदार करतार सिंघ झब्बर २२०० सिंघों के जत्थे सहित श्री ननकाणा साहिब पहुँच गए। सरकारी विरोध विफल हो गया। लाहौर का कमिशनर किंग भी पहुँच गया। उसने सरदार करतार सिंघ झब्बर और सरदार महिताब सिंघ को एक कमेटी बनाने के लिए कहा। उस कमेटी का प्रधान सरदार हरबंस सिंघ अटारी था। किंग ने गुरुद्वारे की चाबियाँ सरदार हरबंस सिंघ अटारी के हवाले कर दीं।

श्री ननकाणा साहिब के साके ने सिक्ख समाज, सिक्ख राजनीति और भारतीय राजनीति पर गहरा प्रभाव डाला। इस साके के बाद हज़ारों सिक्ख श्री ननकाणा साहिब के दर्शन के लिए चल पड़े। इसने सिक्खों में जोश की अग्नि प्रचंड कर दी। ५ अप्रैल, १९२१ ई. को सिक्खों ने शहीदी दिवस मनाया। शिरोमणि गुरुद्वारा प्रबंधक कमेटी ने सिक्खों से कहा कि वे १५ नवंबर, १९२१ ई. तक इस कत्लेआम के विरोध में काली दसतार सजाएं। उस समय से काली दसतार अकालियों का चिह्न बन गई।

महंत और उसके गुंडों को १२ अक्तूबर, १९२१ ई. को सेशन कोर्ट ने सज़ा दी। आठ लोगों को मौत की सज़ा और आठ को उम्र-कैद हुई। हाईकोर्ट में नारायण दास की मौत की सज़ा उम्र-कैद में तबदील कर दी गई और उसके तीन साथियों को फांसी दी गई। ३ मार्च, १९२२ ई. को बाकी लोग बरी कर दिए गए।

# श्री ननकाणा साहिब का ख़ूनी साका

*-जनाब बशीर मुहम्मद**

'ख़ूनी' शब्द ही ऐसा है जिसे सुन कर मानव के दिमाग़ में गंडासों, तलवारों, बंदूकों द्वारा बहे ख़ून की तस्वीर सामने आ जाती है, जिसे साधू-जन अच्छा नहीं समझते। अंग्रेज़ों की साजिश से पंजाब के सभी गुरुद्वारों पर महंतों का कब्जा हो गया। महंत कब्ज़ा करने के कुछ समय तक ही ठीक रहे, बाद में गुरु साहिब की हाज़िरी में कुरहितें करने से बाज न आए। अंग्रेज़ सरकार की शह पर गुरुद्वारा साहिब में शराब, मीट, मांस चलता। गुरुद्वारे नहीं, जैसे क्लब हाल हों। अकाली सिंघ, इन महंतों से गुरुद्वारे और अंग्रेज़ों से देश आज़ाद करवाने का संघर्ष चलाए बैठे थे। अंग्रेज़ अकालियों को ख़त्म करना चाहते थे। अकालियों का महंतों के साथ भी विरोध हो गया। अंग्रेज़ों ने दोगली नीति अपनाई। वे अकालियों को महंतों के माध्यम से ख़त्म करवाना चाहते थे। अंग्रेज पीछे से महंतों की मदद कर रहे थे। अकालियों ने महंतों से गुरु-घर आज़ाद करवाने के लिए जत्थे भेजने की तैयारी कर ली। श्री गुरु नानक देव जी के जन्म-स्थान श्री ननकाणा साहिब पर महंत नारायण दास का कब्ज़ा था। नारायण दास संगत की श्रद्धा का चढ़ावा खा-खाकर गुरु-घर के प्रति अपनी श्रद्धा गंवा चुका था। उसका मन बेईमान और लालचवश अपराधी हो गया। वह इस महान स्थान की पवित्रता को भूल गया। कभी समय था जब इस जगह से नाम-दान दिया जाता था। यहीं पर श्री गुरु नानक देव जी का जन्म हुआ। इस जगह पर आकर लोग अपना अच्छा भाग्य समझते थे।

जो २० फरवरी, १९२१ ई. को दुखांत हुआ उसे पढ़-सुन कर आह निकलती है। आज भी स्वाभिमानी शूरवीरों की आँखों में ख़ून उतर आता है। यह कुछ इस तरह हुआ कि महंत नारायण दास श्री ननकाणा साहिब गुरुद्वारा साहिब की मर्यादा को जानता हुआ भी मक्कार हो गया। अपने कारिंदों से शराब का दौर चलावा रहा था। अंग्रेज़ों का पिट्ठू था। जो हुक्म अंग्रेज़ आफिसर करते, वही करता। नारायण दास आराम कुर्सी पर धूप में बैठा था, तो बाहरी गेट से दो आदमी आए और महंत से कहने लगे, ''महंत जी! तैयार हो जाओ। कल इस गुरुद्वारे में से हमें निकालने के लिए अकालियों के जत्थें आ रहे हैं।'' महंत नारायण दास अपने साथी महंत गुरदित्त सिंघ को साथ लेकर अंग्रेज़ आफिसर के पास चला

**गांव-डाकखाना : झनेर, तहसील मलेरकोटला, जिला संगरूर (पंजाब)*

गया। जत्थों के आने के बारे में बताया। अंग्रेज़ सरकार खुश हुई। यही सब कुछ तो वह चाहती थी। सलाह-परामर्श कर, कुछ बिकाऊ पठान और भाड़े के टट्टू-बदमाश साथ लेकर महंत गुरदित्त सिंघ गुरुद्वारा साहिब चला गया। महंत नारायण दास अंग्रेज आफिसर के साथ और नीतियां बनाने लगा। अंग्रेज़ कह रहा था—"आज रात ५० लीटर मिट्टी का तेल, ५० क्विंटल सूखी लकड़ी और हथियारों का ज़ख़ीरा आपके पास पहुँच जाएगा।"

महंत नारायण दास गुरुद्वारा साहिब पहुँच गया। सभी बदमाश, करिन्दे और पठान कमरों में बंद थे ताकि किसी को पता न चल सके। सभी शराब पी रहे थे, मीट खा रहे थे। जब तक अंग्रेज सामान नहीं छोड़ कर गए, तब तक महंत नारायण दास चैन से नहीं बैठा। जब अंग्रेज़ आफिसर खच्चर गाड़ियों पर ५० पीपे तेल के, ५० क्विंटल लकड़ी, हथियार, गोली-सिक्का (कुछ तो महंत के पास पहले ही था) और अन्य बहुत-सी सामग्री छोड़ गया। महंत नारायण दास उत्साह में था। उसने सारा गोली-सिक्का और हथियार चेक किये। पापी-ज़ालिम पाप कमाने की तैयारियाँ कर चुका था।

उधर भाई लछमण सिंघ धारोवाली अपने जत्थे में सिंघों को शामिल कर रहे थे, क्योंकि श्री गुरु नानक देव जी के जन्म-स्थान को आज़ाद करवाने के लिए गुरुद्वारा श्री ननकाणा साहिब आना था। उनके साथ एक दस वर्षीय लड़का दरबारा सिंघ भी अपने बाप के साथ जत्थे में जाने की ज़िद कर रहा था। उसकी माँ उसे नाबालिग होने के कारण रोक रही थी, परन्तु वह नहीं रुका।

महंत नारायण दास के ज़ालिम गुंडे, बदमाश प्रातः काल उठते ही नशे का सेवन करने लगे। अफ़ीम तथा शराब महंत नारायण दास और महंत गुरदित्त सिंघ खुद बाँट रहे थे। ड्योढ़ी का बाहरी गेट खोल दिया। जिन्होंने शराब नहीं पी, वे दरबार साहिब में जाकर बैठ गए। महंत बाहरी गेट व दरबार साहिब के मध्य ऊँची जगह पर पालथी मार कर माला फेरने लगा। निश्चित कार्यक्रम के अनुसार सभी बदमाश अपने-अपने ठिकानों पर खड़े हो गए। आधे से ज्यादा छिप गए, जो मौके पर बाहर आने थे। गुरबाणी का पाठ शुरू हो गया। शक करने पर भी नहीं लगता था कि ख़ूनी कहर की तैयारी हो गई है। महंत नारायण दास इस कार्यवाही का नेतृत्व खुद कर रहा था। संगत आती-जाती रही। माहौल को बहुत चालाकी के साथ आम दिनों की तरह बनाया हुआ था। जो संगत अभिवादन कर लौटती उसे प्रसाद दिया जाता। चारों तरफ सन्नाटा था। आशंका की जरा भी गुंजाइश नहीं थी।

सुबह के ६ बजे पवित्र ड्योढ़ी पर लगभग दो सौ सिंघों का जत्था पैदल आकर रुका। यह जत्था भाई लछमण सिंघ धारोवाली के नेतृत्व में आया था। धर्मी योद्धा एक-एक कर श्री गुरु

नानक देव जी के दर पर शीश झुकाते, चरण-धूल मस्तक को लगाते, अपने धन्य भाग्य समझते हुए अंदर चले जाते। वाहिगुरु-वाहिगुरु करते हुए दरबार साहिब में श्री गुरु ग्रंथ साहिब के निकट इधर-उधर बैठ गए। जत्थेदार भाई लछमण सिंघ श्री गुरु ग्रंथ साहिब जी की ताबिया बैठ गए और कुछ समय गुरबाणी पढ़ने के बाद उन्होंने हुकमनामा लिया तथा सिंघों को इशारा किया कि कीर्तन करें। कुछ सिंघ कीर्तन करने लगे। बाकी सिंघ कीर्तन सुन कर आनंद ले रहे थे। सिंघ इतने लीन हो गए कि उनका श्वास-श्वास, रोम-रोम सिमरन के साथ बंधा हुआ था। उन्हें अपने आप का भी पता नहीं था। सुरत गुरु-शबद के साथ जुड़ी हुई थी। महंत के करिन्दे, जो दरबार साहिब के अंदर बैठे थे, वे धीरे-धीरे एक-एक कर बाहर आ गए। महंत ने ड्योढ़ी का बाहरी गेट बंद करवा दिया। जो गुंडे छिपे हुए थे वे भी सावधान हो गए। जब सभी ने पुज़ीशनें संभाल ली तो सभी की नज़र महंत की तरफ थी।

आखिर पापी नारायण दास ने इशारा किया और गोलियों की बौछार शुरू हो गई। जो सिंघ दरबार साहिब से बाहर थे, वे गोलियों से भून दिए। सिंघों के शरीर तड़पने लगे। शरीर खून से लथपथ हो गए। लाशों के ढेर लग गए। ख़ून की नदियां बह चलीं। पापी शहीद हुए सिंघों के भी बार-बार गोलियाँ मार रहे थे। जो सिंघ दरबार साहिब के अंदर थे, उन्होंने अंदर से ही दरवाजे बंद कर लिए। सिंघों की आँखों में ख़ून आ गया और एक सिंघ कहने लगा कि हम गेट खोल कर इनसे राईफलें छीन कर इन गुंडों का नामो-निशान मिटा देगें। जत्थेदार लछमण सिंघ ने कहा कि हम शांत रह कर ही शहीदी देंगे। इस महंत के बज्जर पापों को हमारा ख़ून ही साफ़ करेगा। जब बाहर के सारे सिंघ शहीद हो गए तो पापियों ने चाँदी का गेट थोड़ा-सा फायर करने के लिए तोड़ लिया। उस छेद में से गोलियाँ चलाने लगे। अंदर सिंघों के गोलियाँ लगने लगीं, उनके शरीर में से ख़ून निकलने लगा। बाहर एक कुंड बनाया था जिसमें फर्श धोने पर पानी आता था। आज यह लहू से भर गया और ऊपर से बहने लगा। सारा श्री ननकाणा साहिब गूँज उठा। महंत के हुक्म पर दरबार साहिब के सभी गेट तोड़ दिए। जो सिंघ बचे थे वे गेट तोड़ते ही गोलियों से भून दिए। दरबारा सिंघ को सिंघों ने अलमारी में बंद कर दिया था। भाई लछमण सिंघ, जो श्री गुरु ग्रंथ साहिब की ताबिया बैठे थे, उन्हें चार बदमाशों ने केश और टांगों से पकड़ कर महंत के आगे फेंक दिया। महंत ने हुक्म किया कि इन्हें गोली नहीं मारनी। इन्हें उल्टा लटका कर जंड के साथ बाँध दो। तेल डाल कर जिंदा जला दो। ज़ालिम बदमाशों ने भाई लछमण सिंघ को जंड के साथ उल्टा बाँध दिया। नीचे लकड़ियों पर तेल डाल कर आग लगा दी। वाहिगुरु!... धन्य सिक्खी!... भाई लछमण सिंघ को जिंदा

जलता देख कर नारायण दास उपहास कर रहा था— ''क्यों बनना है पंथ का मुखिया!'' महंत नारायण दास ने पाँच बड़ी भट्ठियां लकड़ियां चिन कर बना लीं। सभी भट्ठियों पर शरीर और शहीदों के अंग— बाज़ू, टांग आदि भट्ठियों में चिनवा दिए और आग लगा दी। गोलीबारी में महंत ने अपने दो-चार साथी भी मार लिए थे, जिनकी लाशें भी उसी तरह पड़ी थीं, क्योंकि ये लाशें अकालियों के सिर मढ़नी थीं ताकि केस महंत के सिर न पड़े। एक ज़ालिम ने अलमारी में से आवाज सुनी। जब खोल कर देखा तो उसमें लगभग १० वर्षीय बच्चा दरबारा सिंघ था, जिसे दो जालिम घसीट कर महंत के पास ले गए और पूछा कि इसका क्या करना है? महंत ने कहा, ''यह भी अकालियों का हिमायती है। इसे जल रही आग में जिंदा फेंक दो।''

बच्चा दरबारा सिंघ कह रहा था, ''जल्दी करो, ताकि मैं भी अपने जत्थे और अपने बाप के साथ जाऊँ।'' ज़ालिमों ने उसे भी तेज लपटों वाली जल रही आग में फेंक दिया। वह भी जल कर शहीद हो गया। दरिंदों ने कोई कसर बाकी न छोड़ी। २०० सिंघों का बेकसूर जत्था प्रभु का सिमरन करता हुआ श्री गुरु नानक साहिब जी के घर को अपने पवित्र ख़ून के साथ धो गया। बाद में ये शहादतें रंग लाईं। उन अकालियों की वजह से ही है कि आज सिक्ख और इनके गुरु-घर आज़ाद हैं।

गुरुद्वारा साहिब के अंदर से सारे सिंघ शहीद कर महंत और उसके गुंडे, बदमाश, पठान बाहर खेतों में, रेलवे लाईन पर सिक्खों को ढूँढते रहे। जो भी हाथ लगा शहीद कर दिया। महंत नारायण दास गुरुद्वारे के पीछे की तरफ़ चला गया। दूर से भाग कर आते दो सिंघ सरदार दलीप सिंघ और सरदार वरिआम सिंघ महंत के सामने आकर रुके। सरदार दलीप सिंघ कहने लगे— ''महंत! तू यह कहर बरसाना बंद कर दे। मैं तुझे अकालियों से क्षमा करवा दूँगा। तू मेरा दोस्त है। श्री गुरु नानक साहिब के घर का वास्ता है तुझे! तू यह पाप कहाँ उतारेगा?''

''दलीप सिंघां! लगता है तू भी अकालियों का हिमायती है!'' यह कह कर महंत ने सरदार दलीप सिंघ की छाती में गोली मार दी। सरदार वरिआम सिंघ उन्हें संभालने लगे तो महंत ने उन्हें भी गोली मार दी। दोनों काफ़ी समय तक अर्धमृत अवस्था में रहे। लहू से सभी कपड़े भीग गए। महंत के कहने पर अर्धमृत दोनों को निकट कुम्हार की भट्टी में फेंक दिया। इनकी भी राख बन गई और शहीद हो गए।

# साका श्री ननकाणा साहिब— एक नज़रिया

*-प्रो. दलजीत सिंघ**

इस धरती पर समय-समय पर कई नयी विचारधाराएं, फलसफे पनपे और समय की आँधी के साथ बिखर कर रह गए। जिन विचारधाराओं और फलसफों को कौमों ने अपने ख़ून से सींचा था वे स्थापित रहे और अभी तक जैसे के तैसे हैं। जिन कौमों में मृत्यु के प्रति लापरवाही और निडरता तथा अपने रहबर एवं फलसफे के प्रति पूर्ण समर्पण की भावना होती है, उनके अस्तित्व को कोई ताकत और जब्र ख़त्म नहीं कर सकता। संसार का इतिहास इस बात की गवाही भरता है कि जिन्होंने शीश कुर्बान कर दिए, अपना आप कुर्बान किया, वे कौमें जिंदा हैं और सांसारिक लोगों को नयी चेतना के साथ भरती हैं। सिक्खों की ख़ालसे के रूप में इस धरती पर स्थाप्ति अकाल पुरख की उस इच्छा की गवाही है जो दसम पातशाह के माध्यम से अपना मुकम्मल रूप धारण करती है। अकाल पुरख इस धरती को उन सत्यवादी पुरुषों के माध्यम से संवारना और सजाना चाहता है, जिन्होंने सत्य की गवाही भरनी है और उसकी स्थाप्ति के लिए अपना आप कुर्बान करने के लिए तत्पर रहना है। इस धरती-धरमसाल को पूर्ण पुरखों से सुशोभित करने के लिए ही पूर्ण अकालपुरख ने ख़ालसे के वजूद को साकार रूप प्रदान किया।

महान कौमें निश्चित रूप से परमात्मा की तरफ से सत्य की गवाही भरने के लिए समय-समय पर नए इम्तिहानों में से गुज़र कर सत्य के प्रति संसार को चेतना प्रदान करती हैं। बड़े होने का एहसास बड़े कारनामे कर हासिल होता है। बड़े संघर्ष महान आदर्श सृजित कर दुनिया का नेतृत्व करने के लिए प्रेरणा-स्रोत बनते हैं। सिक्ख इस धरती पर श्री गुरु नानक देव जी की आमद के साथ अस्तित्व में आकर दसम पातशाह की अमृत-आशीष सदका संत-सिपाही की नयी बुलंदी को छूता है और उसकी सुरक्षा के लिए टुकड़े-टुकड़े होने की वीरता के साथ पूर्णता को हासिल करता है। सिक्ख, पाँच-भूतक रूपी शरीर गुरु के नेतृत्व के बाद शबद-गुरु की सरप्रस्ती में इस लोक के सम्मुख होकर, नये मार्ग निर्मित कर अपने सच्चे पातशाह का सच्चा अभिवादन करता है।

सिक्ख जितनी शिद्दत के साथ बाणी पढ़ता, सेवा करता और अपने गृहस्थ जीवन को निभाता है, उतनी ही अधिक उमंग और इच्छा के साथ इसकी सुरक्षा और स्थाप्ति के लिए कुर्बान होने

**भूतपूर्व प्रोफेसर, शहीद सिक्ख मिशनरी कॉलेज, श्री अमृतसर— १४३००५*

के लिए भी तैयार रहता है। इतिहास इनकी इस दृढ़ता की गवाही सीना ठोक कर देता है। घटनाएँ, तथ्य, तारीख़ें, चरित्र इतने जीवंत और प्रमाणिक हैं कि ऐसा महसूस होता है जैसे यह सब हमारे सामने ही घटित हुआ हो। कोई कल्पना या कहानी नहीं बनाई गई, यथार्थ-चित्रण है उस वास्तविकता का जो घटी और अपने कभी न भूलने वाले निशान छोड़ गई, ताकि आने वाली नस्लें अपने बुज़ुर्गों से प्रेरणा लेकर सत्य की स्थाप्ति के लिए हर पक्ष से तत्पर रहें। श्री ननकाणा साहिब की वह पवित्र धरती, जहाँ दुनिया के सबसे महान, आधुनिक, आध्यात्मिक, राजनीतिक, आर्थिक, सामाजिक चिंतक ने कदम रखे, जिसकी आमद से ज़र्रा-ज़र्रा खुश, उत्साहित और प्रफुल्लित हुआ, मानवता ने सुख, सकून महसूस किया और सत्य की पहचान की। उस महान पुरख को श्री गुरु नानक देव जी नाम के साथ पुकारा और सत्कारा जाता है। जहाँ इस महान गुरु के चरण पड़े, वह धरती धन्य हो गई, वह घर धरमसाल हो गया। जिस हृदय ने इसकी आवाज़ सुनी वह हरि-मंदिर हो गया।

समय के गुज़रने के साथ-साथ धरमसालाओं पर काबिज़ इंसान बदकार, खूँखार और व्यभिचारी बन गए। गुरुधामों की कमाई अपने निजी स्वार्थ हेतु ख़र्चने लगे। बाबे (गुरु जी) का अदब, सत्कार भूलते गए। जब ये अपने अहंकार में अंधे हो गए तो गुरु के ख़ालसे ने अपने फर्ज़ निभाने के लिए सिर हथेली पर रखे। श्री ननकाणा साहिब का साका सिक्खों की वीरता और गुरु के प्रति वफादारी का वह पुख़्ता सबूत है जिसने युगों-युगों तक खालसयी कारगुज़ारी को जिंदा रखना है। यह उन अपवित्र पुरुषों की उदाहरणा भी देता रहेगा जिन्होंने मानवता को कलंकित ही नहीं किया, बल्कि मानव के अंदर पड़ी उस दरिन्दगी का पर्दाफाश भी किया है, जो धार्मिक लिबास के अंदर अपना आप छुपाए रखती है। यह इस बात की साक्षी भी बनती है कि पवित्र धर्म-स्थानों पर आडंबरपूर्ण भेस धारण कर काबिज़ हुए लोग फ़रिश्ता या पूर्ण पुरुष नहीं बन जाते। सच्चा गुरु अपने सात्विक रूप ख़ालसे के माध्यम से प्रकट होकर ऐसी वेशधारी और मलिन व्यवस्था को न केवल ललकारता है, बल्कि उसकी जड़ें उखाड़ फेंकने की ताकत भी रखता है।

जिस धरती ने श्री गुरु नानक देव जी की आमद के साथ अपने अस्तित्व को दुनिया के सामने पूजनीय पवित्र धाम रूप में पेश किया, जहाँ से संसार को शान्ति, प्रेम, भाईचारे और आध्यात्मिक उन्नति की रौशनी मिली, आज वही धरती अपने साथ एक अन्य ऐतिहासिक पृष्ठ जोड़ने के लिए तैयार हुई प्रतीत होती है। ऐयाश महंत नारायण दास कुछ हमख़्याली और हमप्याली चापलूसों के साथ मिल कर समय की हुकूमत की उकसाहट में खालसयी शान को ललकारता है। महंत के अहंकार को तोड़ने के लिए और श्री ननकाणा साहिब को ऐसे अहंकारी

से आज़ाद करवाने के लिए गाँव धारोवाली में एक दीवान सजाया गया। महंत को अपना प्रबंध और कर्माचार सुधारने के लिए प्रस्ताव पारित किया गया। जब महंत को इस बारे में पता चला तो उसने अपने सुधार की बजाय सिक्खों को ही सबक सिखाने की ठान ली और इसकी तैयारी आरंभ कर दी। श्री ननकाणा साहिब की पवित्र सीमा में हथियार, तेल और ज़रायमपेशा आदमी (पेशेवर बदमाश) एकत्रित किये और इस स्थान की मोर्चाबन्दी कर जंगी किले का रूप दे दिया। अपने लोगों को यह ख़ास हिदायत दी कि कोई जिंदा न बचे।

२० फरवरी, १९२१ ई. को भाई लछमण सिंघ लगभग १५० सिंघों का जत्था लेकर शांतिपूर्ण और गुरु-अदब के साथ दर्शनी ड्योढ़ी से अंदर दाख़िल हुए। भाई लछमण सिंघ श्री गुरु ग्रंथ साहिब की ताबिया बैठ गए और बाकी सिंघ दरबार साहिब के हाल में बैठ कर शबद पढ़ने में मग्न हो गए। वहाँ से डेरे के महंत और अन्य आदमी खिसक गए। इतने में छत पर बने मोर्चों में से गोलियों की बौछार शुरू हो गई। गोलियां लगने से कई सिंघ शहीद हो गए। तड़पते ज़ख़्मी सिंघों को छत से उतर कर महंत के गुंडों ने छवियों, तलवारों, गंडासों से मारना-काटना शुरू कर दिया। जब भीतर वाले सिंघ शहीद कर दिए गए तो महंत, जो घोड़े पर सवार, मुँह पर कपड़ा लपेटे हुए उनका नेतृत्व कर रहा था, गुरुद्वारे के गेट से बाहर आ गया और बाहर से आने वाले सिक्खों को मरवाने लगा। भाई दलीप सिंघ के वहाँ पहुँचने पर खुद नारायण दास ने उसे गोली मारी और उनके साथी स. वरिआम सिंघ को उसके गुंडों ने चीर डाला। सभी लाशों को तीन ढेरों में इकट्ठा कर मिट्टी का तेल डाल कर आग लगाई गई। भाई लछमण सिंघ को जंड के साथ बाँध कर, तेल डाल कर, आग लगा कर शहीद कर दिया गया।

इतिहास का लहू से भीगा यह पृष्ठ बीते समय की उस ताज़ा दास्तान के साथ रू-ब-रू करवाता है जो आस्था और अहंकार की आपसी टक्कर में से धैर्य की जीत की गवाही भरती हुई अहिंसा की वह बेमिसाल परिभाषा सृजित करती है, जिसकी बराबरी कोई अन्य अहिंसात्मक क्रांति नहीं कर सकती। कौम के लासानी इतिहास को जिंदा रखने के लिए राष्ट्रीय जज़्बे वाली जवानी ने भविष्य में अभी अपने और भी कई फ़र्ज़ निभाने हैं। शायद इसीलिए कौम की शिरोमणि संस्था ने श्री गुरु रामदास जी सच्चे पातशाह की पवित्र नगरी में शहीद स्मारक रूप में 'शहीद सिक्ख मिशनरी कालेज' स्थापित किया है।

# साका श्री ननकाणा साहिब के शहीद : भाई लछमण सिंघ धारोवाली

- *बीबी हरप्रीत कौर**

उदासी संप्रदाय का सिक्ख धर्म में महत्वपूर्ण स्थान रहा है। इस संप्रदाय ने गुरुद्वारा साहिबान की सेवा-संभाल में अहम भूमिका निभाई। कुछ उदासी गुरुद्वारा साहिबान के प्रमुख बन गए और अपने आपको महंत कहलवाने लगे। महाराजा रणजीत सिंघ द्वारा गुरुद्वारा साहिबान के नाम बड़ी-बड़ी कर-मुक्त जागीरें लगाई गईं। धीरे-धीरे इन महंतों ने गुरुद्वारा साहिबान की संपत्ति को अपनी निजी जायदाद समझना शुरू कर दिया और विलासता एवं चरित्रहीनता वाला जीवन जीने लगे। इस तरह महंत गुरुद्वारा साहिबान पर पूरी तरह से काबिज़ हो गए। सिक्खों द्वारा अपने धार्मिक स्थानों को महंतों से छुड़ाने के लिए गुरुद्वारा प्रबंध सुधार लहर चलाई गई, जिसमें अनेक सिंघों ने शहादत प्राप्त की। इस लहर में शहीद होने वालों में भाई लछमण सिंघ धारोवाली भी एक थे।

भाई लछमण सिंघ का जन्म १६ भादों, १८८५ ई. को गाँव धारोवाली ज़िला गुरदासपुर में हुआ। इनके पिता का नाम भाई मिहर सिंघ और माता का नाम हर कौर था। इनके चार भाई और एक बहन थी जिसका नाम भी लछमण कौर था। इनके पिता महाराजा नौनिहाल सिंघ की फ़ौज में नौकरी करते थे और फारसी के अच्छे ज्ञाता थे। ये अपनी ईमानदारी के कारण थानेदार के पद पर पहुँच गए। इनको बार क्षेत्र ज़िला शेखूपुरा में छ: मुरब्बे ज़मीन मिली। ये १८९२ ई. में धारोवाली चक्क नं. ३३ में आ गए। यहाँ आते ही इन्होंने अपना घर बनाने से पहले गुरुद्वारा साहिब बनाया। इस तरह भाई लछमण सिंघ को गुरमत की शिक्षा विरासत में प्राप्त हुई।

भाई लछमण सिंघ संतों-महापुरुषों की संगत करने के शौकीन थे। इन्होंने गुरमुखी की पढ़ाई संत अरजन सिंघ से प्राप्त की। गुरमुखी सीखने के बाद ये श्री गुरु ग्रंथ साहिब का पाठ और गुरमुखी की किताबें पढ़ने लगे। इन्हें किताबें पढ़ने का शौक इतना ज़्यादा था कि इन्होंने बहुत-सी पुस्तकें खरीदीं। ये स्वभाव के इतने निडर थे कि साँप, चूहे आदि आराम से हाथ में पकड़ लिया करते थे। इसके अलावा इन्हें कुश्ती करने का भी बड़ा शौक था। ये बेटियों का बहुत सम्मान करते थे। इनका शरीर स्वस्थ और ऋष्ट-पुष्ट था। इनका भार दो मन पैंतीस सेर और कद पूरा छ: फुट था। शरीर तगड़ा होने के कारण इनकी ख़ुराक भी अच्छी थी।

युवावस्था में इनका विवाह भाई बुद्ध सिंघ की सुपुत्री बीबी इंदर कौर के साथ १९०१ ई. में हुआ। १९०७ ई. में इनके घर एक लड़के का जन्म हुआ। इन्होंने लड़के का नाम हरबंस सिंघ रखा। आठ महीने की उम्र में ही उसकी मृत्यु हो गई। हरबंस

**वरिष्ठ शोध छात्रा, गुरु नानक अध्ययन विभाग, गुरु नानक देव यूनिवर्सिटी, श्री अमृतसर। फोन : ९६४६७-८५९९८*

सिंघ की मृत्यु के बाद इनके घर किसी दूसरे बच्चे का जन्म नहीं हुआ। इन्होंने व्यवसाय के तौर पर बजाजी का काम तथा घोड़ों और ऊँठों का व्यापार किया, परन्तु ज़्यादा सफलता नहीं मिली। इसके बाद गाँवों में से कपास खरीदनी शुरू की। इस काम से इन्हें जो आमदनी होती, वह धार्मिक कार्यों में ख़र्च कर देते। १९१० ई. में इन्होंने तरनतारन के खालसा प्रचारक विद्यालय में दाख़िला लिया और पूरे दो साल पढ़ाई कर अपने गाँव वापिस आए। गुरमत प्रचार की लगन होने के कारण इन्होंने खालसा प्राथमिक स्कूल का प्रभार अपने हाथ में लेकर प्राथमिक से माध्यमिक तक पदोन्नत करवा दिया। इन्होंने स्कूल के काम को निरंतर चलाने के लिए एवं वित्तीय परेशानी को दूर करने के लिए अपनी ज़मीन गिरवी रखने से भी गुरेज़ नहीं किया। इसके इलावा उन्होंने लड़कियों के लिए खालसा बालिका यतीमखाना खोला। तथाकथित उस समय अछूत महिलाओं के साथ भेदभाव किया जाता था, परन्तु इन्होंने अपने आश्रम में बिना किसी भेदभाव के महिलाओं को दाख़िल किया। इस आश्रम को चलाने के लिए भी इन्हें सवा मुरब्बा ज़मीन गिरवी रखनी पड़ी। इस आश्रम के अच्छे प्रबंध के कारण इनकी दूर-दूर तक प्रसिद्धि फैल गई। इसी कारण ५ मार्च, १९१८ ई. को इन्हें लाहौर में कमिशनर साहिब द्वारा आयोजित दरबार में सरकारी कर्मचारियों की तरफ से दावत की चिट्ठी आई। इसके अलावा इन्होंने चौथी सिक्ख महिला कान्फ्रेंस भी करवाई। नवंबर १९२० ई. में इन्होंने अपने इलाके की तरफ से श्री ननकाणा साहिब में भारी दीवान सजाया, जिसमें गुरुद्वारा साहिब के प्रबंध को सुधारने के लिए प्रचार किया। १९२० ई. में सावन महीने की अमावस को तरनतारन के श्री दरबार साहिब में महिलाओं के जत्थे द्वारा कीर्तन करने की इच्छा भी भाई लछमण सिंघ के यत्न से पूरी हुई, क्योंकि पुजारी इस बात के लिए सहमत नहीं थे। इस घटना के बाद ये गुरुद्वारा प्रबंध सुधार लहर में जुट गए।

२६ जनवरी, १९२१ ई. को तरनतारन के गुरुद्वारा साहिब के कब्ज़े के समय हुए दीवान में इन्होंने श्री ननकाणा साहिब के महंतों के कुकर्मों के बारे में संगत को बताया। इसके अलावा इन्होंने गुरुद्वारा जन्म-स्थान श्री ननकाणा साहिब की महंतों के हाथों आज़ादी के लिए अरदास की।

शिरोमणि गुरुद्वारा प्रबंधक कमेटी की तरफ से श्री ननकाणा साहिब के गुरुद्वारा साहिब के प्रबंध की कुरीतियों को दूर करने के लिए ४, ५ और ६ मार्च को करवाए जा रहे भारी दीवान के प्रबंध की ड्यूटी भाई तेजा सिंघ समुंदरी, भाई लछमण सिंघ धारोवाली और भाई करतार सिंघ झब्बर की लगाई। भाई लछमण सिंघ ने श्री हरिमंदर साहिब में खड़े होकर श्री गुरु रामदास जी के चरणों में अपनी शहादत की अरदास की। इससे पता चलता है कि इनका गुरु के साथ अति स्नेह था और गुरु साहिब की बेअदबी को रोकने के लिए ये अपनी जान कुर्बान करने के लिए हर समय तैयार रहते थे।

महंत नारायण दास ने १४ फरवरी को अपने सलाहकारों की सभा में यह प्रस्ताव पारित किया कि जब ५ मार्च को सिक्ख पंथ इकट्ठा हो तो सिक्ख नेताओं को गुरुद्वारा जन्म-स्थान में बुला

कर कत्ल कर दिया जाए। उसने ४०० के करीब भाड़े के बदमाश इकट्ठा कर लिए और उन्हें तलवारों, लाठियों, छवियों से लैस कर दिया। इसके अलावा पिस्तौल की गोलियाँ भी बड़ी संख्या में खरीद लीं।

महंत नारायण दास और महंत कृपा राम ने १९-२० फरवरी को लाहौर में रखी कान्फ्रेंस में शामिल होने के लिए लाखों की संख्या में इश्तिहार छपवाए। सिंघों ने भी यह फ़ैसला किया कि १९ फरवरी को चल कर २० फरवरी की सुबह को गुरुद्वारा साहिब का प्रबंध पंथक हाथों में लिया जा सकता है, क्योंकि उस समय महंत लाहौर कान्फ्रेंस में व्यस्त होगा। महंत नारायण दास को भी सिंघों द्वारा बनाई योजना का पता चल चुका था, इसलिए महंत ने भी पूरी तैयारी की हुई थी। महंत की कातिलाना योजना का पता चलने पर अकाली नेताओं ने जत्थे को ४ मार्च, १९२१ ई. से पहले श्री ननकाणा साहिब जाने से रोकने की कोशिश की। भाई लछमण सिंघ अपने कुछ साथियों सहित १९ फरवरी, १९२१ ई. की शाम को श्री ननकाणा साहिब के लिए रवाना हुए। यह जत्था २० फरवरी, १९२१ ई. की सुबह गुरुद्वारा जन्म-स्थान से आधा मील दूर था, तो भाई लछमण सिंघ को भाई दलीप सिंघ का संदेश मिला कि शिरोमणि गुरुद्वारा प्रबंधक कमेटी की हिदायत के अनुसार वे गुरुद्वारा जन्म-स्थान की तरफ आगे न बढ़ें। इससे भाई लछमण सिंघ सहमत न हुए। इन्होंने गुरुद्वारा साहिब के दर्शन करने की प्रतिज्ञा दोहराई। इस तरह ये प्रात: काल ६ बजे के करीब अपना जत्था लेकर गुरुद्वारा साहिब में दाख़िल हो गए। भाई लछमण सिंघ श्री गुरु ग्रंथ साहिब की ताबिया में बैठ गए। उधर महंत के बदमाशों ने सिंघों पर वार करने शुरू कर दिए। शांतमयी सिंघों पर गोलियों, छवियों और गंडासों से हमले किये गए।

ताबिया में बैठे भाई लछमण सिंघ पर भी गोलियाँ चलाई गईं, परन्तु गोलियाँ लगने के बावजूद भी ये दृढ़ता के साथ ताबिया में बैठे रहे। इस दौरान श्री गुरु ग्रंथ साहिब की बीड़ पर भी गोलियाँ लगीं। इनकी छाती लहू-लुहान हो गई। इन्हें ज़ख़्मी हालत में इन पर मिट्टी का तेल डाल कर जंड के वृक्ष से बांधकर नीचे आग लगा दी। भाई लछमण सिंघ की शहादत २० फरवरी, १९२१ ई. को हुई। भाई लछमण सिंघ तथा अनेक सिंघों की शहादत ने गुरुद्वारा श्री ननकाणा साहिब को महंतों के हाथों आज़ाद करवाया।

**सहायक पुस्तकें:**

१. डॉ. गंडा सिंघ, पंजाब, पंजाबी साहित्य अकादमी, लुधियाना, १९६२.

२. डॉ. रतन सिंघ (जग्गी), सिक्ख पंथ विश्वकोश, भाग दूसरा, गुर रत्न पब्लिशर्स, पटियाला, २००५.

३. गुरबखश सिंघ 'शमशेर' झुबालिया, शहीदी जीवन, धर्म प्रचार कमेटी, शिरोमणि गुरुद्वारा प्रबंधक कमेटी, श्री अमृतसर, २००६.

४. करतार सिंघ झब्बर, अकाली मोर्चे ते झब्बर, (संपा.), नरैण सिंघ, नेशनल बुक शॉप, दिल्ली, १९६७.

५. ज्ञानी प्रताप सिंघ, अकाली लहर, खालसा ब्रादर्स, बाज़ार माई सेवां सेवें, श्री अमृतसर, १९८३.

६. डॉ. महिंदर सिंघ, अकाली लहर, (अनु.) डॉ. करनजीत सिंघ, नेशनल बुक ट्रस्ट, इंडिया, २००९, पृष्ठ- २१.

# भगति रते से ऊतमा

-डॉ. परमजीत कौर*

*सभु मोहु माइआ सरीरु हरि कीआ विचि देही मानुख भगति कराई ॥* (पन्ना ७३५)

विकारों के विष से पूर्ण संसार-समुद्र को पार करने के लिए प्रभु की भक्ति मानों जहाज है। भक्ति के बिना मन स्थिर नहीं होता, दुविधा-ग्रस्त रहता है तथा भटकता रहता है :

*विणु भगती घरि वासु न होवी सुणिअहु लोक सबाए ॥* (पन्ना ६८९)

परमात्मा की भक्ति से मन निर्मल हो जाता है, दुख दूर हो जाते हैं तथा मनचाहा फल (मोक्ष) प्राप्त हो जाता है :

*हरि की भगति करहु मनु लाइ ॥*
*मनि बंछत नानक फल पाइ ॥. . .*
*गुर की मति तूं लेहि इआने ॥*
*भगति बिना बहु डूबे सिआने ॥*
*हरि की भगति करहु मन मीत ॥*
*निरमल होइ तुम्हारो चीत ॥* (पन्ना २८८)

जो मनुष्य प्रभु की भक्ति के रंग में रंगे जाते हैं वही श्रेष्ठ हैं, उच्च जाति वाले हैं। ऐसे भक्त ही प्रभु के दर पर शोभा पाते हैं :

*भगति रते से ऊतमा जति पति सबदे होइ ॥*
*बिनु नावै सभ नीच जाति है बिसटा का कीड़ा होइ ॥* (पन्ना ४२६)

परमात्मा की प्राप्ति का सबसे उत्तम साधन भक्ति माना गया है। श्री गुरु अरजन देव जी समझाते हैं कि परमात्मा को भुला कर कोई योग करने में, कोई भोग में कोई ज्ञान-चर्चा में लगा हुआ है। किसी को समाधियां पसंद हैं। कोई देवी-देवता को वश में करने के लिए जप, तप, देव-पूजा, हवन आदि कर रहा है। कोई धूनियाँ तपा रहा है, तो कोई रमता साधू बना हुआ है। किसी की तीर्थ-स्नान में रुचि है, मगर परमात्मा भक्ति-पथ को ही प्रेम करने वाला है :

*सभहू को रसु हरि हो ॥१ ॥ रहाउ ॥*
*काहू जोग काहू भोग काहू गिआन काहू धिआन ॥*
*काहू हो डंड धरि हो ॥१ ॥*
*काहू जाप काहू ताप काहू पूजा होम नेम ॥*
*काहू हो गउनु करि हो ॥२ ॥*
*काहू तीर काहू नीर काहू बेद बीचार ॥*
*नानका भगति प्रिअ हो ॥* (पन्ना २१३)

गुरमत में भक्ति से रहित ज्ञान को स्वीकार नहीं किया गया। सतिगुरु से प्रेम जरूरी है, जो भक्ति से प्राप्त होता है। सतिगुरु से प्रेम करने से ही वह ज्ञान प्राप्त होता है जो परमात्मा के साथ जोड़ता है। श्री गुरु अमरदास जी के मत में वही उत्तम भक्ति है जिससे प्रभु के साथ प्रेम बना रहे। ऐसी भक्ति गुरु

*६२०, गली नं. १, छोटी लाईन, संतपुरा, यमुनानगर (हरियाणा)— १३५००१, फोन : ९८१२३-५८१८६

की सेवा के बिना प्राप्त नहीं होती :

*से भगत से ततु गिआनी जिन कउ हुकमु मनाए ॥ ६ ॥*
*एहा भगति सचे सिउ लिव लागै बिनु सेवा भगति न होई ॥*
*जीवतु मरै ता सबदु बीचारै ता सचु पावै कोई ॥*
*(पन्ना ५०६)*

भक्ति क्या है तथा कैसे प्राप्त की जा सकती है ? 'भक्ति' शब्द 'भज' धातु से बना है, जिसका अर्थ है— बांटना, सेवा करना तथा सिमरन करना। श्रम (किरत) करना, सिमरन करना तथा बांट कर खाना ही भक्ति है। यह सतिगुरु के उपदेश से पता चलता है।

भक्ति नौ प्रकार की मानी गयी है। श्री गुरु अरजन देव जी ने भक्ति के नौ प्रकारों का जिक्र किया है :

*भगति नवै परकारा ॥ (पन्ना ७१)*

ये नौ प्रकार हैं— श्रवण, कीर्तन, सिमरन, चरण-सेवा, अर्चना, वंदना, सख्य-भाव, दासनदास-भाव तथा स्वत्व-अर्पण (अपना आप कुर्बान करना)।

**१. श्रवण :—** परमात्मा के गुणगान को गुरबाणी द्वारा सुनना भक्ति का एक साधारण तथा प्रचलित तरीका है। परमात्मा के गुणों को सुनने से मन की मैल दूर हो जाती है, दुख, रोग, संताप मिट जाते हैं :

*— दूख रोग संताप उतरे सुणी सची बाणी ॥*
*(पन्ना ९२२)*
*— हरि हरि कथा सुनहु इक निमख पल सभि किलविख पाप लहि जानी ॥ (पन्ना ६६७)*

श्री गुरु अरजन देव जी का कथन है कि हे प्रीतम ! मुझे करोड़ कान दो, ताकि मैं अविनाशी प्रभु के गुणों को सुन सकूं :

*कोटि करन दीजहि प्रभ प्रीतम*
*हरि गुण सुणीअहि अबिनासी राम ॥*
*सुणि सुणि इहु मनु निरमलु होवै*
*कटीऐ काल की फासी राम ॥ (पन्ना ७८१)*

नाम को हृदय में बसाने के लिए श्रवण पहला चरण है। श्री गुरु अरजन देव जी के कथनानुसार जो मनुष्य परमात्मा के नाम का जिह्वा से उच्चारण करता है तथा कानों से सुनता है वह संसार-समुद्र से पार हो जाता है :

*रसना उचरै हरि स्रवणी सुणै सो उधरै मिता ॥*
*(पन्ना ३२२)*

**२. कीर्तन :—** प्रभु के गुणों का कथन करना, गायन करना कीर्तन कहलाता है। कलियुग में प्रभु के गुण-कीर्तन से विकारों के समुद्र से बचा जा सकता है। जहां कीर्तन होता है वहां परमात्मा का निवास होता है। वह स्थान बैकुण्ठ बन जाता है:

*तहा बैकुंठु जह कीरतनु तेरा तूं आपे सरधा लाइहि ॥ (पन्ना ७४९)*

गुरु साहिबान ने रात-दिन, उठते-बैठते प्रभु के गुण-कीर्तन का आदेश दिया है :

*दिनसु रैनि हरि कीरतनु गाईऐ ॥*
*सो जनु जम की वाट न पाईऐ ॥ (पन्ना ३८६)*

साधसंगति में मिलकर किया गया गुण-

कीर्तन अधिक फलदायक होता है :

*साधसंगि हरि कीरतनु गाईऐ ॥*

*इहु असथानु गुरू ते पाईऐ ॥* (पन्ना ३८५)

गुरु-दर पर परमात्मा का गुण-कीर्तन सुनना चाहिए :

*गुर दुआरै हरि कीरतनु सुणीऐ ॥*

*सतिगुरु भेटि हरि जसु मुखि भणीऐ ॥*

*कलि कलेस मिटाए सतिगुरु*

*हरि दरगह देवै मानां हे ॥* (पन्ना १०७५)

**३. सिमरन :—** अगम अगोचर, सर्वव्यापक परमात्मा को प्रेम तथा श्रद्धापूर्वक हर समय स्मृति में रखना, मन, वचन, कर्म से आठ-पहर याद रखना ही सिमरन है। गुरबाणी द्वारा परमात्मा का गुण-कीर्तन सुनना, यश गायन करना सिमरन का पहला चरण है। गुरबाणी का पाठ करने तथा सुनने से परमात्मा के साथ संबंध बनता है :

*सिफती गंढु पवै दरबारि ॥* (पन्ना १४३)

गुरु-मंत्र— वाहिगुरु का जाप सिमरन का दूसरा चरण है। पवित्र मन से बार-बार नाम जपने का आदेश है:

*बारं बार बार प्रभु जपीऐ ॥*

*पी अंम्रितु इहु मनु तनु ध्रपीऐ ॥* (पन्ना २८६)

नाम को मुख से उच्चारण करने के साथ-साथ मन में बसाये रखने की भी ताकीद की गयी है :

*हरि हरे हरि मुखहु बोलि हरि हरे मनि धारे ॥*

(पन्ना १२३०)

मन की एकाग्रता तथा प्रेम से सिमरन करने वाला प्रभु का रूप हो जाता है :

*सो हरि जनु नामु धिआइदा हरि हरि जनु इक समानि ॥* (पन्ना ६५२)

दिन-रात, उठते-बैठते, सोते-जागते हर समय सिमरन करना चाहिए :

*सदा सदा सिमरि दिनु राति ॥*

*ऊठत बैठत सासि गिरासि ॥* (पन्ना ९७१)

**४. चरण-सेवा :—** परमात्मा के चरणों में चित्त लगाकर प्रभु की भक्ति की जाती है। भाई गुरदास जी इसके महत्व के बारे में लिखते हैं :

*चरन कमल को महातम अगाध बोध*

*अति असचरज मै नमो नमो नम है।*

(कबित्त सवैये, ८०)

अपने जिस दास को प्रभु उसकी बांह पकड़ कर अपने चरणों में जोड़ लेता है, वह प्रभु से मिलाप वाली अवस्था में पहुँच जाता है :

*गहि भुजा लीनो दासु अपनो जोति जोती रली ॥*

(पन्ना ११२१)

यदि अनाथ प्राणी भी प्रभु के चरणों की शरण में आ जाए तो वह प्रभु की याद में उत्तम जीवन-राह पर चलता है :

*प्रभ चरन सरन अनाथु आइओ*

*नानक हरि संगि चली ॥* (पन्ना ११२१)

**५. अर्चना :—** चदंन, फूल आदि सामग्री से प्रभु की भक्ति करने को अर्चना कहा जाता है। गुरमत में इस तरह की पूजा का विधान नहीं है। मन को अर्पण कर देना ही धूप आदि का अर्पण करना है :

*— अनिक बार करउ तिह बंदन*
*मनहि चर्हावउ धूप ॥* (पन्ना ७०१)
*— तनु मनु अरपउ पूज चरावउ ॥*
*गुर परसादि निरंजनु पावउ ॥* (पन्ना ५२५)

**६. वंदना :—** परमात्मा के गुणों को हृदय में रखकर विनम्रता सहित नमस्कार करना प्रभु की वंदना (बंदना) करना है :

*बंदना हरि बंदना गुण गावहु गोपाल राइ ॥*
(पन्ना ६८३)

श्री गुरु रामदास जी का फरमान है कि हे अकाल पुरख ! वे सारे जीव, जिनको आपने माया के जाल से मुक्त किया है तथा पापों से बचाया है, वे सब आपका गुणगान करते हैं तथा लाख बार नमस्कार करते हैं :

*— हरि तेरी सभ करहि उसतति जिनि फाथे काढिआ ॥*
*हरि तुधनो करहि सभ नमसकारु*
*जिनि पापै ते राखिआ ॥* (पन्ना ९०)
*— प्रभ जी तू मेरे प्रान अधारै ॥*
*नमसकार डंडउति बंदना अनिक बार जाउ बारै ॥*
(पन्ना ८२०)

श्री गुरु गोबिंद सिंघ जी ने जापु साहिब में इसी विधा को अपनाया है :

*नमसतं अनीले ॥ नमसतं अनादे ॥*
*नमसतं अछेदे ॥ नमसतं अगाधे ॥ ७ ॥*

**७. सख्य-भाव :—** परमात्मा को सखा, मीत मानकर प्यार तथा श्रद्धा से स्तुति की जाती है, गुण गाये जाते हैं। साधक यह प्रार्थना करता है कि हे प्रभु ! मेरा तेरे बिना कोई मित्र नहीं है। तू ही मेरा मीत है, सखा-बंधप है :

*— तू मेरे मीत सखा हरि प्रान ॥*
*मनु धनु जीउ पिंडु सभु तुमरा*
*इहु तनु सीतो तुमरै धान ॥* (पन्ना १२१६)
*— तूं मेरा सखा तूंही मेरा मीतु ॥*
*तूं मेरा प्रीतमु तुम संगि हीतु ॥* (पन्ना १८१)

इष्ट के साथ मित्र-भाव रखने वाला संकोच त्याग कर विनती करता है, हे प्रभु ! जिसका तू मीत है, साजन है, उसे कैसे कोई कमी हो सकती है ! तेरी महिमा अपार है। तेरे घर सब कुछ है :

*— जा का मीतु साजनु है समीआ ॥*
*तिसु जन कउ कहु का की कमीआ ॥*
(पन्ना १८६)
*— जन को प्रभु संगे असनेहु ॥*
*साजनो तू मीतु मेरा ग्रिहि तेरै सभु केहु ॥*
(पन्ना १३०७)

**८. दासन-दास :—** भक्ति की इस विधा में भक्त अति विनम्रता से अपने आपको प्रभु का दास, सेवक मानकर आराधना करता है :

*— मै बंदा बै खरीदु सचु साहिबु मेरा ॥*
*जीउ पिंडु सभु तिस दा सभु किछु है तेरा ॥*
(पन्ना ३९६)
*— तूं साचा साहिबु दासु तेरा गोला ॥*
(पन्ना १३२)

सेवक-भाव रखने वाला प्रार्थना करता है कि

मेरे हृदय में नाम का प्रकाश करो। मैं तेरी कृपा से ही तेरे गुण गा सकता हूँ:

*दास तेरे की बेनती रिद करि परगासु ॥*
*तुम्हरी क्रिपा ते पारब्रहम दोखन को नासु ॥*

*(पन्ना ८१८)*

**९. स्वत्व अर्पण : —** सेवक परमात्मा की भक्ति करता हुआ अपने अंदर से कर्त्तापन के अहंकार को समाप्त कर, स्वत्व का त्याग कर पूर्ण समर्पण-भाव से प्रभु की शरण में आ जाता है। जब सच्चे मन से शरण ली जाती है तो अपना कुछ नहीं रह जाता। रोम-रोम पुकार उठता है :

*— मनु तनु तेरा धनु भी तेरा ॥*
*तूं ठाकुरु सुआमी प्रभु मेरा ॥*
*जीउ पिंडु सभु रासि तुमारी तेरा जोरु गोपाला जीउ ॥*

*(पन्ना १०६)*

*— जिउ जानहु तिउ रखहु गुसाई पेखि जीवां परतापु ॥*

*(पन्ना १२१७)*

भक्ति के ये नौ प्रकार एक दूसरे के ही पूरक हैं। वास्तव में ये नौ पड़ाव हैं, जिनमें से होता हुआ साधक परमात्मा का सामीप्य प्राप्त करता है। जब जीव अपने जीवन के लक्ष्य के बारे में सोचता है, विचार करता है तो उसके मन में परमात्मा की भक्ति-आराधना करने की उमंग पैदा होती है। वह गुरबाणी का पाठ करना, सुनना तथा कीर्तन करना प्रारंभ कर देता है। धीरे-धीरे मन में प्रभु के लिए प्रेम जागता है, सिमरन का चाव पैदा होता है। इस अवस्था में वह बार-बार नमस्कार करता है तथा अपने अवगुण को देखता हुआ, परमात्मा की कृपा को याद करता हुआ नम्रता सहित प्रार्थना करता है, हे प्रभु! तू ही मेरा सखा, सहायक, बंधप, माता-पिता सब कुछ है :

*मीतु सखा सहाइ संगी ऊच अगम अपारु ॥*
*चरण कमल बसाइ हिरदै जीअ को आधारु ॥*

*( पन्ना ४०५)*

मुझ पर कृपा करो! मुझे अपने नाम की दाति तथा भक्ति करने की ताकत प्रदान करो :

*तेरी पनह खुदाइ तू बखसंदगी ॥*
*सेख फरीदै खैरु दीजै बंदगी ॥* *(पन्ना ४८८)*

जब जीव प्रभु की कृपा तथा सिमरन की महिमा से स्वत्व (आपा) त्याग कर, पूरी तरह से समर्पण की अवस्था में पहुंच कर प्रभु के समक्ष गिर पड़ता है तो तन-मन-धन अर्पण कर प्रभु का ही होकर रह जाता है। इस तरह वह भक्ति का फल प्राप्त कर लेता है। श्री गुरु अरजन देव जी ने साधक की इन अवस्थाओं का चित्रण किया है :

*स्रवणी सुणउ बिमल जसु सुआमी ॥*
*एका ओट तजउ बिखु कामी ॥*
*निवि निवि पाइ लगउ दास तेरे*
*करि सुक्रितु नाही संगना ॥३ ॥*
*रसना गुण गावै हरि तेरे ॥*
*मिटहि कमाते अवगुण मेरे ॥*
*सिमरि सिमरि सुआमी मनु जीवै*
*पंच दूत तजि तंगना ॥४ ॥*
*चरन कमल जपि बोहिथि चरीऐ ॥*

*संतसंगि मिलि सागरु तरीऐ ॥*
*अरचा बंदन हरि समत निवासी*
*बाहुड़ि जोनि न नंगना ॥५ ॥*
*दास दासन को करि लेहु गुोपाला ॥*
*क्रिपा निधान दीन दइआला ॥*
*सखा सहाई पूरन परमेसुर मिलु कदे न होवी भंगना ॥६ ॥*
*मनु तनु अरपि धरी हरि आगै ॥*
*जनम जनम का सोइआ जागै ॥*
*जिस का सा सोई प्रतिपालकु*
*हति तिआगी हउमै हंतना ॥७ ॥*
*जलि थलि पूरन अंतरजामी ॥*
*घटि घटि रविआ अछल सुआमी ॥*
*भरम भीति खोई गुरि पूरै एकु रविआ सरबंगना ॥*

(पन्ना १०८०)

सारा जगत् अपनी तरफ से भक्ति करता है, मगर अपने मन के पीछे चलने वाले जीव की किसी भी प्रकार की पूजा-भक्ति परमात्मा के दर पर कबूल नहीं होती। भक्ति का कोई विशेष समय नहीं होता :

*जे वेला वखतु वीचारीऐ ता कितु वेला भगति होइ ॥*

(पन्ना ३५)

श्री गुरु अरजन देव जी का कथन है :

*सभे वखत सभे करि वेला ॥*
*खालकु यादि दिलै महि मउला ॥* (पन्ना १०८४)

अमृत वेला उत्तम माना गया है। श्री गुरु नानक देव जी 'अमृत वेला' के महत्त्व को समझाते हैं कि जो मनुष्य प्रातः काल प्रभु का गुणगान करते हैं, एकाग्र मन से प्रभु को याद करते हैं, मन के साथ जंग करते हैं अर्थात् आलस्य त्याग कर बंदगी का उद्यम करते हैं, वही पूरे शाह हैं :

*सबाही सालाह जिनी धिआइआ इक मनि ॥*
*सेई पूरे साह वखतै उपरि लड़ि मुए ॥*

(पन्ना १४५)

परमात्मा के नाम-सिमरन के बिना अन्य किसी तरह परमात्मा की भक्ति-पूजा नहीं हो सकती। भक्ति करने वाले मनुष्य के हृदय में बसा हुआ प्रभु का नाम ही उसकी ज़िंदगी का सहारा है, नाम ही उसके लिए धन है, नाम ही वास्तविक वणज-व्यापार है, नाम ही आत्मिक आनन्द देने का साधन है। जो परमात्मा के नाम-रंग में रंगा हुआ है वही भक्त है, वही प्रभु-दर पर कबूल है :

*नामु भगत कै प्रान अधारु ॥*
*नामो धनु नामो बिउहारु ॥१ ॥*
*नाम वडाई जनु सोभा पाए ॥*
*करि किरपा जिसु आपि दिवाए ॥१ ॥ रहाउ ॥*
*नामु भगत कै सुख असथानु ॥*
*नाम रतु सो भगतु परवानु ॥* (पन्ना १८९)

# गुरबाणी में बसंत ऋतु का वर्णन

*-डॉ. राजेंद्र सिंघ 'साहिल'**

भारत विविध मौसमों का देश है। भीषण गर्मी, सुहावनी वर्षा, कड़ाकेदार शीत... प्रकृति ने इस भूमि को कौन-सा मौसम नहीं दिया है! परंपरा के अनुसार भारत में साल भर के बारह महीनों को छः ऋतुओं में बांटा गया है — बसंत (चेत-वैसाख), ग्रीष्म (ज्येष्ठ-आषाढ़), वर्षा या पावस (सावन-भादों), शरद (क्वार-कार्तिक), हेमंत (अगहन-पूस) और शिशिर (माघ-फागुन)। हर दो माह में मौसम बदल जाता है।

इन छः ऋतुओं में से दो बड़ी खास ऋतुएं हैं— वर्षा और बसंत। भयानक तपिश भरी गर्मी के बाद जब वर्षा की झड़ी लगती है और जब कंपकंपाने वाली कड़ाकेदार ठंड के बाद बसंत का सुहावना मौसम आता है तो सारी कुदरत के साथ-साथ तन-मन भी प्रफुल्लित हो जाता है। वर्षा ऋतु महत्वपूर्ण तो है परंतु प्रमुखता बसंत को ही मिली है।

बसंत ऋतु भयानक शीत के बाद आती है। तापमान बिलकुल अनुकूल हो जाता है . . . न सर्दी, न गर्मी। प्रकृति नया शृंगार करती है। पेड़-पौधे नये पत्तों और रंग-बिरंगे फूलों से लद जाते हैं। हवा में एक खास तरह की महक आने लगती है। खेत पीली सरसों से भरे होते हैं। बसंत पंचमी और होली जैसे रंग-बिरंगे त्यौहार इसी ऋतु में आते हैं। तन-मन को असीम आनंद देने वाली ऋतु है— बसंत, इसलिए इसे 'ऋतु राज' अर्थात् 'ऋतुओं का राजा' भी कहा जाता है।

**गुरमत संगीत और गुरबाणी में बसंत का महत्व :**

भारतीय संगीत और साहित्य में बसंत को अत्यंत महत्व मिला है। साहित्य में बसंत ऋतु के अनुपम सौंदर्य और उससे उत्पन्न असीम आनंद का सूक्ष्मता से वर्णन हुआ है। भारतीय संगीतकारों ने इस ऋतु को आधार बनाकर बसंत राग का सृजन किया है, जिसके श्रवण से उसी आनंद की अनुभूति होती है जैसी उस ऋतु में विचरण करते हुए होती है।

श्री गुरु ग्रंथ साहिब में प्रयोग किये गये ३१ रागों में राग बसंत का क्रम पच्चीसवां है। इस राग में ६३ चउपदे, ११ असपदियां, एक वार महला ५ और भगत बाणी के कुल १३ शबद (८ भक्त कबीर जी के, ३ भक्त नामदेव जी के और एक-एक भक्त रामानंद जी एवं भक्त रविदास जी) दर्ज हैं।

गुरमत संगीत में बसंत ऋतु के आनंद को आध्यात्मिक आनंद के साथ जोड़ा गया है।

गुरबाणी में भी बसंत के अद्‌भुत सौंदर्य और असीम आनंद का आध्यात्मिक आनंद के प्रतीक के रूप में प्रयोग किया गया है।

श्री गुरु ग्रंथ साहिब में दो बारह माहा दर्ज हैं— राग तुखारी में श्री गुरु नानक देव जी द्वारा उच्चरित और राग माझ में श्री गुरु अरजन देव जी द्वारा उच्चरित।

दोनों बारह माहा में बसंत ऋतु के सुहावने

**१/३३८, स्वप्नलोक, दशमेश नगर, मंडी मुल्लांपुर दाखा (लुधियाना), पंजाब-१४११०१, फोन : ९४१७२-७६२७१*

वातावरण का सुंदर चित्रण हुआ है और साथ ही प्रभु-पति से बिछड़ी हुई जीव-स्त्री की विरह अवस्था का मार्मिक वर्णन है।

श्री गुरु नानक देव जी फरमान करते हैं कि चैत-बसंत सुहावनी ऋतु है। वनों में फूल खिले हुए हैं। आम के वृक्षों पर कोयल कूक रही है। फूलों पर भंवरे मंडरा रहे हैं। ऐसे में प्रभु-पति के बिना जीव-स्त्री विरह से पीड़ित है। चेत का सहज सुख तभी प्राप्त होगा जब (प्रभु-पति जीव-स्त्री के घर आ जाये :

*चेतु बसंतु भला भवर सुहावड़े ॥*
*बन फूले मंझ बारि मै पिरु घरि बाहुड़ै ॥*
*पिरु घरि नही आवै धन किउ सुखु पावै बिरहि बिरोध तनु छीजै ॥*
*कोकिल अंबि सुहावी बोलै किउ दुखु अंकि सहीजै ॥*
*भवरु भवंता फूली डाली किउ जीवा मरु माए ॥*
*नानक चेति सहजि सुखु पावै जे हरि वरु घरि धन पाए ॥* (पन्ना ११०७)

श्री गुरु अरजन देव जी ने भी बसंत ऋतु के आनंद को अध्यात्म के साथ जोड़ा है। गुरु जी का कथन है कि आनंद देने वाली बसंत ऋतु में यदि प्रभु का सिमरन करें तो असीम आत्मिक आनंद प्राप्त होता है। जो प्रभु पानी, धरती, आकाश, पाताल, वन, सभी जगह व्याप्त है, यदि वह जीव के मन में न बसे तो जीव के दुख का बयान नहीं किया जा सकता :

*चेति गोविंदु अराधीऐ होवै अनंदु घणा ॥*
*संत जना मिलि पाईऐ रसना नामु भणा ॥*
*जिनि पाइआ प्रभु आपणा आए तिसहि गणा ॥*
*इकु खिनु तिसु बिनु जीवणा बिरथा जनमु जणा ॥*
*जलि थलि महीअलि पूरिआ रविआ विचि वणा ॥*
*सो प्रभु चिति न आवई कितड़ा दुखु गणा ॥*
*जिनी राविआ सो प्रभू तिंना भागु मणा ॥*
*हरि दरसन कंउ मनु लोचदा नानक पिआस मना ॥*
*चेति मिलाए सो प्रभू तिस कै पाइ लगा ॥*
(पन्ना १३३)

गुरबाणी में बसंत ऋतु के प्राकृतिक सौंदर्य का भी सुंदर चित्रण है। श्री गुरु अमरदास जी का कथन है कि सभी ऋतुओं में बसंत श्रेष्ठ है :

*माहा रुती महि सद बसंतु ॥*
*जितु हरिआ सभु जीअ जंतु ॥* (पन्ना ११७२)

श्री गुरु नानक देव जी ने भी बसंत ऋतु को सरस कहा है :

*रुति आईले सरस बसंत माहि ॥*
*रंगि राते रवहि सि तेरै चाइ ॥* (पन्ना ११६८)

गुरु साहिबान ने बसंत ऋतु के अनुपम सौंदर्य एवं असीम आनंद को आध्यात्मिक आनंद के प्रतीक के रूप में प्रयोग किया है। श्री गुरु नानक देव जी, श्री गुरु अमरदास जी और श्री गुरु अरजन देव जी का कथन है कि जिस प्रकार बसंत ऋतु में प्रकृति हरी-भरी पल्लवित हो जाती है उसी प्रकार हरि-नाम से जुड़कर जीव का तन और मन पुलकित-प्रफुल्लित हो जाता है :

*— माहा माह मुमारखी चड़िआ सदा बसंतु ॥*
*परफड़ु चित समालि सोइ सदा सदा गोबिंदु ॥*
(पन्ना ११६८)

*— मनि बसंतु हरे सभि लोइ ॥*
*फलहि फुलीअहि राम नामि सुखु होइ ॥*
(पन्ना ११७६)

*— रुति सरस बसंत माह चेतु वैसाख सुख मासु जीउ ॥*
*हरि जीउ नाहु मिलिआ मउलिआ मनु तनु सासु*

*जीउ ॥* *(पन्ना ९२७)*

गुरु साहिबान ने प्रभु-मिलन के उपरान्त जीव की मानसिक प्रफुल्लता की अवस्था की तुलना बसंत ऋतु में प्राप्त होने वाले आंनद की अवस्था से की है। श्री गुरु अमरदास जी का फरमान है कि जिस घर में प्रभु ने आ निवास किया हो, जिसके मन में प्रभु ने वास कर लिया हो और हरि-प्रभु के प्रति चित्त लगा रहे, उसे सदा बसंत जैसा आनंद प्राप्त होता रहता है :

*— नानक तिना बसंतु है जिन्ह घरि वसिआ कंतु ॥*
*(पन्ना ७९१)*

*— नानक तिना बसंतु है जिना गुरमुखि वसिआ मनि सोइ ॥ (पन्ना १४२०)*

*— बसंतु चड़िआ फूली बनराइ ॥*
*एहि जीअ जंत फूलहि हरि चितु लाइ ॥*
*(पन्ना ११७६)*

तीसरे पातशाह का कथन है कि सतिगुरु का साथ मिलते ही मन इस प्रकार खिल जाता है जैसे बसंत ऋतु में वनस्पति खिल जाती है :

*बनसपति मउली चड़िआ बसंतु ॥*
*इहु मनु मउलिआ सतिगुरू संगि ॥ (पन्ना ११७६)*

तीसरे पातशाह स्पष्ट करते हैं कि जहां सबद है, सबद पर विचार है और हरि का गुणगान है वहां सदा ही बसंत है :

*— सबदे सदा बसंतु है जितु तनु मनु हरिआ होइ ॥*
*(पन्ना १४२०)*

*सदा बसंतु गुर सबदु वीचारे ॥*
*राम नामु राखै उर धारे ॥. . .*
*तिन्ह बसंतु जो हरि गुण गाइ ॥*
*पूरै भागि हरि भगति कराइ ॥* *(पन्ना ११७६)*

पंचम पातशाह श्री गुरु अरजन देव जी का फरमान है कि जहां हरि का कीर्तन होता है उस घर में सदा बसंत रहता है :

*ग्रिहि ता के बसंतु गनी ॥*
*जा कै कीरतनु हरि धुनी ॥* *(पन्ना ११८०)*

पंचम पातशाह स्पष्ट करते हैं कि जहाँ प्रभु कृपालु है, गुरु दयालु है और हृदय में प्रभु-नाम है, वहां सदा ही बसंत है :

*तिसु बसंतु जिसु प्रभु क्रिपालु ॥*
*तिसु बसंतु जिसु गुरु दइआलु ॥*
*मंगलु तिस कै जिसु एकु कामु ॥* *(पन्ना ११८०)*

पंचम पातशाह कथन करते हैं कि ऐसी स्थिति में हमारे घर में सदा बसंत रहेगा और प्रभु के संत-जन मिल कर फाग एवं होली खेलेंगे :

*आजु हमारै ग्रिहि बसंत ॥*
*गुन गाए प्रभ तुम्ह बेअंत ॥१ ॥रहाउ ॥*
*आजु हमारै बने फाग ॥*
*प्रभ संगी मिलि खेलन लाग ॥*
*होली कीनी संत सेव ॥*
*रंगु लागा अति लाल देव ॥* *(पन्ना ११८०)*

गुरु जी जीव को प्रेरित करते हैं कि इस सुंदर बसंत ऋतु में हरि का नाम-सिमरन कर जीव वैसे ही हरियावल हो जाता है जैसे वन-त्रिभुवन खिला हुआ है :

*हरि का नामु धिआइ कै होहु हरिआ भाई ॥*
*करमि लिखंतै पाईऐ इह रुति सुहाई ॥*
*वणु त्रिणु त्रिभवणु मउलिआ अंम्रित फलु पाई ॥*
*(पन्ना ११९३)*

ख़बरनामा

## किसान संघर्ष में दिल्ली में शिरोमणि गुरुद्वारा प्रबंधक कमेटी की तरफ से निरंतर चलाए जा रहे हैं सेवा-कार्य

श्री अमृतसर : २८ दिसंबर : शिरोमणि गुरुद्वारा प्रबंधक कमेटी ने दिल्ली में चल रहे किसान संघर्ष के दौरान लंगर सहित अन्य सेवाएं लगातार जारी रखी हुई हैं। शिरोमणि गुरुद्वारा प्रबंधक कमेटी की प्रधान बीबी जगीर कौर के निर्देशानुसार शिरोमणि गुरुद्वारा प्रबंधक कमेटी के हरियाणा से सम्बन्धित गुरुद्वारों के माध्यम से दिल्ली सरहद पर लंगर के प्रबंध के अलावा रिहायश, मेडिकल सेवाओं और पाखानों आदि का प्रबंध किया गया है। इस दौरान शिरोमणि गुरुद्वारा प्रबंधक कमेटी के सदस्यों की तरफ से समय-समय पर दिल्ली जाकर इन सेवाओं की निगरानी भी की जा रही है। दिल्ली पहुँचे शिरोमणि गुरुद्वारा प्रबंधक कमेटी के सदस्य स. गुरिंदरपाल सिंघ रणीके ने किसानों के लिए किये गए विभिन्न प्रकार के प्रबंधों का जायज़ा लेने के पश्चात् बताया कि शिरोमणि गुरुद्वारा प्रबंधक कमेटी के सेवादार दिन-रात सेवाओं में जुटे हुए हैं। उन्होंने बताया कि किसानों की रिहायश के लिए वाटरप्रूफ़ टेंट, गद्दों और रजाइओं आदि का प्रबंध किया गया है। इसके अलावा तीन मेडिकल टीमें कार्यशील हैं और महिलाओं के लिए पाखाने आदि की व्यवस्था भी की गई है। इसी तरह टिकरी बार्डर, सिंघू बार्डर और अम्बाला के नज़दीक लंगर चल रहा है। उन्होंने बताया कि अलग-अलग गुरुद्वारा साहिबान से बड़ी संख्या में कर्मचारी दिल्ली में तैनात हैं। वर्णनीय है कि शिरोमणि गुरुद्वारा प्रबंधक कमेटी की तरफ से किसान संघर्ष के दौरान दिवंगत किसानों के परिवारों के लिए एक-एक लाख रुपए की सहायता देने का भी एलान किया गया है।

## **बीबी जगीर कौर ने प्रो. दविंदरपाल सिंघ ( भुल्लर ) की माता बीबी उपकार कौर के निधन पर दुख प्रकट किया**

श्री अमृतसर : २९ दिसंबर : शिरोमणि गुरुद्वारा प्रबंधक कमेटी की प्रधान बीबी जगीर कौर ने प्रो. दविंदरपाल सिंघ (भुल्लर) की माता बीबी उपकार कौर के निधन पर गहरे दुख का इज़हार

किया है। बीबी जगीर कौर ने प्रो. दविंदरपाल सिंघ (भुल्लर) के साथ सहानुभूति प्रकट करते हुए बिछड़ी रूह को श्रद्धाँजलि भेंट की। उन्होंने कहा कि माता उपकार कौर त्याग की मूर्ति थीं। उन्होंने वाहिगुरु के समक्ष अरदास की कि वे बिछड़ी रूह को अपने चरणों में निवास प्रदान करें और परिवार को ईश्वरीय आदेश मानने का बल दें। इस दौरान शिरोमणि गुरुद्वारा प्रबंधक कमेटी के वरिष्ठ उपाध्यक्ष स. सुरजीत सिंघ भिटेवड्डु, कनिष्ठ उपाध्यक्ष बाबा बूटा सिंघ, महासचिव एडवोकेट भगवंत सिंघ और मुख्य सचिव एडवोकेट हरजिंदर सिंघ सहित कई गणमान्य लोगों ने भी माता उपकार कौर के निधन पर दुख का इज़हार किया।

## भाई सुखदेव सिंघ सुक्खा के पिता सरदार महिंगा सिंघ के निधन पर बीबी जगीर कौर द्वारा शोक व्यक्त

श्री अमृतसर : ७ जनवरी : सिक्ख संघर्ष के योद्धा शहीद भाई सुखदेव सिंघ सुक्खा के पिता सरदार महिंगा सिंघ के निधन पर शिरोमणि गुरुद्वारा प्रबंधक कमेटी की प्रधान बीबी जगीर कौर ने गहरा शोक व्यक्त किया है। वर्णनीय है कि शहीद भाई सुखदेव सिंघ सुक्खा का परिवार राजस्थान प्रांत के जनपद श्री गंगानगर की तहसील करनपुर के गाँव १६ एफ. एफ. में रहता है। बीबी जगीर कौर ने सरदार महिंगा सिंघ के निधन पर शोक प्रकट करते हुए उन्हें श्रद्धाँजलि भेंट की। उन्होंने कहा कि सरदार महिंगा सिंघ का निधन दुखदायी है। बीबी जगीर कौर ने अकाल पुरख के चरणों में सरदार महिंगा सिंघ की आत्मिक शान्ति के लिए अरदास की। शिरोमणि गु. प्र. कमेटी के वरिष्ठ उपाध्यक्ष सरदार सुरजीत सिंघ भिट्टेवड्डु, कनिष्ठ उपाध्यक्ष बाबा बूटा सिंघ, महासचिव एडवोकेट भगवंत सिंघ सिआलका, मुख्य सचिव एडवोकेट हरजिंदर सिंघ, कार्यपालिका सदस्य बाबा चरनजीत सिंघ जस्सोवाल और सचिव सरदार सुखदेव सिंघ भूराकोहना ने भी शहीद भाई सुखदेव सिंघ सुक्खा के पिता सरदार महिंगा सिंघ के निधन पर शोक व्यक्त किया।

बालक दरबारा सिंघ को श्री ननकाणा साहिब के शहीदी साके के समय आग की लपटों में फेंक कर शहीद किया गया।

Registered with RNI at No. PUNHIN/2007/21665
Postal Registration No. L-1/PB-ASR/008/2020-22 Licensed to Post without Pre-Payment No. PB/R-001/2020-22

# GURMAT GYAN

February 2021

DHARAM PARCHAR COMMITTEE,
Shiromani Gurdwara Parbandhak Committee, Sri Amritsar Sahib (PUNJAB)

## बड़े घल्लूघारे का दृश्य

Owner : Shiromani Gurdwara Parbandhak Committee. Publisher & Printer : S. Manjit Singh. Printed at Golden Offset Press, Gurdwara Sri Ramsar Sahib, Sri Amritsar. Published from SGPC office, Teja Singh Samundri Hall, Sri Amritsar. Editor : Satwinder Singh
Date: 1-2-2021